श्रीरामपञ्चायतनम्

भूमिका

प्रकट हो कि सुर सन्त सुजानजनों का लघु सेवक पण्डित जयगोविन्दनामें मैं निज मन्त्रोपदेश लेने के पूर्व्व यत्र तत्र सन्त समाजों में जाय प्रश्न करता रहा तब सन्त सुजानों ने कहा कि बिन गुरूपदेश कोई संसारसागर को तर नहीं सक्ता यही महाराज तुलसीदासजी ने भी कहा है। बिन गुरु भवनिधि तरै न कोई। जो बिरंचि शंकर सम होई ॥ ऐसे कितेक बचन कहा तब मैं एक दिन निज पाटनग्राम निवासि मित्र अनन्दीदीन के ढिग जाय कहा ॥

सतगुरु चिह्नसन्त श्रुतिगाये ❀ ते सहजहिं जहँ परत देखाये
असको पुरुष सिंह जगमाहीं ❀ सो कृपालु बरणौ मोहिं पाहीं

तब उनकहा सतगुरु चिह्नश्री १०८ स्वामी बाबा रघुनाथदासमें सम्पूर्ण हैं जिन निज तपोबल से जननीको बैकुण्ठबास दिया, हनूमान जी को दर्शन पाया, हनूमानजीही की आज्ञा से रापट साहेब की सेना में नौकरी किया, नौकरी करतेही श्रीसीतानाथ ने इनहीं का स्वरूप धरि डुइबेर इनका पहरा दिया और गोलंदाजी किया पुनः श्री रामचरणदास जी से यही प्रश्न किया तौ उनहूँ ने कहा कि ऐसे समर्थ तौ उक्त स्वामी जीही हैं जिन सरयू जल भरावा सो घृत ह्वैगया यह चरित विस्तार से वर्णन किया पुनः चित्रकूट जाय श्री महाराज रामबाबा से यही प्रश्न कियां तौ उनहूं संक्षेप से घृत चरित्र वर्णन करि कहा कि हे प्रिय

उक्त स्वामी जी सत्यही सद्गुरु हैं तुम मन्त्रोपदेश भी लेना और ये घृतादिक चरित्र ग्रंथ रीति से वर्णन करना यद्यपि यह चरित्र विस्तार से रामचरणदास ने वर्णन किया तथापि ग्रंथरचने की आज्ञादेनेके कारणसे ग्रंथ मा रामचाचाहीका नामलिखागया पुनः श्री चित्रकूट से चला मार्ग में बिन्दादास से प्रश्न किया तब उनहूंकहा उक्तस्वामीजी ने मार्गमासमें सन्तनको चिनी खरबूजा खवाया औरलालदासजी कहतेरहैं कि श्रीमहाराज उमादत्त जी ने रघुनन्दनदासजी ते कहाहै कि चित्रकूट मा घनश्यामदास जीनेशरीर परित्याग किया वही समय अयोध्याजी में उक्तस्वामी जी जानिगये यह वर्णन किया पुनः प्रयागजाय बाघम्बरीथल में श्री नयपालगिरि से प्रश्न किया तब उनहूं कहा कि उक्तस्वामी जी में सम्पूर्ण सद्गुरुचिह्न हैं अकथनीय प्रताप है पुनः झूसीथल जाय महाराज सुदर्शनदासजी से प्रश्न किया तब उनहूं अत्यन्त प्रेम पूर्वक कहा कि हीरादासजी मानस पूजन में श्री सीतानाथ को थार परसिके भोगलगाया और आचमन नहीं करवाया उक्त स्वामी जी के सेवन में लगिगये, उक्त स्वामी जी जो ध्यान किया तौ सीतानाथ जी का मुखारविन्द जूठा देखिपरा तब हीरादास से कहा कि श्री रघुनन्दन जी को भोगलगायकै आचमन नहीं करवाया तब हीरादास ने संदेह भी किया कि पूजन को मैं मानस में किया महाराज ने कैसे जाना और एकान्त में जाय पूजन पूर्ण किया और एक कुत्ती उक्त स्वामी जी के आश्रम में आगे रही सो एक अंत्यज दुनली बंदूक लेकर आया कुत्ती को मारनेलगा स्वामी जी ने कुत्ती को अभय दिया बंदूक दागते में दोनों नली फाटिगईं वह अंत्यज दीन ह्वै महाराज के

चरणारविन्दन में आय गिरा औ महाराज की शिक्षाको अंगीकार करि साकेतवासीभया और एक समय एक चित्रकार महाराजको चित्र खैंचने की बांछा किया कोई प्रकार नहीं आना तब महाराज ने निज कण्ठ में घेघरोग धारण किया पश्चात् सेवकों की प्रार्थना से निजकर कमल फेरा फेरते कण्ठरोग नाश होगया पुनः मैं श्री सुदर्शनदासजी की आज्ञा से रीवां गया श्री महाराज राजा रघुराजसिंह कृत भक्तमाल में दूसरीबार जो श्री रामचन्द्र जी ने महाराज को निशस अर्थात् पहरादियाहै सो देखा और राजा के श्री मुख श्रवण भी किया पुनः नरेश ते बिदा ह्वै निज धामआय पुनः श्रीअवधपुरी जाय श्री १०८ उक्त स्वामी बाबा रघुनाथ दास दीनजनोद्धारक पतित तरणितारक सुजन विपति वृन्द विदारक लौकिकाऽलौकिक चरित्र लीला करके श्रीमद्रामचन्द्र नाम रूप लीला धामात्यन्तोपासनाजनित समस्तैश्वर्य्य सम्पन्न स्वरूप को दर्शपाया औ मंत्रोपदेश लिया तदनन्तर उक्तस्वामी जी ने शठसेवक पर कृपा दृष्टि करि एकादश प्रकारकी भक्ती वर्णन किया व निज तथा परस्वरूप प्रापकज्ञान वर्णन किया और द्वादश प्रकार के वैराग्य वर्णन किया और भगवद्भक्त अकारणहीं हँसिउठताहै रोदन करताहै गान करताहै नृत्य करने लगताहै इन सम्पूर्ण बातोंका कारण वर्णन किया तीनि प्रकार के भक्त वर्णन किया मेरे शठ के मुग्धवचन कुछु श्रवण किया तदनन्तर निज कृत पचीस पद वर्णन किया विस्तार बहुत क्या लिखौं परिणाम में यह आज्ञा दिया कि वेदशास्त्र पुराणोक्त सम्पूर्ण धर्म्म कर्म्मों का सिद्धान्त फल रामचरणानुरागही है अतः हे तात सानुराग राम चरित्र वर्णन करना ऐसी आज्ञा पाय शठ सेवक मैं श्री अयोध्या

जी रामघाट बड़ी छावनी से बिदा भया निज जन्मस्थान पाटन ग्रामआया १९३९ के वर्ष में पश्चात् चित्रकूट जाय इस रघुनाथ विनोद ग्रंथ रचना को प्रारंभकिया संवत् १९४० के वर्ष में अद्यावधि विरचित ग्रंथ धरारहा अब १९६२ के वर्ष में श्रावण मास झूलोत्सव में श्रीमहन्त ईश्वरदास जी तथा और भी सन्त महात्माओं की अत्युत्कण्ठा भईतत्समय श्रीपण्डितनन्दकुमारदास जी और गयादासजी मेरे का संग ले श्री पण्डित रामरत्नवाजपेयी जी मैनेजर "लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस" लखनऊसे सत्संगकरवाया उक्त मैनेजर जी ने अत्यन्तानन्द प्रेमपूर्वक ग्रंथ को अवलोकन किया और निज हस्ताक्षर लिखिदिया छापने के वास्ते यद्यपि देशान्तरोंकेअन्यभी बहुतप्रेस इसग्रंथके छापनेके अभिलाषीहोरहेहैं तथापिउक्तस्वामीश्री१०८बाबारघुनाथदासगुरुमें अत्यन्तभावभक्ति युक्त मैंने पण्डित रामरत्न वाजपेयी मैनेजर "लखनऊ प्रिंटिंगप्रेस" को देखा इस कारण इन्हीं से छपवाना स्वीकार कर इस रघुनाथविनोदका सर्वाधिकार श्री पण्डित रामरत्नजी को दिया सम्पूर्ण महाशय संत माहात्माओं को बिदित हो कि देखौ यद्यपि उक्तस्वामी बाबारघुनाथदास ने और भी बहुत लौकिकालौकिक चरित्र किये हैं तथापि जो जो चरित्र मैं उक्त स्वामी जी के श्री मुख और साधु महात्माओंके श्रीमुख श्रवण किया सोसो तौ इस रघुनाथविनोद ग्रंथ में लिखा है और जो चरित्र ग्रामीण जनोंसे श्रवण किया सो नहीं लिखा गया अलमति विस्तरेण॥
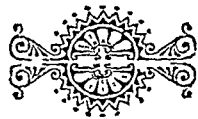
श्रीरामोविजयतेतराम ।

श्री रघुनाथविनोद

श्लोक ।

शम्भुसुतप्रणमेहन्त्वा हरमेऽमितविघ्नम् । यम्प्र
णमन्द्रुतमार्त्तोगच्छति दुःखदवान्तम् ॥ १ ॥ ना
गपगंघनभामं श्रीविधिजाम्बुजनाभम् ॥ त्वाम्प्रणमे
धृतचक्रं माधवमार्चितगात्रम् ॥ २ ॥ मित्रतमोन्त
करन्तंश्रीसवितारमनन्तम् ॥ त्वाम्प्रणमेनतशीर्षोह
न्नतभीतिहरन्तम् ॥ ३ ॥ त्वांसुभृशंप्रणमेहम्मातरमा
नतकन्धः ॥ पूर्णतमोममभूयाच्चिवन्तितताचित्रनिब
न्धः ॥ ४ ॥ शंकरहेकुरुशम्मेत्वांशरणम्प्रगतोहम् ॥
त्वंशरणागतभक्तंयास्यनिशंकिलदृष्टम् ॥ ५ ॥ ब्रह्मा
हरीशसनकादिसुरर्षिमुख्या भृग्वा दिकाश्शतमखप्र
मुखाश्चदेवाः ॥ सार्कादिकग्रहखगाखिललोकजीवा
स्सर्वान्विलोकयहृदिराममयान्नतोहम् ॥ ६ ॥ कुर्व

न्तु सर्व्वंसम चिन्तितार्थपूर्णम्मनोज्ञंद्रुतमंजसैव ॥ ८८
न्तु मह्यं विमलम्विवेकं हरन्तु चाज्ञानभवम्विकारम् ७

सो० गावत सहितहुलास जाके गुणगण अमरगण ।
पावत बिनहिं प्रयास सिद्ध बुद्धि विद्यादिधन ॥
हौं सोइ नमत गणेश जो महेश को बेश प्रिय ।
काटहु कठिन कलेश देहु बिबेक अनेक बिधि ॥

दो० हे गणनाथ अनाथ पै है सनाथ सुनिलेहु ।
गुरुचरित्र शुचि रचनकी बचन चातुरी देहु ॥
कहांमन्द मति मैं कहां मंथन बारिधि बारि ।
तातेबन्दत बिबिधि बिधि संशयशमनमुरारि ॥
राजकिशोर समेत सिय राजहु ममउरआज ।
हे रघुराजअकाजलखि करहुसफल सिधिकाज

ओ दिनेश ध्याऊं तुव चरणा ❀ जासु अमित यशजाइ न बरणा
हरहु महा भ्रम तिमिरतुरन्ता ❀ तुम समरथ सुरेश भगवन्ता
बन्दौंजगति जननिसुखखानी ❀ आदिशक्ति जो श्रुतिन बखानी
मातु मोर पुरवहु प्रण एहू ❀ बरणौं अखिल चरित गुरु केहू
तिमि बन्दौं महेश पद कंजू ❀ शरणद सुखद अनघ अघ गंजू
सन्तत सन्त सकल मल भंजू ❀ सिधि बुधिसदन सुजनजन रंजू
हे कृपालु शिव शंकर स्वामी ❀ बिदित बिश्व उर अन्तर्य्यामी
मन बच कर्म पर्म प्रण मेरा ❀ पुरवहु प्रणतपाल बिन देरा

सो० सन्तत बन्दौं सन्त भक्तिवन्त भगवन्तके ।
बिघनवृन्द बिनसन्त आदि अन्तप्रगटन्तजे ॥

चरअरु अचर अनन्त जे विरचन्त विरंचि के।
सियारामसरसन्त असगुनिसबहिं नमन्त मैं ॥
बन्दौं पवनकुमार अतिअपार बल बुद्धि जेहि।
देहुबिवेक बिचार निर्विकार मन होइ जिमि ॥
शारदयुतविधिव्यास शेषआदिदै आदिकवि।
बन्दौंसहितहुलास बालमीक कविकुलकमल ॥
बन्दौं तुलसीदास जासु रचित यश रामको।
बाँचत बिनहिं प्रयास लहै सुपास कुदासहू ॥
तिमिबन्दौं सहुलास खासदास जो श्यामको।
बिरचौविविध बिलास सूरदासहरिरासजिन ॥
ध्रुवप्रहलादनिषाद भीष्मशिवी खगरुक्मशुभ।
बन्दतमिटत बिषाद अम्बरीषनारद प्रमुख ॥

जननी जनक चरण मनलाऊं ❀ जासुकृपा निरमल मतपाऊं
भूमिसुरन दोउ करन जोरिकै ❀ करहुँ चरन सुमिरन्न निहोरिकै
देव दनुज अहिनर खग जेते ❀ प्रेत पितर गन्धर्व समेते
निशिचर किन्नर चारण सिद्धा ❀ देव सजाति बिजाति प्रसिद्धा
बंदि पदारबिन्द सब केरे ❀ बिरचहुँ चारु चरित गुरुकेरे
सबकी कृपा पूर प्रण मोरा ❀ होइहि मन भरोस नहिं थोरा
बन्दौं बिबिधि भांति गुरुभ्राता ❀ होउ सकलमिलि मंगलदाता
जहँ लगि रामनाम व्रतधारी ❀ जाति कुजातिअजातिबिसारी
चिन्तहुँ चरण चारु सबकेरे ❀ जे बिन काम राम के चेरे
सब मिलि देहु बिमल बरयेहू ❀ जानिप्रणत गुनि सुत करिनेहू

बिरचहुँ ग्रन्थ चरित गुरुकेरा ❀ सो परिपूर्ण होइ बिन देरा
बन्दौं बहुरि राम रघुराई ❀ कहौं उचित नहिं कछु चतुराई
दोउविधि चहिय तुमहिंप्रभुएहू ❀ बिनहिंबिलम्ब बिमलमतिदेहू
यहगुरु चरित दुरन्त दराजू ❀ यहि सकोच शोचहुँ रघुराजू
जो तुव कृपा भानु द्युति भासै ❀ तौ उर तिमिर तुरन्त बिनासै
होय प्रचण्ड परम उजियारा ❀ सूझहि गुरुकृत चरित अपारा
व्यास समास जौन जहँ जैसे ❀ रचहुँ चरित गुरु कृत तब तैसे
राखहु अया कृपा करि मोपै ❀ प्रणतारति हरहौ हरि जोपै
वेद, पुराण सन्त अस भाखा ❀ जन प्रण राम कहां नहिं राखा
अस बर बिरद बिचारि तुम्हारा ❀ रचहुँ राम गुरु चरित अपारा
तुम समरथ सब भांति गोसाईं ❀ दीनजानि जन करहु सहाईं
दोउ करजोरि निहोरि मनावौं ❀ प्रभु प्रसाद गुरुचरित बनावौं

सो० जासुनामरघुनाथ दासगाथपदपीछिले।
तासुनाइनिजमाथ हाथजोरिबन्दनकरौं॥
हेगुरुदीनदयाल बालबिहाल बिलोकिकै।
करहुकृपाततकाल लषनभाउरघुलालयुत॥
गुप्तप्रकटजहँजौन तुवकृतचारुचरित्रसब।
बिदितहोइममतौन ज्ञानभानगुरुदेउबर॥

दो० देवदनुजनरनागखग चरअरुअचरअनन्त।
ममबन्दितजेतेसकल पूरणग्रन्थकरन्त॥

क० व्याकुल बचन नेकु कानन सुनत नाथ नगन पगन
गज जन हेतुधायो है। द्रुपदसुता को शब्द सुनतै बढ़ायो ची

भारत में भरुही के अण्डन बचायो है ॥ दीनदुखी देखि प्रहलाद प्रण पाल्यो नाथ दीन पै दयाल तौ सदाही होत आयो है। जै गोविन्द दीन पै दयालु होहु त्योंहीं अब दीनबन्धु बनिकै बिलम्ब क्यों लगायो है ॥ १ ॥

इति श्री मद्रामचन्द्र चरणद्वन्द्वारविन्द मकरन्द मलिन्दानन्द तुन्दिल जयगोविन्द बुध विरचिते रघुनाथ विनोदे प्रथमस्समुल्लासः ॥ १ ॥

अथेन्द्रवज्रापद्यम् ॥

वैकुण्ठवासंप्रददौस्यमात्रं दत्वाप्रमाणं खलुदुग्ध धाराम् । तत्रत्यवृन्दाश्रमवारणाय यस्तंगरुंसन्तत मानतोहम् ॥ १ ॥

सो० छन्दप्रबन्धककूक मैं मतिमन्द न जानहूं ।
छमाकराबहुचूक सुकविसुकोबिदसान्दबहु ॥
दो० हेकबि कोबिदबुद्धिवर छमेहु ढिठाई मोरि ।
मैंबिरचहुँनिजगुरुचरित सबसोंकरयुगजोरि ॥

मैं मतिमन्द महा खल कोही ❀ कपटी कुटिल अकारण द्रोही
लोभ मोह मदमत्सर खानी ❀ शम दम दयाहीन अभिमानी
संयम नियम तीर्थ ब्रतधर्मा ❀ जप तप योग यज्ञ शुभ कर्मा
जहँलगिसाधनश्रुतिनबखानी ❀ सो मोपै न कर्म मन बानी
शोचनीय सबविधि जगमाहीं ❀ सपनेहुँ मति सुकर्म पथनाहीं
कहौं कहा मुख एक बखानी ❀ निजकरनीकलि कठिनकहानी

निजकरनी अति कठिन निहारी ❀ कैशोच नितनूतन भारी
तब जहँ तहँ लखि साधु सुजाना ❀ करौं प्रश्न निज भ्रम अनुमाना
है प्रसन्न तिन मोहिं बताई ❀ मन बच कर्म सद्गुरु सेवकाई
सद्गुरु मंत्र कठिन करबाला ❀ बिन श्रम कटत कठिनजगजाला
कामक्रोध मदमोह महाना ❀ मत्सर लोभ आदि बलवाना
भाजत सकल कटत करबाला ❀ ज्यों मृगराज कढ़त मृगमाला
जब मन कामादिकबिन होई ❀ तब अरि मित्र न सग जग कोई
जबजग लखहिएकसम जीते ❀ तब सहजहिं सनेह सिय पीते
जीवन मुक्त परम गति सोई ❀ पै बिन सद्गुरु कृपा न होई
अस उन मोहिंबहुत समझावा ❀ बिनु गुरु कृपा न हरि कहुँ पावा
बिनु गुरु कृपा बिवेक न होई ❀ जप तप तीर्थ कोटि कर कोई
बिन बिबेक भवपार जो चाहा ❀ जिमि पिपील चह सागर थाहा
तब दृढ़ता मोरे मन आई ❀ सद्गुरु करिय बिलम्ब बिहाई
अस बिचारि मैं सद्गुरु केरा ❀ लाग्यों खोज करन चहुँफेरा
सो प्रसंग अब कहहुँ बुझाई ❀ सुनहु सुजन क्षमि मोरि ढिठाई
जम्बूद्वीप अनूपम भावैं ❀ भरतखण्ड जेहि सुर अभिलावैं
मध्य देश महिमण्डन तहँवा ❀ अवध अनूप राम रहे जहँवा
अवधदेश किमिकहहुँबखानी ❀ जहँ रबिबंश राम रजधानी
तहँ पाटन सम ग्राम सोहावन ❀ जिला उन्नाव जासुयश छावन
तहँ यक मित्र मोर मतिधामा ❀ अतिहिनिपुणअनुपमकबिनामा

दो० सुकबिसुबोधसुशील अतिसुगतिअनन्दीदीन ।
बिप्रप्रभाकर अवस्थी निजकुलकमलप्रवीन ॥

मैं तिनके ढिगयकदिनगयऊं ❀ बन्दि चरण पुनि बैठत भयऊं

कर युग जोरि निहोरि बहोरी ❀ पूछेउं हृदय हर्ष नहिं थोरी
तात चहत मैं सद्गुरु शरणा ❀ जस सन्तन ग्रन्थन श्रुति बरणा
सद्गुरु चिह्न सन्त श्रुति गाये ❀ ते सहजहिं जहँ परत दिखाये
असको पुरुष सिंह जगमाहीं ❀ सो कृपालु बरणौ मोहिं पाहीं
तुम बुधि भवन ज्ञानगुणगेहू ❀ बरणि कहौ यदि मोपर नेहू
सुनि मम बैन चैनचितआनी ❀ बोले बहुरि मधुर मृदु बानी
सुनहु तात सद्गुरु यहिकाला ❀ अहहिं स्वामि रघुनाथ कृपाला
आनंदअवधिअवधअतिपावनि ❀ निमिसरयूकलिकलुषनसावनि
रामघाटतहँ अतिहि सोहावन ❀ मुनिमनहरन पतित जन पावन
तहँ बस प्रभु रघुनाथ कृपाला ❀ जिनकरसुयशभुवनअतिआला
रहनिगहनिसमुझनिजिनकेरी ❀ सुननिगुननिगुनकहनिजितेरी
भजन प्रभाव न वर्णन योगू ❀ सो जग प्रगट लखै सब लोगू
जो सबचरित आदि ते कहऊं ❀ बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊं
ताते कहहुँ समास बखानी ❀ कथाबिशद अतिआनँद दानी
पैंतेपुर यक ग्राम सुहावन ❀ जासु जिला सीतापुर पावन
तेहि पुर कान्यकुब्ज द्विजकोऊ ❀ कुरु पांडे पत्रवार के सोऊ
महा तपो धन धर्म धुरीना ❀ वेद बिहित द्विज कर्म प्रवीना
तहँ सन्तावतार तिन लीन्हा ❀ विषय बिरतनरनहिं कहुँचीन्हा
बालपनहि ते बिमल बिरागा ❀ भयो प्रगट भवभय भ्रमभागा
तदपि रहे कछुकाल गृहाश्रम ❀समुझिमनहिंबिधिकृनकरणीक्रम
तहँ चरित्र यक अद्भुत कीन्हा ❀ मातहि अगम पर्मपद दीन्हा

दो० मित्र अनन्दीदीनके सुनिइमि बचन बिशाल।
मैं पूछा पुनिचरितयह आदि ते कहहु कृपाल॥

तब बिस्तार सहित उन बरणा ❀ चरित चारु मुद मंगल करणा
जयगोविन्दयहचरित विशाला ❀ जस मैंश्रवण सुन्योंतेहिकाला
तस तुमसन अब कहहुँबखानी ❀ प्रभु रघुनाथ चरण उर आनी
एक समय जननी कह बयना ❀ हे रघुनाथ ज्ञान गुण अयना
सुनहु तात मम प्राण पियारे ❀ लोचन लाह भुवन उजियारे
भयउ तात कुल कमल पतंगा ❀ कहँ लागि कहउँ प्रशंसि प्रसंगा
सुत गुण बर्णन नीति विरोधू ❀ तातें करिय मनहिं मन बोधू
ये सुत सुनहु मनोरथ ताके ❀ होइ न पूरि देव द्रुम जाके
तुम्हरी सरिस तात सुत जाके ❀ होइ न पूरि मनोरथ ताके
तातें तात मोरि अभिलाषा ❀ पुरवहु बढ़िहि सुयश तरुशाखा
मांगहुँ जो पदार्थ मैं आजू ❀ सो हठि देहु योगि शिरताजू
इमि सुनि मातुबचन अतिमीठे ❀ करत सुधा मोदक गुण सीठे
बोले बचन स्वामि रघुनाथा ❀ कर युग जोरि नाय पदमाथा
सुनहु मातु मैं सब बिधि हीना ❀ जग पुरुषार्थ पदार्थ बिहीना
सो समर्थि गुण एक न मोरे ❀ केहि बिधि सरैं मनोरथ तोरे
पै मन बच क्रम सेवक तोरा ❀ अहौं मातु यह प्रण दृढ़ मोरा
जो मनोर्थ मम लायक होई ❀ तो किन कहहु करौं हठि सोई
नीच काम जहँलागि जगमाहीं ❀ सेवक योग्य करौं श्रमनाहीं
को पदार्थ जननी अस मोरे ❀ जो अदेय कारज लगि तोरे
सुनि रघुनाथ गादित बरबैना ❀ बोली मातु आनि चितचैना
अहहु तात समरथ सब भांती ❀ महिमाअमितनकछुकहिजाती
कसन बचनभाषहु यहिबिधिके❀तुमशुभसदनसकलसिधिग्राधिके
मैं चाहति तुमसन यहमांगा ❀ जन्म पदार्थ अलौकिक स्वांगा
देहु तात बैकुण्ठ निवासू ❀ हरहु बिषम भव सम्भव त्रासू

तुमहिं न है अदेय कछु एहू ❀ जो प्रसन्न मन है मोहिं देहू
सुनि जननीके वचन विशाला ❀ मन विचार पुनि कीन कृपाला
मरणसमै जाकरि मति जैसी ❀ सो गति अगति लहै हठि तैसी
सत नर असत कर्म मन लागा ❀ मरण समय सोइ पाव अभागा
पापी नर शुभपद मन लागा ❀ मरण समय सोइ लहै सुभागा
प्राकृत पूर्व कर्म कृत योगू ❀ पाइ होत ऐसहु संयोगू
यह मत सुदृढ़सन्तश्रुतिगावा ❀ असविचारिजननिहिं समुझावा
सुनहु मातुतुम सुकृतअनेका ❀ कीन यथाविधि सहित बिबेका
अन्तहु मति बैकुण्ठहिराती ❀ तुमहिं बिकुण्ठ बास सबभांती
नहिं सँदेह कछु मनमाहीं ❀ शोचनीय तुव गति मतिनाहीं
इमिसुनि बचनपियूष तात के ❀ भयउ न मन परितोष मात के
पुनि बोलीं सुठि गिरा गंभीरा ❀ सुनहु तात समरथ मतिधीरा
कर्म शुभाशुभ मन अनुमानी ❀ कह्यो प्रतीत नीति युत बानी
सो सब समीचीन मत अहई ❀ को अस ताहि असम्मत कहई
पै करणी निज तात निहारी ❀ लागति मोहिं भीति अतिभारी
भ्रमतभ्रमतजगयोनि अनेका ❀ जीव सहत दुख दुसह किनेका
बीतत कल्प अनेकन बारा ❀ सुख न लहत कहुँ जीवबिचारा
यदि कदापिभ्रमतहिंचौरासी ❀ कौनेहुँ जन्म बिमल मति भासी
दैव योग कछु कारण पाई ❀ कीन्हेसि पुण्य कर्म समुदाई
तब अतीव दुर्लभ नर देही ❀ पावत जीव चहत सुर जेही
तदपिन यदिममतामदत्यागी ❀ रामहिं भजे कुबुद्धि अभागी
जन्म पदार्थ वादितेहिंखोया ❀ सुत बित दार मोहनिशि सोया
यम यातना अनेक प्रकारा ❀ लहत बहुरि अति दुसह अपारा
असबिचारिसुनसुनहुकृपाला ❀ लखिनिज करणी कठिन कराला

मैं चाहति तुम सन बर एहू ❀ बास बिकुण्ठ स्वमुख कहिदेहू
तुम समरथ सबभांति गोसांई ❀ मानि मातु मम करहु सहाई
इमिसुनि मातुगिराअतिरूरी ❀ श्रवण सुखद करुणारस पूरी
बोले प्रभु रघुनाथ उदारा ❀ मातु बचन को टारनहारा
जो तुव मातु रजाय सु एहू ❀ बास बिकुण्ठ स्वमुख कहिदेहू
तौअबकहौंबिगत अभिमाना ❀ तुमहिं बास बैकुण्ठ निदाना
होइहिं कहौं शेपि प्रण ताते ❀ प्रणतपाल रघुलाल कृपाते
प्रणतपाल प्रण रघुपति केरा ❀ करिहैं अवशि पूर प्रण मेरा
इमि सुनि बैन चैन उरआनी ❀ बोलीं मातु बहुरि मृदुबानी
हे रघुनाथ प्रणत हितकारी ❀ बार तीनि अस कहा पुकारी
सानँद बहुरि देह निज त्यागा ❀ लहासोपदजेहि मनअनुरागा
तहँ बहु लोग चरित सुनि एहू ❀ कीन्हेनि अलख मानि संदेहू
स्वामि दीनबर तुम जननीका ❀ सो भा सत्य होइ किमि ठीका
यह संदेह सबहिं अति भारी ❀ हरहु स्वामि प्रणतारतिहारी
तुम कृपालु सेवक सुख दायक ❀ दीनबन्धु सबबिधि सब लायक
हम रावरे दास मन बच क्रम ❀ हरहु कृपाल कृपा करि यह भ्रम
सुनिअति दीनबचन जनजानी ❀ प्रभु रघुनाथ कहा मृदुबानी
सुनहु सुजन छाड़हु संदेहू ❀ भ्रांति निवारण कारण एहू
धरत चिता पर मातु शरीरा ❀ दक्षिण कुक्षि फारि गंभीरा
निकसै दुग्ध धार यदि जोरा ❀ तौ जान्यो बर भा सति मोरा
अस कहि जाय चिता रचवाई ❀ मातु देह तापर धरवाई
धरतहि दुग्ध धार अति भारी ❀ निकसी कोषि सुदक्षिण फारी
तब लखि कहनलगे सब लोगा ❀ धनि रघुनाथ गाथ गति योगा
जय जय जय रघुनाथ कृपाला ❀ चारिहु ओर शोर तेहि काला

रह्यो छाय सब लोगन केरा ❀ जेहि सुखमगन अजहुँ मनमेरा
याविधि प्रभु रघुनाथ चरित्रा ❀ कीन एक ते एक विचित्रा
प्रभु रघुनाथ प्रताप अपारा ❀ को समस्त जग वर्णनिहारा
ताते कहहुँ स्वमति अनुसारा ❀ औरहु एक चरित अतिप्यारा
प्रभु रघुनाथ दास के काजू ❀ जो निशि निशस दीनरघुराजू

क० मातै दियो वर वास वैकुण्ठको लोगन कीन्ह संदेह तहां है।
नाथ दियो वर मातको रावरे सो सत्य भा सो प्रमाण कहां है॥
दक्षिण कुक्षिते दुग्धकी धार चिता पै कढ़ी या प्रणाम यहां है।
सो पयधार चितापै कढ़ी लखि लोगन पायो प्रमोद महा है॥ १॥

इति श्रीमद्रामचन्द्र चरणाद्वन्द्वारविन्द मकरन्द मलिन्दानन्द
तुन्दिल जयगोविन्द बुध विरचिते रघुनाथ विनोदे
द्वितीयस्समुल्लासः॥ २॥

अथानुष्टुप्छन्दः॥
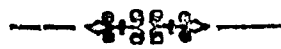
श्लो० रघुनाथप्रभुंवन्दे कथनीयोरुतेजसम्।
यत्कार्य्यंकृतवान्रामोयस्यैवाकृतिरूपतः॥१॥

सो० जानिअनाथसनाथ करहुस्वामि रघुनाथप्रभु।
बरणौं तुव गुणगाथ जोरिहाथ धरिमाथमहि॥

दो०जयगोबिन्दचितलायकै सुनियोचरितबिशाल।
अवधक्षेत्र सन्यास हित गे रघुनाथ कृपाल॥

आनंदअवधिअवध देग नाई ❀ लखि प्रणाम कीन्हेउ शिर नाई
सोयहअवधअवनिअघहरणी ❀ जासुकीर्ति निगमागम बरणी
जन्म अनेक सुकृतशुभजासू ❀ जग पग परत अवध मग तासू
यहिबिधिलखत प्रशंसतजाहीं ❀ अमित अनन्द मगनमगमाहीं
कछुकदूरि चलि देखेउ सरयू ❀ मज्जन जासु अमित अघहरयू
लखतहिं करि प्रणाम हरषाने ❀ धर्म धुरन्धर धीर सयाने
सुनितटगयउकरतगुणगाना ❀ जहँ अनन्त जन सन्त सुजाना
कोउमज्जहिंकोउमज्जनजाहीं ❀ कोउ मज्जन करि ध्यानकराहीं

दो० मुण्डन मज्जन आदि दै तीर्थकृत्य जस रीति।
जयगोबिन्दगुरु करत भे श्रद्धा भक्ति सप्रीति ॥

बहुरि चले अवधहि शिरनाई ❀ सुमिर कृपालु राम रघुराई
गये समीरसूनु गढ़ पासा ❀ जानि इष्ट तहँ कीन निवासा
पुनि मनबचक्रम कपट बिहाई ❀ कीन कपीश बिनय शिरनाई
हे कपीश प्रणतारत हरणा ❀ जासुसुयश हरि श्रीमुख बरणा
महाबीर अतुलित बलशीला ❀ अकथ अनन्त मनोहर लीला
जन रञ्जन भञ्जन भवभारू ❀ गञ्जन पातक पुञ्ज पहारू
दीनबन्धु सेवक सुखदाई ❀ जनपर कृपा रहति अधिकाई
जन मनोर्थ जल बारिद नीके ❀ सुमिरत संकट हर सबही के
सुनहु स्वामि मैं राउर शरणा ❀ आयउ भक्त भूरि भय हरणा
कीन चहत मैं अवध निवासू ❀ सो दीजिय प्रभुआयसुआसू
तुम सबभांति अवध अधिकारी ❀ अहहु करहुप्रति दिनरखवारी
जो राउर रजाय गहि रहई ❀ अवधबिना श्रमसोसिधलहई
ताते सुखद सुथरु सुभिचारी ❀ है प्रसन्न प्रभु कहहु उचारी

असिरघुनाथ विनय सुनिकाना ❀ भे प्रसन्न मन प्रभु हनुमाना
आइ प्रगट वर बचन बखाना ❀ हे रघुनाथ दास मतिमाना
दो० अवधक्षेत्र सन्यास तुम चाहत सरयू तीर।
पै कछुक दिनप्रथम तुम समर करहु मतिधीर॥
जे तहँ समर साथ तुव करिहैं ❀ ते बिनश्रम भव बारिध तरिहैं
तिनकीसुगतिअवसितुव करते ❀ एहि बिधि लिखे अंक नहिंटरते
ताते बनहु सेनवर जाई ❀ रापट साहेब की कटकाई
तहँ आई यक संत समाजा ❀ कछुकदिवसमाअतिहिं दराजा
निशि सतसंग करन के काजू ❀ तुम जैहौ तेहि संत समाजू
सभा अनूप अनूप कथाहू ❀ क्षण क्षण प्रीति बढ़ी सबकाहू
जाई बीति निशा तहँ सारी ❀ करत संत संगति दुखहारी
सुधि न रही तुमकहँ तन केरी ❀ जाई भूलि निशा की बेरी
तब धरि तुव स्वरूप सम रूपा ❀ दिहैं निशास रघुपति सुरभूपा
रघुपति प्रणनिज जनहितकारी ❀ भक्त हेतु नाना तन धारी
तुवलागि बिरद लाजप्रभुकरिहैं ❀ आइ निशास तुव कारज सरिहैं
दूसरि बार फेरि रघुनाथा ❀ दिहैं निशासकरितुमहिंसनाथा
एकसमय पुनि तुव हितलागी ❀ अइहैं राम प्रणत अनुरागी
गोलंदाज काज तुव करिहैं ❀ दीन दयाल बिरद अनुसरिहैं
तेहि पीछे तुव अवध निवासू ❀ होई हरण बिषम भव त्रासू
बासुदेव शुभ घाट बिशाला ❀ रही बास प्रथमहिं कछु काला
बहुरि सुनहु रघुनाथ सुजाना ❀ रामघाट सबघाट प्रधाना
तहँ निवास करिहौ तुम जाई ❀ सानँद सहित संत समुदाई
होइहि बिशदसुयशजगमाहीं ❀ मम प्रसाद कुछ संशय नाहीं

बार बहुत तुलसीकृत गाना ❀ तुमकीन्हेउमसहितस बिधाना
पावन थल नैमिष बनमाहीं ❀ ताते मैं प्रसन्न तुमकाहीं
तात अवश्य करो तुम जाई ❀ मम आयसु अतीव सुखदाई
होइहौ संत शिरोमणितःता ❀ संत कमल रबि आनंद दाता
रामभजन को प्रगट प्रतापू ❀ करि देखाइहौ आपुहि आपू
को बिस्तार कहै बहुतेरा ❀ पुरिहैं सब मनोर्थ बरमोरा
जै गोविन्द अस दै बरदाना ❀ अन्तर्धान भये हनुमाना

दो० तब रघुनाथदासप्रभु आयशुधारि निजशीश ।
चले अवध ते पुनि पुनि उरसुमिरत कपिईश ॥

श्री महाराज बहादुर रपट ❀ जासु रपट अरि मरि भे चापट
तासुफौज निज नामलिखावा ❀ जानि न भेद कहूं कछु पावा
जिमि बनबास ब्याज रघुराजू ❀ लखा न कहूं कीन निज काजू
तिमि करिब्याज सेनचरकेरा ❀ इनहुँ कीन कारज बहुतेरा
आगिलि कथा कहौं सुखदाई ❀ जयगोबिन्द सुनियो मनलाई
नित नौकरीकाज निजकरहीं ❀ बिधि कपीश आयसु अनुसरहीं
रहौं उदास आस जग कीसों ❀ नित नूतन सनेह सिय पीसों
आठहु याम राम अनुरागे ❀ रहैं अकाम कपट छल त्यागे
सबकहँ सुगम निगम मतएहू ❀ सिया राम निहकाम सनेहू
यह उपदेश देहिं सब काहू ❀ भजहु राम जग जीवन लाहू
यकदिन भयोचरित यकचारू ❀ मन रंजन भंजन भवभारू
सन्त समाज आज यक आई ❀ प्रभु रघुनाथ स्वामि सुनिपाई
देखन ताहि तहां निशिगयऊ ❀ देखि समाज मगन मन भयऊ
कीन प्रणाम सबहि शिरनाई ❀ सन्त प्रणाम रीति जसि गाई

तिनआशिषदीन्हींअतिनीकी ❀ अनुपावनी भक्ति सिय पीकी
रहनि अनूप रूप अवलोकी ❀ लागे लखन नयन पट रोकी
नाम पूछि आसन बैठारा ❀ पुनि सोइ कथा प्रसंग निकारा
लागे कथा कहन मन भावनि ❀ कहतसुनतकलिकलुषनशावनि
सभा अनूप अनूप कथाहू ❀ क्षण क्षण प्रीति बढ़ी सबकाहू
क्षण समानसब निशा सिरानी ❀ भयो प्रभात परयो तब जानी
तब तहँ कथा विसर्जन भयऊ ❀ जबरवि बिम्ब बिमलखुलिगयऊ
तब रघुनाथ दास प्रभु आसू ❀ लै रजाय चले कटक निवासू
मारग मध्य इनहिं सुधि आई ❀ आजु निशा सब इतहि बिताई

दो॰ देखत संत समाज सुठि करत सुखदसतसंग।
गयोभूलि मोहिंनिपटहीं निशिनिजनिशसप्रसंग॥

यह संशय कछुक मन आवा ❀ पुनि कपिगिरा बहुरि सुखपावा
चरितचारु अति अदभुत भयऊ ❀ सो जग प्रगट फैलि सब रहेऊ
प्रभु रघुनाथ सभा कहँ गयऊ ❀ इतनिशिनिशस समयजबभयऊ
तब दै निशस जौन जनआवा ❀ तेहि लै नाम इनहिं गोहरावा
हे रघुनाथ दास उठि आसू ❀ देहु निशस करिआलस नासू
आवा निशस समय तुव एहू ❀ देहु निशस तजि नींद सनेहू
तासु भेद जाना नहिं रहई ❀ तातें बहुरि २ अस कहई
ताक्षण बिरदलाज हरि कीन्हा ❀ तुरताहि आइ निशसतहँ दीन्हा
धरि रघुनाथ रूप रघुराजू ❀ सोइ कर शस्त्र वस्त्र सब साजू
सोइदोउपदनपनहियां मानौ ❀ सोइ पतलूम ललित मन जानौ
सोइ जाकट कटिकसनिपटाकी ❀ सोइशिर लसनिबसन दुपटाकी
सोइसुठिहँसनिछटाछबिमुखकी ❀ सोइचितवनिचितवानि जनदुखकी

सोइ डोलनि सोइ चलनि पदनकी ❀ सोइ छबि छटा अनूप रदनकी
इमि धरि रूप निशस निशि दयऊ ❀ बहुरि राम निज धामहिं गयऊ
यह चरित्र नहिं काहू जाना ❀ जो निशि कीन राम भगवाना
जब रघुनाथ दास प्रभु आये ❀ तब सेनाचर तुरत बोलाये
पूछा सबहि निशस निशि मेरा ❀ दीन कौन जन कहहु अदेरा
ताकर निशस देउं मैं आजू ❀ यामें नहिं सकोच कर काजू
तहँ कोउ कहन लगो सुसकयाई ❀ का पूछहु प्रभु बचन बनाई
हम निशि तुमहिं जगावा जाई ❀ तब तुम निशस दीन निज भाई
यामें कछु न मृषा करि जानो ❀ सत्यहि सत्य बचन मम मानौ
इन आसिता सुगिरा सुनि काना ❀ रहे चुप साधि न चरित बखाना
यह निशि चरित न कहुँ जन जाना ❀ असगुनि दीन हुलास सुजाना
पीछे भा यह चरित प्रकाशा ❀ गये और जन संतन पासा
देखन सभा करन सतसंगा ❀ तब सन्तन यह कहा प्रसंगा

दो० आजु निशा सारी इहैं सभा कीन रघुनाथ।
उदय भये रवि गये तब धन्य शील गुण गाथ॥

तब इन जनन कहा बर बयना ❀ निशि रघुनाथ रहे निज अयना
दीन निशस निशि हमहि जगावा ❀ तुम अचर्य यह काह सुनावा
तब संतन कह करि सुबिचारू ❀ रघुपति कीन चरित यह चारू
धरि रघुनाथ रूप रघुनाथू ❀ पालन कीन बिरद श्रुति गाथू
इत रघुनाथ सभा निशि कीन्हा ❀ उत रघुराज निशस दै दीन्हा
धनि रघुनाथ गाथ जग आजू ❀ जिन कर निशस दीन रघुराजू
राम कृपालु लाज जनकेरी ❀ राखहिं सदा कहैं श्रुति टेरी
अकथनीय सब बिधि गुणगाथू ❀ भुवि सन्तावतार रघुनाथू

जथ रघुनाथ अचिंत्य प्रभाऊ ❀ राम प्रतोषक शील स्वभाऊ
असकहि सन्त जनन शिरनाये ❀ हर्षित मनहुँ रंक निधि पाये
इमि सुनि सन्तबचन सबआये ❀ कहि कहि हाल सबन समुझाये
तब भा निपट प्रगट यह हालू ❀ जो निशिकीन राम रघुलालू
अस तिन कर प्रताप सबसाजू ❀ प्रगटलख्यो जग तब अरु आज
तिनकी शरण अवशि तुमजाहू ❀ लेहु तात जगजीवन लाहू

छन्द मनहरन ॥

दीनको उदार सन्त मीनको अधार ब्रह्म आनंद अगार भू सं-तावतार लीन्ह्यो है। बिधि कृतलेख कपिराजकी रजाय रेख मानिकै बिशेष सेनचर वेषकीन्ह्यो है॥ यदपि चरित्र सदै कीन्ह्योहै बिचित्र तऊजैगोबिन्द मित्र यत्र कुत्र कहूं चीन्ह्यो है॥ खुलिगो प्रभाव तब चल्यों न दुराव जब निशसको दाव जानकीश दौरिदीन्ह्योहै

इति श्रीमद्रामचन्द्र चरणद्वन्द्वारविन्दमकरन्दमलिन्दानन्द
तुन्दिल जयगोविन्द बुध विरचिते रघुनाथ
विनोदे तृतीयो समुल्लासः॥ ३॥

अथ भुजंग प्रयातम्॥

यदर्थंकृतंजानकीशेनयुद्धं सुपद्रूपतुल्यस्त्ररूपंवि धृत्वा। तमीशंगुरुंज्ञानिनामग्रगण्यं नतोहन्नतो हन्नतोहन्नतोहम्॥ १॥

सो॰ दोउकरजोरि निहोरि पूंछेउ महि धरि माथको।
बरणहु मित्रबहोरि चरित स्वामि रघुनाथको॥

दो० मित्र अनन्दीदीन लखि प्रेम बिनय प्रणमोर।
लगे बहुरि वर्णन कथा प्रेम प्रमोदन थोर॥

सोइ रापट साहेब यक काला ❀ सेन संग चतुरंग बिशाला।
गयो ताहि लै बांगर देशू ❀ तहँ घेरा यक आइ नरेशू
जाके संग सेन चतुरंगा ❀ पार लहै को बरणि प्रसंगा
जहँ गयन्द गिरिवर सम छाजै ❀ बाजि समीरसरिस गति भाजै
रथ घहरात मनहुँ घनगाजै ❀ मोर श्रवण सुनि करत अवाजै
पैदर बीर धीर रण करारू ❀ जिनहिं समर लखिघोर धगरारू
अस दल साजि आइ तेहि घेरा ❀ बरणि न जाय कटक बहुतेरा
तब दूतन साहिबहि जनावा ❀ महराज यक नृप चढ़ि आवा
सुनतहि बैन बिलम्ब न लावा ❀ तुरत सेन चतुरंग सजावा
सजे गयन्द वृन्द बहु भांती ❀ तिमितुरंग बहु रंग सुजाती
रथ बरूथ सारथिन सुधारा ❀ चढ़े बीर रणधीर जुझारा
बारण बाजि सजे जे नाना ❀ तिनपर चढ़े बीर बलवाना
तिमि पदाति बहुभांति सजाई ❀ बरणि न जाय कटक प्रभुताई
इमि लै सेन चैन नहिं थोरा ❀ जायकीन रापट रणघोरा

दो० बीरमहाबल धीर मति शूर शिरोमणि गाथ।
ताहिनगये न सेन संग समर स्वामि रघुनाथ॥

रहे बनावत भोजन नीके ❀ कछुक भोग कारणसिय पीके
समर गमन यद्यपि सुनिपावा ❀ तदपि न जाबु इनहिं मनभावा
रामकाज परिहरि जो कोई ❀ जात कहूं तहँ काज न होई
ताते करहुँ काज हरि कोई ❀ रामप्रताप अवसि जय होई
भोगु बनाय पवाय रामको ❀ बहुरि जाब संग्राम कामको

असमनगुनिनलसरकहँगयऊ ❀ अब रण हाल सुनिय जस भयऊ
भयो समर दूनौ दल केरा ❀ खगन शृगालन हर्ष घनेरा
बीर शस्त्र क्षतयुत भे कैसे ❀ ऋतु बसंत किंशुकतरु जैसे
मारु मारु धरु रव चहुँओरा ❀ रह्यो छाय संगर अति घोरा
ता क्षण रापट कटक परानी ❀ जो श्रुति सुन्यौं सोकहौं बखानी
गोलंदाज चले सब भाजी ❀ भजे सवार गवांर गभाजी
औरहु सेन सकल बिलखानी ❀ उत नृप सेन आइ नियरानी

दो० ता क्षण अरुझे देखिकै रघुनाथहि निजकाज ।
बिरद लाजडर आनिकै आये रघुकुलराज ॥

धरि रघुनाथ रूप रघुराजू ❀ सोइ कर शस्त्र बस्त्र सब साजू
सोइदोउपदन पनहियांमानौ ❀ सोइ पतलूम ललित मन जानौ
सोइजाकटकटिकसनि पटाकी ❀ सोइ शिर लसनि बसनदुपटाकी
सोइमुठिहँसनिछटाछबिमुखकी ❀सोइचितवनिचितवनिजनदुखकी
सोइबोलनिसोइचलनिपदनकी ❀ सोइ छबि छटा अनूप रदनकी
इमि धरि रूप राम रघुराजू ❀ आइकीन रण काज दराजू
गोलन्दाज काज इनकेरा ❀ सोइ हरि लगे करन बिन देरा
उर करि चोप तोप अरिदागे ❀ शत्रु शरीर कुलिश इव लागे
ताक्षण रापट बाजि सवारा ❀ लखि चारित्र चित करै बिचारा
कोउ न लखात समरएहिबेला ❀ करै समर रघुनाथ अकेला
मारत भरत तुरत दोउपानी ❀ चलीजात नृप सेन परानी
को रघुनाथ सरिस जग आजू ❀ बीर धीर रण सिन्धु जहाजू
सकल सेन बिनवै धरि माथे ❀ अस पद दिहौ आजु रघुनाथे

दो० जयगोबिन्दजाकोसुलभ अनइक्षित पदचारि ।

दैन कहततोहि रापट मानुष मतिउरधार ॥

को बिस्तार कहै बहुतेरो ❀ भागो सकल कटक नृपकेरो
भृकुटि बिलास जासुजगहोई ❀ आवा समर करन हित सोई
ताहिअजयअसकोजगजामा ❀ जो सकै कालजीति संग्रामा
बिनश्रम जीति नरेशभगावा ❀ बहुरि राम निजधाम सिधावा
यह चरित्र रण कहुँ नहिं जाना ❀ कीन जो रण रघुपति भगवाना
सेन संभारि बिजय रण पाई ❀ रापट चला संग कटकाई
निजथऊआइसुचितचितभयऊ ❀ पुनि रघुनाथ स्वामिढिग गयऊ
लखताहिमन अनन्दअतिभयऊ ❀ धाय उठाय लाय उर लयऊ
बोलेउ बचन पियूष समाना ❀ रापट प्रेम न जात बखाना
तुव प्रताप जय रण मैं आजू ❀ हे रघुनाथ बीर शिरताजू
भये न हैं नहिं होवनिहारे ❀ बीर सरिस रघुनाथ तुम्हारे
तब बोले रघुनाथ कृपाला ❀ अक्षर अलपरु अर्थ बिशाला
नाथ कही तुम मम प्रभुताई ❀ सो उलटी मोहिं परत जनाई
मम कर समर बिजय तुमपाई ❀ मैं न गयो रण आजु गोसाई
हरि हित भोगु बनावत रहेऊ ❀ यहि कारण अवकाश न लहेऊ
भोगु बनाय पवाय राम को ❀ बहुरि जाब संग्राम काम को
तब ताकि सेन हुते हग देषा ❀ पुनि सुनि जय उरहर्ष बिशेषा
पै अब प्रीति लता उर जामी ❀ तुमबिपरीति कह्योकिमिस्वामी
तब रापट बोलेव बर बयना ❀ हे रघुनाथ ज्ञान गुन अयना
सत्य सत्य पुनि सत्य बखानौ ❀ नहिंमम बचन मृषाकरि मानौ
तुव प्रताप मैं जय यश पावा ❀ तुम चाहतकिमिताहि छिपावा
सकल सेन बिनवै धरि माथू ❀ अस पद लेउ आजु रघुनाथू

दो० सुनि रापटके बचन पुनि उरगुनि कपिके बैन
जानिराम कृतचारितगति उपजीअति चितचैन
बहुरि स्वामि रघुनाथ बिचारा ❀ मैं निजकाज सकल निरधारा
जेहि हित ब्याज सेनचर केरा ❀ कीन समर सो काज घनेरा
अब मम चहिय अवधपुरबासू ❀ जहँ बसि दूरि होत भव त्रासू
समर कीन मैं बार कितेका ❀ रह्यो काज अब शेष न एका
असगुनि रापट प्रति हगदयऊ ❀ बचन मधुर मृदु बोलत भयऊ
प्रभुमोहि आसु रजायसु दीजै ❀ सानंद सपदि बिलम्ब न कीजै
अवधबास करिहौं कछुकाला ❀ नाम कटाय जाय ततकाला
सुनि रापट झट अटपट बैना ❀ भयो दुचन्द चित्त नहिं चैना
नहिं तनको तनकौ रहहोसू ❀ बोलेउ बचन सनेह सरोसू
कहिकहिबिबिधिभांतिसमुझावा ❀ बिरह जानि दारुण दुखपावा
गुरु कृत काज न मानत भयऊ ❀ नाम कटाय अवधपुर गयऊ
जय गोविन्द सुनियो मनलाई ❀ जिमि बनबास ब्याज रघुराई
असुर मारि सुरकाज सवांरी ❀ बहुरि अवधपुर गयउ खरारी
तिमि करि ब्याज सेनचर केरा ❀ कीन समर कारज बहुतेरा
बहुरि अवधपुर गयउ न माना ❀ प्रभु रघुनाथ दास मति माना

मनहरन ॥

गई भाजि भीर भूरि घायल शरीर अस दूसरो न बीर धैरे धीर यहि बेला है। बाजि पै सवार करै रापट बिचार रणसूर सरदार रघुनाथही अकेला है ॥ मारत सचोप झटपट भरि तोप कोऊ पावत न ओप शत्रु लोप कै पछेला है । जैगोविन्द

चारिमन देखियो बिचारि रघुनाथरूपधारि यों खरारि खेलखेलाहै ॥

इति श्रीमद्रामचन्द्र चरणद्वन्द्वारविन्दु मकरन्द मलिन्दानन्द तुन्दिल जयगोबिन्द बुध विरचिते रघुनाथविनोदे चतुर्थ समुल्लासः ॥ ४ ॥

अथ भुजंगप्रयातम् ॥

नमस्ये गुरुंयत्प्रभावाद्धृतत्वं गतंवास्त्वसरण्वासम क्षंजनानाम् । परोक्षेकृते ऽद्धा वशिष्टेनकृत्स्ने धृतेसु प्रहृष्टात्मनाऽचिन्त्यशक्त्या ॥

सो० मैं पूछेउँ कर जोरि मित्र अनन्दीदीन सों ।
बरणहु तातबहोरि चरित स्वामि रघुनाथको ॥

दो० इमिसुनिकैपुनिबचनमम बोलेअति चितचाव ।
तातअकथमनबचनक्रम प्रभुरघुनाथ प्रभाव ॥

जो तुम्हरे मन है अति चाऊ ❀ श्रवण हेतु रघुनाथ प्रभाऊ
तौ तुम चित्रकूट चलि जाऊ ❀ तहँ रामा प्रभु साधु सुभाऊ
जिनकर विमल बिबेक विरागा ❀ रामचरण नित नव अनुरागा
सरित पयस्विनि पावन नीरा ❀ ताके सुखप्रद पश्चिम तीरा
तहँ जानकी कुण्ड जन पावन ❀ तहँ निवासतिनकरमनभावन
तिन प्रति प्रश्नकरहु तुम जाई ❀ कहिहैं तात तुमहिं समुझाई
सुनहुसुजनइमि आयसु दीन्हा ❀ मित्र अनन्दीदीन प्रबीना
तब मैं निज मन कीन विचारा ❀ यह संयोग भलेहि बिधिधारा
तीर्थ गमन संतन कर संगू ❀ होइहि सकलभांति भ्रमभंगू
असगुनि चित्रकूट चलि गयऊ ❀ लखिबिचित्रगतिप्रमुदितभयऊ

सकल कामप्रद कामद नाथू ❀ गाथा जासु अमित श्रुति गाथू
दर्शस्पर्श प्रदक्षिण जासू ❀ हरत विषम भव सम्भव त्रासू
सरित पयस्वनि पातक हरणी ❀ जासु कीर्ति निगमागम बरणी
तहँ राघव प्रयाग प्रणदाई ❀ मैं मतिमंद कहौं किमि गाई
रामघाट सब घाट प्रधाना ❀ मज्जन करत हरत अघनाना
सीतापुर प्रभाव गुणगीता ❀ सकै गाइ अस कौन पुनीता
कोटि तीर्थ थल अघखलहारी ❀ देवांगना दरश बलिहारी
पुनि प्रभु पवनपुत्र हनुमाना ❀ दरशन करत हरत अघनाना
गवनतहीं प्रमोद वनमाहीं ❀ दुसह दुःख दारिद्र दुरिजाहीं
ताके दक्षिण मंगल मूला ❀ सरित पयस्वनि पश्चिम कूला
तहँ जानकी कुण्ड शुभ देशू ❀ जहँबसि रहत न कलिमललेशू
तहाँ राम बाबा कर ऐना ❀ देखि लह्यो चित चौगुन चैना
बहुरि तिनहिं चलि देखेउ जाई ❀ बन्देउ चरण शीश महिनाई
दीह अशीष भक्ति सियपीकी ❀ भइ अभिलाष पूर्ण ममजीकी
बहुरि बार बहु कीन्ह निहोरा ❀ सुनहु नाथ कछु वांछित मोरा
सद्गुरु चिह्न सन्त श्रुति गाये ❀ ते सहजहिं जहँ परत देखाये
असको पुरुष सिंह जगमाहीं ❀ सो कृपाल बरणौ मोहिं पाहीं
सुनिमम वचनचैन चित आनी ❀ बोले रामा स्वामि सुज्ञानी
सुनहु तात मोरे मत माहीं ❀ प्रभु रघुनाथ सरिस गुरु नाहीं
जिनकर शील स्वभाव स्वरूपा ❀ ज्ञान विवेक विराग अनूपा
माया रहित न मत्सर मोहा ❀ न मद न काम न लोभ न कोहा
आठहु याम राम अनुरागे ❀ रहै अकाम कपट छल त्यागे
अहहि तात समरथ सब भांती ❀ महिमाअमितनकछु कहिजाती
एक समय कछु कारण पाई ❀ कीन्हेनि चरित महा मुददाई

सरयू वारि प्रवाह भरावा ❀ सो घृत भयउ भुवन यशछावा

दो० सो प्रसंग सुनिये कछुक प्रभु रघुनाथ कृपाल ।
त्यागि सेनचर बेष को गये अवध जेहि काल ॥

तेहि अवसर अवधहिंगे तहवां ❀ मौनीदास स्वामि रहे जहवां
नाम प्रसिद्ध जासु जग पावन ❀ वासुदेव शुभघाट सोहावन
मौनीदासस्वामि कहँ देखा ❀ शांत दांत शुभ सुन्दर वेषा
महा तपोनिधि तेज निधाना ❀ बुद्धि राशि वैराग्य प्रधाना
द्वन्द्वरहित गत कामरु कोहा ❀ सपन्यो न लोभ मानमदमोहा
महि गिरि चरण कमलशिरनावा ❀ उठ तन प्रेम अधिक उरछावा
मौनिदास उठि तुरत उठावा ❀ प्रेम विवश निज हृदय लगावा
कहेउ बचन उर हर्ष बढ़ाये ❀ मनहु रंक अगनित निधिपाये
धन्य देश पुर कुल परिवारा ❀ जहँतुम भयउ भुवन उजियारा
तात धन्य तुवमातु पिताहू ❀ जासु तनय तुम लोचन लाहू
धन्यतात तुम सब बिधि आजू ❀ जिनकर निशस दीन रघुराजू
गोलंदाज काज जिन केरा ❀ राम कृपालु कीन बिन देरा
कहँलगि कहउँआजुनिजभागू ❀ पुनिकिमिकहहुँजोहोइहिआगू
आजु मिटा मम सब उरदाहू ❀ तुमहिं बिलोकि बिलोचनलाहू
जयगोविन्द तेहिक्षणदुहुओरा ❀ उमगत प्रेम प्रमोद न थोरा
दोउ दुहूँन आसन बैठारा ❀ दोउ दुहुँ कुशल चरित्र उचारा
नित दोउ दुहुँन रहैं अनुरागे ❀ दोउ दुहुँ ओर कपट छलत्यागे
दोउ दुहूँन निज निज उरदेखैं ❀ दोउ दुहून आतम समलेखैं

दो० अद्भुत पैंडो प्रेमको दुहूँओर बरजोर ।
क्यों बरणौं मतिमन्द मैं सूझत ओर न छोर ॥

एहिबिधि बसतगयो बहुकाला ❀ एक दिन मौनीदास दयाला
बोलेउ गिरा प्रेमरस पागी ❀ मैं जगदीश दरश हितलागी
जइहौं अवशि पूर्वदिशि आजू ❀ करहु तात तुम अवध निवाजू
नित भण्डार भूरि बनवाई ❀ दिहेउ जेवाइ सन्त समुदाई
जहँ लगि सन्त बसै ममऐना ❀ तिनकर सेवन मान घटैना
औरहु सन्त सुजन कोउ आवैं ❀ ते सत्कार बिबिधि बिधि पावैं
हरि समान सब सन्तन जान्यो ❀ तात न भेद बुद्धि उर आन्यो
हौ सन्तावतार तुम ताता ❀ मैं निदान जानत यह बाता
धर्यो शरीर सन्त द्विज लागी ❀ नहिं जानत नरमन्द अभागी
तात बिवेक बिचार निकेतू ❀ हौ तुम धर्मसिन्धु भव सेतू
सब प्रकार सब लायक अहऊ ❀ कछुन अगम जग जो तुम चहऊ
मोह बिवश मैं तुमहि सिखावा ❀ करेउ तात तुम निजमन भावा
असकहि चल्यो सबै सँगलागे ❀ दीनबहोरि सबहिं चलिआगे

दो० कायबचन मनबन्दिबहु निजगुरुआयसुपाय ।
बहुरिस्वामिरघुनाथप्रभु निजथलबैठेआय ॥

जयगोविन्दगुरु गुरु अनुशासन ❀ करैं सकलनितनितसहुलासन
नितबनवाय अशनविधिनाना ❀ अति रसाल नहिंजातबखाना
ता पुनि सन्त सकल बोलवाई ❀ झारिभूमि शुचि वारि सिंचाई
पद पखराइ पंक्ति बैठाई ❀ चहुँदिशि शोभ संत समुदाई
परसैं बहुरि सुरस पकवाना ❀ लेह्यचोष्य आदिकबिधिनाना
साधु सराहि करत जेवनारा ❀ जौनअशनजेहि लगतपियारा
सूपकार परसत चहुँओरा ❀ पुनि पुनि बिनय बिबेक न थोरा
यहिबिधि सबहिं जेवाइसप्रीती ❀ अचवावत पुनि पावन रीती

बहुरि बसनधन भाजन पाना ❀ जो यांचत तेहि देत निदाना
कोउ न बिमुखबहुरत तहँ जाई ❀ बहुरत सकल मनोरथ पाई
प्रतिदिनएहिबिधिगुरुअनुसरहीं ❀ सबहिं प्रतोषिशोक दुख हरहीं
एहिबिधिदिवस कितेकबिताये ❀ मौनीदास स्वामि फिर आये
जयगोविन्द गुरुनिज गुरुदेखी ❀ परउ चरण उरहर्ष बिशेषी
पुनि दोउ दुहुन लही कुशलाता ❀ दोउदुहून उर सुख न समाता
दोउ प्रभु दुहुँन चरित्र सुनावा ❀ दोउलखि दुहुँन परमसुखपावा

दो० सादर संत समाज युत भे आसन आसीन ।
अतिअनन्दताक्षणदोऊदोउनिजमनगतिहीन।

बहुरि गिरा गुरु बोलत भयऊ ❀ प्रभुजगदीश धाम तुम गयऊ
दर्श पर्श अरु मज्जन पाना ❀ तहँकीन्हेउप्रभु सहितबिधाना
ताते मैं मन कीन बिचारा ❀ होइ तात ताकर भण्डारा
इमि सुनि बैन चैन उर आनी ❀ मौनीदास स्वामि कह ज्ञानी
अहहु तात समरथ सब भांती ❀ तुवबिचार कहौ केहिनसोहाती
बिनबिलम्ब कीजिय यहकाजा ❀ हृदय आनि कोशलपुर राजा
असगुरु आसु रजायसु पावा ❀ सन्त समाज साज सजवावा
धाम चहूँदिशि पत्र पठावा ❀ सहितबिनय सुठि सन्तबोलावा
बनवायो बर आश्रम नाना ❀ जहँटिकिहहिं मुनिसंतसुजाना
आसन बासन बसन मँगाये ❀ अनगंतिन नहिं जात गनाये
धरवावा अचार सबिबेका ❀ स्वादुल सुरस एक ते एका
और इक्षुरस जनति मिठाई ❀ बहु प्रकार सबिचार मँगाई
सिता शर्करा आदि मिठाई ❀ जयगोविन्द गुरुभूरि मँगाई
इला लवंग दाख सुख मेवा ❀ मँगवायो कहि सकै को भेवा

अतुल तैल दधि दूध मँगावा ❀ सकट समूह लादि घृत आवा
चारु चूर्ण गोधूमन केरा ❀ भरा कोठारन बहु चहुँ फेरा
तन्दुल चणक मूंग अरुमाषा ❀ अन्न अतुल मँगाइ धरिराखा
विभव विभूति वस्तु प्रभुताई ❀ मैं मतिमन्द कहौं किमि गाई

दो० अन्नरहितअरुसहितहवि विरचिपदार्थअनेक।
सबअनूपअरुसबनमें स्वादएक ते एक॥

रचन लगे बहुविधि पकवाना ❀ सूपकार गुण भवन सुजाना
माल पूप मोदक पकवाना ❀ बट पर्पट आदिक विधिनाना
विरचे अति रसाल समसाला ❀ एक ते एक सुखद अतिआला
अतिरसाल राबड़ी बनाई ❀ त्यों मनोज्ञ अति मधुर मलाई
श्रवण नैन पथ जहँलगिआई ❀ ते रचना गुरु सकल रचाई
कोकहिसकै विभव जसभयऊ ❀ आनँदअवधिअवधभरिगयऊ
लखि अचर्य मानत सब कोऊ ❀ मौनीदास स्वामि प्रभुसोऊ
सुनहु सुमति मनगति बिसराये ❀ तहँ बशिष्ठ आदिक मुनिआये
कीन्हेनि ता आवाहन नीके ❀ गुरु कृपालु प्रथमहि सबहीके
मख निर्विघ्न हेतु श्रुति रीती ❀ सादर श्रद्धा भक्ति सप्रीती
गुप्तरूप लखि लखि हरषाहीं ❀ जाना मर्म कहूँ कछु नाहीं
पै गुरु तीनिकाल गति ज्ञानी ❀ तिनकीगतिनिजमतिपहिंचानी
सबहिं प्रणाम कीन शिरनाई ❀ रही समाज सकल सकुचाई
बहुरि बशिष्ठहि कीन प्रणामा ❀ सबबिधिपूज्य जानिमतिधामा
सुखद बास दीन्ह्यो सबकाहू ❀ दोउदिशिअमितअनन्दउछाहू
जहँलगि गुरुमुनिसन्तबोलावा ❀ औरु जहां जेहि कहुँसुनिपावा
ते आये सब सहित हुलासा ❀ तिनहिदीन गुरुबास सुपासा

भई भीर बहु सन्तन केरी ❀ बरणि न सकत मन्दमतिमेरी
घाटन बाटन हाटन माहीं ❀ जहँ देखहु तहँ सन्त देखाहीं
आनन्द अवधि अवधप्रतिगेहू ❀ अमित अनन्द भयो सबकेहू
ऋतु बसन्त मधुमास सोहावन ❀ राम जन्मनवमी दिन पावन
दर्शपर्श अरु मज्जन काजू ❀ भई भीर बहु अवध दराजू
बिबिधि देश बासी नरनारी ❀ आये अमित तीर्थ ब्रतधारी
ते सुनि सुनि आवैं गुरुअयना ❀ लखि चरित्र पावैं चितचयना
तिनहुं देहिं गुरु सुन्दर बासू ❀ भोजन भाजन शयन सुपासू
रामजन्मनवमी दिन थोरा ❀ शोर करायदीन चहुँओरा
है प्रभात भण्डार उछाहू ❀ तासु निमन्त्रण है सबकाहू
यथा योग्य नेवता सबपाहीं ❀ गयोपहुँचि बिसर्योकोउनाहीं
सन्तसुजन गुरु बहुरि बोलावा ❀ प्रातकाज सबसबहिं सिखावा
जौन काज गुरु सौंपेहु जाही ❀ करै सो मन बचक्रमकरिताही
सकलसाज साजत निशिबीती ❀ आलस कहुँन बढ़त बरु प्रीती
लखि प्रभात शौचादिक कर्मा ❀ कीन बहुरि मज्जन नितधर्मा
पुनि भण्डार काज सबकोई ❀ करनलगो जाकर जो सोई
सूपकार सब सुमति सुजाना ❀ बिरचन लगे अपर पकवाना
तहँ चरित्र यक अद्भुत भयऊ ❀ मुनि बशिष्ठ देखन तहँगयऊ
जर्जर देह लगुठ करधारी ❀ स्वेतभस्म सुकेश अतिभारी
उठि निज आसन ते चहुँओरा ❀ भ्रमिभ्रमि दीखबिभवनहिंथोरा
लखिलखिबिभवबिभूतिअनूपा ❀ अतिअनन्दनिजमनहिनिरूपा
रघुपति जन रघुपति करभेदू ❀ अजहुँ लखत जग यहबड़खेदू
को रघुनाथसरिस महिमाहीं ❀ अनइच्छितरिधिसिधिजिनकाहीं
नर इव तिनहिं लखत नरमन्दू ❀ मीनन समुझ यथा निधि चन्दू

ताते अस कुछ रचहुँ उपाऊ ❀ प्रगट होइ रघुनाथ प्रभाऊ
अस विचारि बिचरत तहँ गवने ❀ चढ़ो कराह विमल थल जवने
सन्त सुजन विरचत पकवाना ❀ लखिवशिष्ठ मुनि मन हरषाना।
तहँ उर आनि राम रघुराई ❀ प्रभु मुनीश माया प्रगटाई
हरि लीन्ह्यो कराह घृतझारी ❀ जाना कहुँ न कपट बपुधारी
सूपकार औरन कह एहू ❀ जाइ कोठार लाइ घृत देहू
घृत कराह कर गयउ बढ़ाई ❀ गवनहु तुरत विलम्ब बिहाई
सुनतहि जनअति आतुरधाये ❀ जाइ कोठारिहि हाल जनाये
तेहि कोठार बहुभांतिन हेरा ❀ भाजन मिलेउ न कहुँघृतकेरा
सुनहुँ सुजन मैं कारण कहऊँ ❀ घृतअदृश्य मुनिकीन्हेंउतहऊँ
आइजनन कह जानि अकाजू ❀ घृत कोठार नहिं नेकहु आजू
पकसार सुनि गुनि सकुचाने ❀ बहुरि तिनहिंप्रतिबचनबखाने
जाहु तुरत अवधहिं प्रियभ्राता ❀ लावहु घृत नहिंकाजनशाता
ते पुनि गये अवध बिन देरा ❀ मिल्यो न घृतगृहगृहप्रति हेरा
यदपि धरा तउ परै न जानी ❀ असि वशिष्ठ माया प्रगटानी
फिरे सकल इत आइ बतावा ❀ अवधहुसखा नकहुँ घृतपावा
सूपकार सुनि इमि जनबानी ❀ रहेसकुचिसुखद्युतिकुम्हिलानी
नहिं उपाउ एकहु मन आवा ❀ जानि अकाज दुसहदुखपावा
तब गुरु ढिग गवने अकुलाई ❀ जाइ परे चरणन शिरनाई
अभय मांगि पुनि गिरा उचारी ❀ नाथसुनिय कुछ बिनयहमारी
कहि न जातअसअचरजभयऊ ❀ अमितरहा घृत पै घटिगयऊ
हेरि कोठार दीख बहुबारा ❀ घृत न कोठारहिं शोच अपारा
तब अवधहि घृत लेन पठावा ❀ तहउँ नाथ नहिं कहुँ घृतपावा
बड़ अचर्य अवधहु घृतनाहीं ❀ नाथअनत अबकहँजन जाहीं

बिनघृत प्रभुसनकाज नसाना ❀ है अब शेष अपर पकवाना
केहि उपाय अबकीजियकाजू ❀ सो कृपालु शिखदीजियआजू
असकहि बचन परेपुनि चरणा ❀ शोच प्रेम प्रण जाइ न बरणा
जयगोविन्दगुरु सुनिघृतहाला ❀ कीन बिचार मनहिं ततकाला
मैं प्रथमहिं घृत भूरि मँगावा ❀ यह अचर्य इन काह सुनावा
दोउ दृग मूंदि कीन उर ध्याना ❀ चरित मुनीश कीन सबजाना
मुनि बशिष्ठ माया प्रकटाई ❀ घृत कराह कर गयउ बढ़ाई
जो कोठार घृत मिला न काऊ ❀ कीन अदृश्य सोऊ मुनिराऊ
अवघहु जो न मिलाघृत आजू ❀ सोउ मुनीश माया कृत काजू
चहुँदिशि योजन इक पर्यंता ❀ है मुनीश माया कर अन्ता
तहँलगिघृतनामिलीयहिकाला ❀ अस मुनीश माया कर ख्याला
अस बिचारिगुरु नयन उघारा ❀ तब संशय मन भयउ अपारा
जो सत्यहिं मुनीश कृत माया ❀ तौन कीन भल यह मुनि राया
मुनिसमर्थ सब बिधिभगवाना ❀ ज्ञान भवन बिज्ञान निधाना
परहित हेतु निरंतर करहीं ❀ जे पदार्थ लगि जग बपुधरहीं
दया दीठि सहजहिं जिनकेरी ❀ अरिहु करत प्रिय कह श्रुतिटेरी
तिनहिचहियबिगरतलखिकाजू ❀ देहिं सुधारि सकल बिधिसाजू
सो न हेतु मोहिं परत जनाई ❀ जोहिलगि मुनिमाया प्रगटाई
का अपराध लखा मुनि मोरा ❀ जो कृपालु उर भयउ कठोरा
की अपराध अपर परिगयऊ ❀ मुनिहिं क्रोध केहि कारनभयऊ
अस बिचारिपुनिकीन्हेउध्याना ❀ तब यथार्थ कारण मन जाना
लखिभण्डार बिभव मुनिज्ञानी ❀ अतिअनन्दअसिमतिउरआनी
रघुपति जन रघुपति करभेदू ❀ अजहुँ लखत जग यह बड़खेदू
को रघुनाथ सरिस महिमाही ❀ अनइक्षितरिधिसिधिजिनकाही

नर इव तिनहिं लखत नरमन्दू ❀ मीन न समुझ यथा निधिचन्दू
ताते अस कछु रचहुँ उपाऊ ❀ प्रगट होइ रघुनाथ प्रभाऊ
अस विचारि माया प्रगटाई ❀ नहिं कछु क्रोध विवश मुनिराई
मुनि मनवचक्रम चाहत मोरा ❀ विदित प्रताप कीन चहुँओरा
तौ करणीय मोहि सोइ आजू ❀ मुनि प्रसन्न रहै बिगरैनकाजू
सुनिचिन्तितअनमिटसबकाहू ❀ जासु चरण बंद्यो सिय नाहू
मुनि प्रसाद ताते अस करऊ ❀ बिरचि घृतहिं कारज अनुसरऊ
यदपि कोठार धरा घृत अहई ❀ तदपि निदरिमुनिकोजगगहई
आन उपाउ रचहुँ कछु ताते ❀ होइहि सिधि रघुबीर कृपाते
प्रणतपाल प्रण रघुपति केरा ❀ करिहहिं अवशि पूर प्रण मेरा
अमजिय जानि ध्यान ते जागे ❀ बोले वचन सुधारस पागे
हे प्रिय सूपकार मम बानी ❀ सुनहु अमित आनँद उरआनी
जो कोठार अवधहु घृत नाहीं ❀ देखेउ हेरि सकल थलमाहीं
तौअब अनत नकहुँ ढिग जाहू ❀ आजुहि मम भण्डार उछाहू
होत क्षणहि क्षणभरि बिलम्बा ❀ करिहिं काज सरयू जगदम्बा
मैं अस सुनेउ संतश्रुति बानी ❀ जन सुखप्रद सरयू महरानी
जासु बारि मज्जन करतेही ❀ अधमहु अगम परम पद लेही
कामदबारि ब्रह्ममय जासू ❀ पूरिहि मम मनोर्थ ढिग तासू
ताते ता तट बिनहिं बिलम्बा ❀ गवनिय मोहिं मातु अवलम्बा
अस कहि गुरु सरयूतट गयऊ ❀ कर युग जोरि निहोरत भयऊ
जो मैं मन वचक्रम तुव दासू ❀ तौ मम होइ पूर प्रण आसू
सकल काम प्रद बारि तुह्मारा ❀ जो न मृषा कहिश्रुतिनपुकारा
तौ पूरहि मनोर्थ मम आजू ❀ बारिहोइ घृत सुधरहि काजू
असकहिपुनिप्रणामगुरुकीन्हा ❀ घटन भराइ बारिभर लीन्हा

जाइ कराह अशावत भयऊ ❀ भरतहि घृत तुरन्त होइगयऊ
सूपकार सब अति हरषाने ❀ जयगुरु जयगुरु बचन बखाने
सब माहि परे चरण शिरनाई ❀ तत्क्षण अकथ हर्ष अधिकाई
उठि पुनि लगे रचन पकवाना ❀ प्रेम प्रमोद न जात बखाना
बारि भयो घृत यह शुभ शोरा ❀ गयो फैलि पल महँ चहुँओरा
सुनिअचर्य्य लाग्यो सब काहू ❀ मानुष मति गुरु पै उर जाहू
गुरु प्रभाव प्रथमहिं जिनकाहीं ❀ बिदित रह्योनहिंभ्रमतिनकाहीं
तिन सुनि हर्ष हिये अतिमाना ❀ औरनप्रति असबचनबखाना
जासु प्रताप बारिनिधि पानी ❀ शिलउतरानि प्रगट जग जानी
जासुनामबल जल नहिं बोरा ❀ प्रहलादै सुनियत श्रुतिशोरा
तिमि प्रचण्ड पावक नहिं जरेऊ ❀ डस्योअहिन बिष खाय न मरेऊ
तिमिहिं सुधन्वनामकहिजासू ❀ पर्यो कराह कूदि बिनत्रासू
प्रबल प्रचण्ड हुताशन ज्वाला ❀ तप्त कराह तैल बिकराला
देखनहार सकल बिलखाहीं ❀ दूरि डुशत जात ढिग नाहीं
पै न जर्यो तनु रोमहु तासू ❀ राम भरोस सकलबिधि जासू
जासु कृपा पल मीरहु खावा ❀ गरल पै स्वाद अमी कर पावा
जासु कृपा पाण्डव सुठिनारी ❀ भई न नग्न बढ़ी बरु सारी
जासु कृपा भारत भरुही के ❀ बचे अण्ड जानत जग नीके
जासु नाम जड़यवन हरासू ❀ कहतहिगयो अचल हरिधासू
जो चेतनहि करै जड़ आसू ❀ जड़हि करै चैतन्य प्रकासू
जासु प्रताप मूक बाचालू ❀ होइ यथा सहसानन व्यालू
लंघहि पंगु अगम गिरिवरहू ❀ जासु प्रताप न संभ्रम करहू
माषन को मुनि जासु प्रतापू ❀ करै हुताशन आसन तापू
जासु प्रताप अंध दृग नाहीं ❀ सिकता तैल दीपि निशमाहीं

बारि बारि बिन चित्र बनावै ❁ नहिं अचर्य्य अस वेद बतावै
सोइ रघुनाथ संत रखवारा ❁ निज जनप्रण जेहिसदहिसुधारा
सुनिसुनि गयो सबनकर खेदू ❁ नहिं रघुपति रघुपतिजन भेदू
असि दृढ़ता सबके मन आई ❁ तब प्रसन्न मन भे मुनिराई
सुनहु सुमतिमुनि चिंतितयोगू ❁ सो न होइ कस यदपि अयोगू
यहनमुनिहि दुर्गम घृतहरिबो ❁ गुरुहि न अगम बारि घृतकरिबो
दोउ समर्थ सब लायक दोऊ ❁ वै हरि पूज्य प्रगट हरि ओऊ
मौनीदास स्वामि सोउसुनेऊ ❁ सुनिपुनि निजउर अन्तर गुनेऊ
का अचर्य्य जलजौघृतभयऊ ❁ जिनलगिरामनिशसनिशिदयऊ
धरि रघुनाथरूप रघुनाथू ❁ कीन समर सो प्रगट जग गाथू
मैं मन बार अनेक विचारा ❁ महि रघुनाथ संत अवतारा
ऋधिसिधिसकलसुकरतल जासू ❁ जलहि करत घृतप्रभुता न तासू
जिमिगोपालगिरिनखपर धरेऊ ❁ तिनहिंकोकहै किअचरजकरेऊ
हरयो बिरंचि बाल बछराहू ❁ सो चरित्र जान्यो यदुनाहू
रच्यो बाल बछरा तब तेते ❁ रूप रंग गुण प्रकृति समेते
जननी जनकसकल बृजलोगू ❁ लखा न कहुँ हरिरचित संयोगू
सो अचर्य्य जो हरिहिं बखाने ❁ को असजग जड़ बुद्धि अयाने
जिमिअगस्त्यमुनिसिंधुअपारा ❁ धरि गण्डूष पियो बिन बारा
ज्यों मुनि च्यवन हुंकार करेरी ❁ सुरपति भुजथाम्यो बिनदेरी
बाहु नवत नहिं कौनिहु ओरा ❁ सुर समूह हारे करि जोरा
बहुरि सुरन मुनि पतिहिं मनावा ❁ तब सुरेश भुजनिजगतिपावा
यह सिद्धांत सुदृढ़ श्रुति केरो ❁ निजजनप्रण हरिसदाहिनिवेरो
अस गुनि प्रेमविवश चितक्षोभा ❁ रघुनाथहिं देखन मन लोभा
तब तकिगुरुतितहीं चलिगयऊ ❁ जाय कमलपद बन्दत भयऊ

मौनिदास प्रभु तुरत उठावा ❀ प्रेम बिवश निज हृदय लगावा
दोउ दिशि प्रेम प्रतीत उछाहू ❀ जिमि रंकहि सुवर्ण गिरिलाहू
पुनिकह्यो सुनहु तात शुभज्ञानी ❀ तुव प्रताप दुर्गम मन बानी
अनमिट चिंतत सबबिधिअहहू ❀ कछु न अगम जग जो तुम चहहू
कहहु तात तुम निजअभिलाषा ❀ बढ़िहहिअवशिसुयशतरुशाखा
गुरुकह्योसुनहुस्वामि ममबानी ❀ दयादीठि निज जन पर आनी
चलि देखहु भण्डार समाजू ❀ प्रथम सवांचि सकलविधिसाजू
सुयशअयश सबस्वामितुम्हारा ❀ ताते करहु बिशेष सँभारा
सुत कृत हितअनहित जग दोऊ ❀ कहतजनकजननिहि सबकोऊ
ममकृत तिमिहिअखिलअपराधू ❀ होइहि तुमहिं यदपि तुव साधू
मैं मतिमन्द ज्ञान गुण हीना ❀ तुम समर्थ सब भांति प्रवीना
तुम्हरी कृपा बनहिं सब काजू ❀ तदपि सवांचि लेहु प्रभु साजू
जयगोविन्द गुरुकी सुनिबानी ❀ मोनीदास हर्ष हिय आनी
बोले बचन पियूष पछोरे ❀ तात भरोस सकल विधि मोरे
जहँ तुम तहँ न असम्मत होई ❀ अजहु ताततुव गतिमति गोई
तदपि तात सुनि बिभव घनेरा ❀ देखन चाह गहत मन मेरा
अस कहि बहुरि जाय तहँ देखा ❀ साज दराज अमित बिनलेखा
लखतहिं बनत न बनत बखाने ❀ बस्तु बृन्द चहुँदिशि दरशाने
रचना सकल रची सबिबेका ❀ निर्मल सुरस एक ते एका
चहुँदिशिमहिं शुभबारिसिंचाई ❀ मनहुँ आज ऋतुराज अवाई
मौनिदास प्रभु लखि हरषाने ❀ पुनिमम गुरुप्रति बचन बखाने
तात अनूप सजी सब साजू ❀ असिन लखा कबहूं जसि आजू
श्रवण नयन पथ जे नहिं आई ❀ ते रचना तुम तात रचाई
लखन योग नहिं बर्णन योगू ❀ लखि अचर्य जेहि मानत लोगु

तात हरीहर काहु पुकारा ❀ जेहि पंक्ति होइ जेवनारा
जे न पंक्ति महँ भोजन पावैं ❀ तिनहिं देहु निज अयन बनावैं
जासु मनोरथ होइ जेहिरीती ❀ ताहि तथा मानिय सह प्रीती
तात न रहै बिमुख कोउ आजू ❀ अस बिचारिकरि कीजियकाजू
श्रीनिवास इमि शीष सिखावा ❀ सुनि गुरुनाथ चरण शिरनावा
पुनि उर आनि राम रघुराई ❀ सादर बंदि संत समुदाई
संत सुजन बहुतेक बुलावा ❀ जयगोबिन्दगुरुतिनहिंसिखावा
सहित बिनय तिनके ढिग जाई ❀ अस मृदु बचनदेहु गोहराई
जे जन पंक्ति न भोजन पावैं ❀ प्रथमहिंते कोठार ढिग आवैं
लेहिं सवाँचि बस्तु भोजन की ❀ जासिअभिलाषहोइ जेहिजनकी
जे जन पंक्ति अशन नित पावैं ❀ ते सब पंक्ति सदन चलिआवैं
मैं दासानुदास सब केरो ❀ करैं अशन पुरवैं प्रण मेरो
तिन असि सुनि रजाय गुरु केरी ❀ दीन जनाय सबहिं बिनदेरी
आश्रम आश्रम प्रति गोहरावा ❀ खोरि खोरि गृहगृहप्रतिगावा
अवध चतुर्दिशि जहँ रहजोई ❀ चतुर बर्ण चतुराश्रम कोई
तीर्थ पथिक बासिनहुँ अनेका ❀ तिनहिं आदि दै जोजनएका
सबहि जनाय बहुरि जन आये ❀ गुरुहिं बन्दि सब हाल बताये
सुनहु सुमति मैं कहँलगि कहऊँ ❀ बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊँ
झुण्ड झुण्ड नर नारिन केरे ❀ भरे कोठार द्वार बहुतेरे
भोजन बस्तु यथा रुचि जासू ❀ देहिं सप्रेम तथा धरि तासू
दश कहँ देहिं बीस पुनि ठाढ़े ❀ बीसहिं देहिं द्विगुन पुनिबाढ़े
तिनहिं देहिं जबतक सबसाजा ❀ तब तक सहस खड़े दरवाजा
सहसहिदेहिं सहस युगआवत ❀ देत न संत सुजन दम पावत
सुनहुँ सुमति कोठार गति ऐसी ❀ सुनौउतपंक्ति सदन गतिजैसी

संत तजो धन बृन्द अनेका ❀ योग प्रवीण एकते एका
कर मुख पद पखारि शुभवारी ❀ बैठत पंक्ति भीर अति भारी
संत सुजन परुसत पकवाना ❀ बिबिधि भांति जोप्रथमबखाना
संत सराहि करत जेवनारा ❀ जौनअशन जेहिलगतपियारा
शुचि पकवान प्रकार अनेका ❀ स्वादुल सुरस एकते एका
कहिंकिमिदं किमिदं दिखरावैं ❀ जानि न भेद कोऊ कुछपावैं
स्वादु अनूप जानि सब खाहीं ❀ नाम भेद गति जानत नाहीं
कहहिं परस्पर मंजुल बैना ❀ आनँद उर समानि अति है ना
जे रचना दृग श्रुति नहिं आई ❀ ते रघुनाथ स्वामि रचवाई
को अस दीनबंधु जन त्राता ❀ संतकमल रवि आनँद दाता
को अस धीर धर्म्म धुरधारी ❀ दयासदन दारुण दुखहारी
काहि बिवेक बिमल अस बोधू ❀ नहिं मद काम न लोभ न क्रोधू
मत्सर मोह रहित मतिमाना ❀ को रघुनाथ स्वामि बिनआना
को अससिद्धिसदन ऋधिखानी ❀ महिमा जासु भुवन प्रगटानी
सुनहु सखा जल इनहिं भरावा ❀ सोघृत भयउ भुवन यश छावा
सोकिर्तीक कारन इन काहीं ❀ अनइच्छितरिधिसिधिजिनकाहीं
इमि बतरात खात पकवाना ❀ प्रेम प्रमोद न जात बखाना
सुनहुँसुजन इमिकरि जेवनारा ❀ अचवन करि जयशब्द पुकारा
बहुरिगये सबनिजनिज अयना ❀ अशन स्वादुमरहतचितचयना
पंक्ति सदन गुरु बहुरि सोधावा ❀ संत समाज बहुरि बैठावा
शुचि पकवान प्रकार अनेका ❀ परसि सुस्वादु एकते एका
प्रेम प्रीति युत सबहिं जेवाई ❀ भूमि सोधि पुनि पंक्ति कराई
ताहि जेवइ बहुरि बैठावा ❀ तिनहुँ जेवाइ सुथल सोधवावा
पुनि बैठाइ पंक्ति समुदाई ❀ ताहि जेवाइ भूमि सोधवाई

यहि विधि पंक्ति भई बहुबारा ❀ जब प्रमाण को वर्णनिहारा
जब अवशेष रहा कोउ नाहीं ❀ तब कोतवाल कहा गुरु पाहीं
नाथ यथेष्ठ अशन सब काहू ❀ लहा कोठार पंक्ति परसाहू
जयगोविन्द गुरु बोलेउ बैना ❀ सुनहु तात कोउ विमुख बचैना
लै सँग सन्त सुजन बहुतेका ❀ सब थल जाय जाय सविवेका
देहु विविधि पकवान मिठाई ❀ सबहिंपूँछि किनकिननहिंखाई
इमि कोतवाल रजाय सु पावा ❀ संत सुजन बहुतेक बोलावा
तिनहिंलेवाइ विविधिपकवाना ❀ गुरुपद बंदि चलेउ सुधिवाना
आश्रम आश्रम प्रति गोहरावा ❀ खोरि खोरि गृह गृह प्रति गावा
लेहु लेहु रव चारिहु ओरा ❀ रहेउ छाइ आनँद नहिं थोरा
सबहिं प्रतोपि सकल थलमाहीं ❀ आइ बहोरि कहेउ गुरु पाहीं
प्रभु अवशेष रहा कोउ नाहीं ❀ भ्रमिभूमिदीख सकलथलमाहीं
चतुर वर्ण चतुराश्रम दोऊ ❀ इनहुते अन्य रहा जो कोऊ
सब लहि सब परिपूरण अहई ❀ विनयहुनाथ न अब कछुवहई
आसन वासन बसनरुपाना ❀ सब दै नाथ सबहिं सनमाना
सब प्रसन्न राउर यश गावैं ❀ मन बच कर्म धर्म सुखपावैं
प्रभु आयसु अब काह तुम्हारा ❀ जो हम करैं कर्म बिन वारा
इमिकोतवालबचन सुनि काना ❀ तेहि सराहि गुरु बचन बखाना
नीति निपुन सब कारज ज्ञाता ❀ समय विज्ञ सबकहँ सुखदाता
सबविधिसुजन अहहुतुमताता ❀ मैं निदान जानत यह बाता
तुह्मरेहि शील बनेउ सब काजू ❀ तुमसमान तुमहीं जग आजू
इमि सराहि तेहि लै पुनि संगा ❀ गयउ स्वगुरुढिग कहेउप्रसंगा
तुम्हरी कृपा सुधरि सब काजू ❀ गयउ यदपि भई भीर दराजू
कहि प्रसङ्ग सब आयसु पाई ❀ निजथऌ आइ मेटि दुचिताई

कोतवालहि गुरु बचन उचारा ❀ सुनहु तात प्रिय बचन हमारा
जाहु तुरत लै बिबिधि मिठाई ❀ गुरु कृपाल कहँ देहु जेवाई
बहुरि तुमहु लै सन्त समाजा ❀ जे अरुझे रहे पारसि काजा
सूपकार अधिकारि कोठारी ❀ भण्डारी आदिक अधिकारी
तिन युत जाय करहु जेवनारा ❀ जौनअशन जेहिलगतपियारा
इमि रजाय पावत गुरुकेरी ❀ गा कोतवाल हाल बिन देरी
लै अनूप पक्वान मिठाई ❀ मौनिदास प्रभु के ढिगजाई
बिनयसहिततेहितिनहिंजेंवावा ❀ आयसु पाय बहुरि चलिआवा
पुनिअति रुचिरपरुसिपक्वाना ❀ खायेउ मिलि सब संतसुजाना
बहुरि सँभारि बस्तु समुदाई ❀ कीन्हेउ शयन सबहिंसुखपाई
सुनहुसुजनएहिबिधिदिनचारी ❀ रही भीर अनुपम अतिभारी
कोउदशदिवस कोऊदिनबीसा ❀ कोउ पचीसरह कोउदिनतीसा
श्रीमुख कहुँ न कहा गुरुजाहू ❀ नित नूतन बरु बढ़त उछाहू
निजअभिलाष चलन जबजासू ❀ तब सोजाइ गुरुढिग सहुलासू
स्वामिबिदा कीजियमोहिंआजू ❀ तदपि करैं गुरु आदर साजू
जब न गहैं गुरु बर्णित बानी ❀ निपटहिं गवनहर्ष अधिकानी
तब करैं ताहि बिदा सनमाना ❀ दै बहु अशन बसन धनयाना
होय जासु मन जसिअभिलाषा ❀ ताहि देहिं तौनहिं बिन भाषा
यहि बिधि बिदा भये सब लोगा ❀ मुनि बिदाइ नहिं बर्णन योगा
जोसतकार मुनिहिं गुरु कीन्हा ❀ गमनसमय पुनिजोकछुदीन्हा
सो मोसन कहिजात न कैसे ❀ शाकबणिक मणिगुणगणजैसे
दोउ जन नेह नहे दुहुँ ओरा ❀ दोउ दिशि प्रेमप्रमोद न थोरा
माया तीत दोउ निरमोहा ❀ तदपि भयेउ दुहुँ उरअतिछोहा
दोउदुहुननिज निज उर लावत ❀ दोउ दुहुँ सुयश परस्पर गावत

दोउ ललिविम्ब मिलनहुँकैसे ❀ चित्रकूट दोउ राघव जैसे
अंत चकित कहुँ मुनिहिं न जाना ❀ सुरहुन कछु प्रतिप्रगट बखाना
गुरु पद बंदि कहेउ रघुपारा ❀ क्षमेहु नाथ अपराध हमारा
तब गुरुचरित भविष्य बखानी ❀ धरि धीरज गवने मुनिज्ञानी

दो॰ यह घृत चरित बिस्तारसे कहा रामपदद्दास ।
कछुक राम बाबहु कहा ग्रंथ रचनकी आस ॥
ताते नाम सरूबाद में राम बाबही केर ।
यद्यपि रामपदद्दासने बरण्यो चरितघनेर ॥

छंद मनहरण ॥

साज औ समाज अवलोकि कै दराज अति आयो मुनि-
राज उर आनँद न थोराहै । होइ क्यों प्रताप रघुनाथ को प्रगट जग
यों बिचारि कीन्ह्यो घृत अलख अथोरा है ॥ सुनि घृत हाल तत-
काल गुरुध्यान धर्यो जानि मुनि ख्याल जाय सरयू निहोरा
है । जै गोविन्द नीर रघुवीर की कृपा ते घृत हैगयो तुरंत
शोर छायो चहुँओरा है ॥

इति श्रीमद्रामचन्द्र चरणद्वन्द्वारविन्दमकरन्दगलिन्दानन्द
तुन्दिल जयगोविन्द बुध विरचिते रघुनाथ
विनोदे पंचमस्समुल्लासः ॥ ५ ॥

अथेन्द्रवज्रापद्यम् ॥

नैषादरूपं प्रविधायसत्यं कर्त्तुंगिरंस्वामनधाति थिभ्यः। उत्पादयित्वासुफलान्यदादै तंयोगभानुं गुरुमानतोहम् ॥ १ ॥

सो० कहि घृत चरितअनूप बहुरिरामस्वामीकह्यो।
सतगुरु सुभग स्वरूप सबप्रकाररघुनाथप्रभु ॥

दो० लेउजाइ उपदेश तुम मम उपदेश इतीक।
पुनिबरण्योनिजगुरु चरित ग्रंथरीतिमतठीक ॥

इमि रजाय लहि मैं पदबंदा ❀ चल्योंभवन सुमिरत रघुनन्दा
बिन्दादास साधु मगमाहीं ❀ मिले मोहिं पूंछेउँ तिनपाहीं
सुनहु स्वामि सतगुरुयहिकाला ❀ अहहिं स्वामिरघुनाथकृपाला
अस मोहिं रामा स्वामि बतावा ❀ बहुरि बारि घृतचरितसुनावा
अबहुँ श्रवणलागि उर अतिचाऊ ❀ बरणहु प्रभु रघुनाथ प्रभाऊ
जो कुछ बिदितहोय तुमकाहीं ❀ सो करि कृपा कहहुमोहिपाहीं
अस मैं प्रश्न कीन तेहि काला ❀ बोले बिन्दादास दयाला

सो० सुनहुसुमतिचितलायगुरुकृतचरितअनूपअति
सुनतहिकलुषनशाय बहुरिमिलहि सुंदरसुगति

दो० संत समाजदराज एक एक समयगुरुऐन।
आई पाईं खबरि गुरु टिकवाई करि चैन ॥

बहुरितिनाहिंप्रतिगुरु अस भाषा ❀ कहहुकृपाकरि निजअभिलाषा
काह अशनकरिहौ तुम आजू ❀ सो द्रुतमिले तुम्हहि सबसाजू

तब सब संत सुजन अस बोले ❀ सहजहिं उर अन्तरगति खोले
कहहु स्वामि समरथ भगवाना ❀ सो प्रताप जग प्रगटदेखाना
सो पदार्थ तुमको प्रभु सुगमा ❀ जो बिरंचि बिरचा नहिं जगमा
तौ प्रभु तुमहिं काहयह काजू ❀ देवो अशन यथा रुचि आजू
अशन अर्थ मन अस अहलादू ❀ खरबूजा रुचि नीवर स्वादू
तौ प्रभु हमहिं देहु हठि आजू ❀ तौ पूरहि मनवांछित काजू
सुनतहि संत गिरा असिकाना ❀ जयगोबिन्दगुरु अचरजमाना
कहँ हिमंत ऋतु मारग मासा ❀ कहँ यह संत अशनकी आशा
गुरुकह्यो सुनहु सुजनसबअहहू ❀ काह बिचारि बचन अस कहहू
जो गृह ग्राम देश कहुँ होई ❀ सोइ पदार्थ मांगत सब कोई
यांचन तौन कोऊ कहु पाहीं ❀ जो पदार्थ त्रिभुवन कहुँ नाहीं
तातें करहु कृपा निज जानी ❀ मांगहु बहुरि बोलि मृदुबानी
सन्त कृपा सागर सब भांती ❀ महिमा अकथन कछुकहिजाती
तातें करहु पूर प्रण मोरा ❀ मांगहु सोहिं सुलभ सोउथोरा
जयगोबिन्द गुरुकी हसिबानी ❀ सुनतहिं संतसभा मुसक्यानी
नाथ जो बस्तु गेह अरु ग्रामा ❀ देश द्वीप कतहू बसु धामा
दाता तासु सकल जगमाहीं ❀ यांचबसो न योग्य तुम पाहीं
तुम जो देहु दीजिय प्रभुसोई ❀ आन बस्तु यांचब नहिं कोई
असिपुनिसन्तगिरासुनिकाना ❀ गुरुकृपाल चितअतिसकुचाना
का करणीय मोहि यहिकाला ❀ जाते होइ कार्य्य ततकाला
पूंछि यथारुचि भोजनजाहीं ❀ देइ न होइ महाअघ ताही
मृषाबचनबादी कह लोगू ❀ आनन तासु न पेखन योगू
सत्यहि हेतु नृपति हरिचन्दू ❀ स्वपचकर्म कीन्हेउ अतिमन्दू
सत्यहि हेतु बलिहु बसुधाहू ❀ दीन सहा दुख दारुण दाहू

सत्यहि हित दशरथ सहित्रासू ❀ रामहिं दीन दुसह बनवासू
चक्रवर्त्ति दशरथ नरनाहू ❀ कत अन्यथा सहति दुखदाहू
वृश्चिक व्याघ्र वृकाहि कठोरा ❀ दया हीन दुर्जन अतिघोरा
रामहिलखत तिनहुँ अतिप्रीती ❀ को कहै आन जीव जन रीती
तासुबिरह दुख जेहिहित सहेऊ ❀ तनहु तज्यो सुरपुरपथ गहेऊ
यदि असत्यबादिहु बनि कोऊ ❀ रामहिं लहै सुगम तेहि सोऊ
रामसंग सम्भव सुकृतागी ❀ जरतमृषा जनिताघ अभागी
तदपि न जेहिसत्यहि हितलागी ❀ रामसनेह नृपति मतिपागी
सोइ असत्य जनिताघ कलंका ❀ लागिहिंमोहिंअवसिबिनशंका
मैं न बिचार प्रथम कछु कीन्हा ❀ काहअशन करिहहु कहिदीन्हा
संतकहत हठि दीजिय सोई ❀ आन अशन यांचव नहिं कोई
अब केहि भांति धर्म निरबाहू ❀ होइ मिटै दुख दारुण दाहू
संत सभा गुरु बहुरि निहोरा ❀ है दयालु राखहु प्रणमोरा
मैं जो कहा अनशोचित बानी ❀ ताहि क्षमहु नहिं कारज हानी
मांगहु अशन यथारुचि सोई ❀ जो यहिकाल देशयहि होई
कतहुँ होइ तउ मांगन योगू ❀ सो न चहहु जो निपट अयोगू
जयगोविन्द गुरुके सुनिबैना ❀ बोले संत सुजन चितचैना
नाथ न कहत तुमहिं अससोहै ❀ दुर्लभ बस्तु तुमहिं जग कोहै
ऋधिसिधिसकल सुकरतलजासू ❀ दुर्लभ काह देत जगतासू
नाथ अतिथि हम राउरि आजू ❀ तदपि न सरै मनोरथ काजू
मन बच कर्म पर्म प्रण एहू ❀ खरभूजा रुचिनी प्रभुदेहू
नाहित परै चहै उपवासा ❀ नहिंउर आन अशनकी आसा
असकहि संत रहे चुपसाधी ❀ गुरु कृपाल चित दीन समाधी
औरहु जन कहितिन समभावैं ❀ वै न कछू उर अंतर लावैं

सुनहु सुजनगुरु स्वामिसमर्था ❀ धरि समाधि साध्योनिजअर्था
बहुरि खोलि दृगहरिहिं निहोरा ❀ रचि कवित्तसोइ लिखउनमोरा

क० रघुनाथ तजिकै तिहारो राम नाम मेरो चंचल चपल चित चल पल पल है। ताहू पर निपट मलीन मन जानि मेरो भयो आनि सहित सहाय कलिमल है॥ सुनिकै कृपाल कहे देत हौं पुकारि हाल चहौ जौन करौ अब मेरो कौन बल है। होयगी हँसाय हाय बाना कै बनाय तासों बिरद सँभारो राम आपनो जो भल है॥ १॥

योग प्रभाव प्रगट दिखरावा ❀ तुरतहि एक पुरुष कोउ आवा
गुरुहि कीन साष्टांग प्रणामा ❀ बोला मधुर बचन मतिधामा
नाथअभय निजजन कहँदीजै ❀ दीनबन्धु बिनती सुनि लीजै
मैं मतिमन्द महा खल अहऊं ❀ अधमजाति अधमन संगरहऊं
स्वामिसमर्थ प्रणत सुखदायक ❀ जन अपराध निवारण लायक
नाथ रजाय देहु जनजानी ❀ तौ पुनि कहउंप्रगट निजबानी
असि सुठिशोरश्रवणसुनि तासू ❀ गुरु कृपालुदृग खोलेउ आसू
अति बिनीत शिरकरयुग जोरे ❀ दीन बदन चितवन तृणतोरे
नवनि प्रीति बिनवनि लखितासू ❀ उपजेउ गुरु उर अमितहुलासू
पूछेउं बिहँसि बहुरि गुरु तासू ❀ जाति नाम बांछित सबिलासू
सुनिगुरुबचनबिहँसिसोउबोला ❀ बिनयसहित मृदुबचन अमोला
मैंतो निषाद जाति सोइ नामा ❀ नाविक कर्म सबहि बिधि धामा
पै मन बचन कर्म प्रण मोरे ❀ प्रभु तुव चरण न भूलत भोरे
जेहि प्रसाद सब दिनभलमोरा ❀ सुनहु नाथ अब बांछित शोरा
यक दिन मुनि राउर पदकंजू ❀ कीन्हेउ चरित अबट मनरंजू
सरयू कूल सुथल सुबिचारी ❀ रच्यौ नाथ कमनीय किवारी

तहँ खरबूज बीज बै दीन्हा ❀ ऋतुअनऋतुबिचारनहिंकीन्हा
फरे सुफल प्रभुअमित नजाने ❀ लखतहिं बनत न बनत बखाने
पाकिपाकि फल तूरि अनेका ❀ स्वादुल सुरस एकते एका
नाथ नाव भरि लायउ सोई ❀ सरयू निकट खड़ी सो होई
प्रभु रजाय राउरि जो पावौं ❀ तौ कोठार अब जाइ धरावौं
प्रथमै यह प्रण कीन हठैहौं ❀ प्रथम जनित फल प्रभुहिं पठैहौं
मैं दासानुदास प्रभु तेरो ❀ लै फल पूर करहु प्रण मेरो
भक्ति बिनयप्रणप्रीति अनूपा ❀ पेखि तासु तिमि शील स्वरूपा
भक्तबत्सल गुरु बचनउचारे ❀ सुनु निषाद कुछु बचन हमारे
कृपापात्र तुम रघुपति केरे ❀ तुवगुणगण जग बिदित घनेरे
धन्य स्वभाव शील तन तोरा ❀ जाहिबिलोकि मुदित मनमोरा
लायेहुफलसोअतिहिभलआजू ❀ खइहहिंसन्त बनिहिमम काजू
जाहु उतारि कोठार धरावौ ❀ बहुरितुरत चलिममढिगआवौ
सुनि निषाद नृपहिय हरषाना ❀ गुरु बन्दि झट गयउ सुजाना
फल उतराइ कोठार धरावा ❀ बहुरितुरत गुरुढिगचलिआवा
दोउ करजोरि गुरुहि शिरनावा ❀ सहित बिनयवर बचन सुनावा
नाथ रजाय देहु जनकाहीं ❀ फलथल कोउ रक्षक जननाहीं
ताते स्वामि अवसि अब जैहौं ❀ कबहुँ बहुरि दरशन लगिऐहौं
सुनिगुरु ताहि बिदातबकीन्हा ❀ बिदासमय धनबहुबिधि दीन्हा
लै तेहि त्राहि त्राहि रव भाषी ❀ शीस धरणि धरि पद उर राषी
गयउ सानुचर चढ़ि चढ़ि तरणी ❀ अबसुनो संत अशनकी करणी
गुरुप्रेरित गुरु अनुग सुजाना ❀ फलजलसोकरिबिमलनिदाना
अमलअखिलफलदलबहुकीन्हा ❀ तब गुरु बोलि संतजन लीन्हा
प्रेमप्रीति युत पंक्ति कराई ❀ फल दल चारुचिनी परसाई

साधु करनलागे जेवनारा ❀ जेवतहीं मन सबन विचारा
बड़ अचर्य फल बयउ निपाडू ❀ अनऋतु तदपि अनूपम स्वादू
कहहिं परस्पर मंजुल वचना ❀ आजु अभूत भई यह रचना
होइ सकल फल निज ऋतु पाई ❀ अनऋतु नहिं करौ कोटिउपाई
अवसि स्वामि रघुनाथ समर्था ❀ रचि प्रपंच साध्यो निजअर्था
इमि बतरात खात फल सोई ❀ अतिचित्रितचकित साधुसबकोई
करि जेवनार बहुरि शुचि भयऊ ❀ जयगोविन्द गुरुके ढिगगयऊ
सब महिपरे चरण शिरनाई ❀ प्रेम विवश तन दशाभुलाई
सुनहु सुजन तेहि सन्तसमामा ❀ एक संत रघुनन्दन नामा
तेहि गुरु प्रति अस बचन उचारा ❀ क्षमहु नाथ अपराध हमारा
मैं हठ कीन प्रथम जेहि लागी। ❀ सुनहुसो अर्थ प्रणतअनुरागी
मम निवास बदरीबन धामा ❀ तहँनिवसहुँ रघुनन्दन नामा
नाथ राम नवमी दिन मोरा ❀ पर्य्योश्रवणसुनितहँ यह शोरा
अवध स्वामि रघुनाथकृपाला ❀ कीन चरित अतिअगमविशाला
सरयू वारि कराह भरावा ❀ सोघृत भयउ भुवन यश छावा
तबते स्वामी यश अभिलाषा ❀ बढ़ीबढ़ै जिमि शशि सितपाषा
एकहि पाइ पूर्ण विधु जैसे ❀ मम अभिलाष पूर्ण अब तैसे
प्रभुउत सुयशसुन्योजसकाना ❀ तासु अधिक कछुइतहि देखाना
देखि विभव विभूति प्रभु तोरी ❀ अति अनन्द हुलसी मति मोरी
मैं जब लगि भाषौं प्रभु तोहीं ❀ तबताकि तुमहिं कहेउ प्रभुमोहीं
काहअशन करिहौ तुम आजू ❀ सो द्रुत मिलै तुमहिं सब साजू
मैं बिचार कीन्हौ मनमाहीं ❀ का यहि काल बस्तु जग नाहीं
मागौं सोइ प्रभु पै हठ ठानी ❀ अस बिचारि मांगेउ कछुबानी
बार तीन लगि मैं कह एहू ❀ खरभूजा कचनी प्रभु देहू

न तरु परै बरु चहै उपवासा ❀ नहिंउर आनअशन की आसा
यदपि कहा मैं बचन कठोरा ❀ तदपि नाथ पूरेहु प्रणमोरा
रचि प्रपंच प्रभु बनेउ निषाहू ❀ दीन्हेउ फलसोइबिनय बिषाहू
अहहु स्वामि प्रण पालनकारी ❀ सेवक सुखद सकल दुखहारी
भक्त बत्सल बर बिरद तुम्हारा ❀ आजु भयउ प्रभु निपट उधारा
जेफलजेहिऋतु बिधि न बनाये ❀ ते फल तुम प्रभु हमहिं खवाये
नाथ तुमहिं यहअचरज नाहीं ❀अनइक्षितऋधिसिधिजिनकाहीं
कौशिक सृष्टि अपर रचिडारी ❀ सो बिरंचि करि बिनय निवारी
भरद्वाज मुनि के थल माहीं ❀ ऋधिसिधिप्रगट भई क्षण माहीं
सहित सेन चतुरंग अपारा ❀ जब भरतहिं मुनीश सतकारा
तरुतजिसबऋतु अनऋतुभाऊ ❀ भये सफल मुनियोग प्रभाऊ
जेहिलगिजासिमुनिकीअभिलाषा ❀ सोतसभयउकबिनअसभाषा
जब जमदग्नि नृपहिं सत्कारा ❀ जासु रहे भुज एक हजारा
तबहुँसकलऋधिसिधि प्रगटानी ❀ कथा बिशदबिभुब्यासबखानी
गौतम बीज बवै नित भोरा ❀ दुपहर पकै बिदित श्रुत सोरा
लीनि कृष्ण परिख बिधिनाहू ❀ हर्यो आनि बालक बछराहू
कृष्ण सच्चिदानंद ज्ञानघन ❀ रचे बाल बछरा ते तेहि छन
नारद ज्ञान निधान सुजाना ❀ तिनहुँस्वामिनिजमनअनुमाना
षोड़श सहस प्रिया हरिकेरे ❀ पृथक पृथक रनिवास घनेरे
तिन संग रमत कथं हरि एका ❀ गयो लखन भयो मन्द बिवेका
धाम धाम प्रति श्याम स्वरूपा ❀ हरि कर लखेउ मुनीश अनूपा
गुनिअचर्यमुनि मनअनुमाना ❀ हरि मायेश प्रबल भगवाना
जग सृष्टक रक्षक क्षयकारी ❀ तासु इती प्रभुता नहिंभारी
निंदिमतिहिनिजहरिढिगगयऊ ❀ निजअघ क्षमाकरावत भयऊ

प्रभु प्रताप पारिधि में चाहा ❀ जिमिपिपील चह सागरथाहा
क्षमहु स्वामि अब मम अपराधू ❀ तुम समर्थ सब भांति अगाधू
जे सुनि श्रवणि गोविन्द प्रतापू ❀ नाम मधुरध्वनि करत अलापू
जिमि विरंचि नारद अपराधू ❀ क्षमेहु कृपाल गोपालअगाधू
तिमि अपराध क्षमहु प्रभुमोरा ❀ मैं मन बचन कर्म जन तोरा
अस कहिसहितसभा करजोरा ❀ धन्यस्वामि त्रिभुवन यशतोरा
जलहिअग्निअगिनिहिकरैवारी ❀ अकथनीयगतिस्वामितुह्मारी
माया रहित अहहु निरमोहा ❀न मद न काम न लोभ न कोहा
देखहु निज स्वरूप जगन्यारा ❀ सगुण अगुणजोश्रुतिनपुकारा
परहित लागि धरेउ नर रूपा ❀ अनुभव सहज अखंड स्वरूपा
इमिकरि विनय अनेक प्रकारा ❀ विदा हेतु पुनि वचन उचारा
गुरु कृपालु आदर सनमाना ❀ दै बहु अशन बसन धन याना
विदा कीन सब संत समाजा ❀ सबहि पूरि मनवांछितकाजा
संत सकल परि पूरित कामा ❀ गुरुहिं बंदि करि दण्ड प्रणामा
जाहिजाहि कहिगे पुनि तहवाँ ❀ उमादत्त प्रभु को थल जहवाँ

कबित्व मनहरण ॥

पूछ्यो गुरु बोले संत जानिकै हिमंत हम चाहत कृपालु खरभूज चिनी चाख्यो है। जानिकैअभाव खरभूजन को नायो शिर संतन न मान्यो दीन बैन बहु भाष्यो है ॥ मानौ अब आनौ दया दीन है निहोरौं नाथ थाहू अपराध साधुकाहू पै न माष्यो है। जै गोबिन्द बनिकै निषाद निज काज करयो ध्याइ रघुराजको विरद लाजराख्यो है ॥

इति श्रीमद्रामचन्द्र चरणद्वन्द्वारविन्दमकरन्दमलिन्दानन्द
तुन्दिल जयगोविन्द बुध विरचिते रघुनाथ
विनोदे षष्ठमस्समुल्लासः ॥ ६ ॥

अथेन्द्रवज्रापद्यम ॥

गुरुन्नमस्ये रघुनाथमिष्टं हृगुत्सवंदिव्यहृशंदया द्रम् । घनासितंयानगमस्वरस्थं नगेन्द्रजादत्तसमं समैक्षत ॥

सो० रघुपतिपदरतिदानिसुनहुसुमतिमतिसुगतिप्रद
जोमैंकरौं बखानि लालदास बर्णित चरित ॥

दो० उमादत्तप्रभुकोसुथल अवधहिंअतिहिंअनूप ।
सोइसमाजगवनीतहां बरणौं मति अनुरूप ॥

उमादत्त प्रभु लखि हरषाने ❀ सादर संत सकल सनमाने
मैं मतिमन्द कहौं किमिगाई ❀ उमादत्त प्रभु की प्रभुताई
संयम नियम बिचार अचारा ❀ जपतप ध्यान विराग अगारा
त्रिकालज्ञ त्रयताप निकन्दन ❀ मन बच कर्म रटनि रघुनन्दन
शास्त्र निपुन अद्वैत सुपण्डित ❀ सब प्रकार सबगुणगणमण्डित
तिनप्रति संत सुजनअस बोले ❀ बचनमधुर मनु अमृत निचोले
सुनहु स्वामि यकअघट चरित्रा ❀ प्रभु रघुनाथ कीनअति चित्रा
हमहिं टिकाय कहे अस बैना ❀ सहित प्रेम चित चौगुन चैना
काह अशन करिहौतुम आजू ❀ सो द्रुत मिलै तुमहिं सबसाजू
हमकह प्रभुमनअसिअहलादू ❀ खरबूजा रुचनी बरस्वादू
बार तीनि तिन हमहिंनिहोरा ❀ माँगहु मोहिं सुलभसोउ थोरा
हमकह देहु स्वामि अबसोई ❀ आन बस्तु यांचब नहिंकोई
हमहिं परै बरु चहै उपबासा ❀ नहिंउर आन अशनकीआसा
प्रभुता लखन हेतु मन आनी ❀ प्रभु हम बार बार हठठानी
गुनि हिमंतऋतु मारग मासा ❀ नहिं तहँ तौ न फलनकी बासा

सुनहु स्वामि तब कीन्हेउ ध्याना ❀ तुरत स्वामि रघुनाथ सुजाना
करतहि ध्यान पुरुष यक आवा ❀ जाति निषाद नाम सोहगावा
प्रेम प्रीति बिनवनि तेहि केरी ❀ नाथ अकथ नहिं आसि कहुँ हेरी
फल खरबूज नाव भरि नीके ❀ लावा मधुर महा नहिं फीके
तब रघुनाथहु दै धन भूरी ❀ कीन बिदाइ तासु प्रण पूरी
सादर पंक्ति बहुरि बैठाई ❀ खरबूजा रुचिनी परसाई
सबहिं खवाइ सप्रेम सप्रीती ❀ बिदा कीन जस कछु प्रभु रीती
नाथ अचर्ज्य लगत हमकाहीं ❀ ऋतु खरबूज फलन की नाहीं
होत सकल फल निज ऋतुपाई ❀ अनऋतु नहिं करौ कोटि उपाई
नाथ सो सत्यहि आइ निषादू ❀ फल बोयासि सत्यहि न बिषादू
यह महान भ्रम हरहु हमारा ❀ नाथ अहहु तुम ज्ञान अगारा
सुनि अति संत वचन भ्रमसाने ❀ उमादत्त प्रभु हियहरषाने
दोउ दृग मूँदि कीन उरध्याना ❀ जानि यथार्थ प्रगट कै बखाना
भुवि रघुनाथ संत अवतारा ❀ यह यथार्थ नहिं अन्न बिचारा
सो प्रपंच रचि कीन चरित्रा ❀ यह नउ नहिं अचरज नहिं चित्रा
बनि निषाद फल प्रगटि अपूरा ❀ तुमहिं खवाइ बचन प्रणपूरा
संत तपोधन योग प्रवीना ❀ तिनहिं को कहै कि अचरज कीना
संतभाव भगवंत समाना ❀ वेदनहूं नहिं भेद बखाना
जो न सकै करि हरि मनबचक्रम ❀ सो बिरचैं सुसंत जन बिनश्रम
पुनि रघुनाथदास तौ अहई ❀ भुवि संतावतार बुध कहई
तिनहिं करत अचरज नहिं कोई ❀ जो मन गुनै होइ हठि सोई
सुनि प्रभु उमादत्त के बैना ❀ सन्तन लहा अमित चित चैना
सुनहु सुजन तेहि सन्तसभामा ❀ एक सन्त रघुनन्दन नामा
सो प्रभु उमादत्त प्रति बोला ❀ सबिनय मंजुल बचन अमोला

सुनहु स्वामि बिनती यकमोरी ❀ मैं शिरनाइ कहौं करजोरी
और अपूर्ब चरित इनकेरा ❀ कहउ स्वामि अस बांछितमेरा
तुम सर्बज्ञ शील बुधज्ञाता ❀ अहहु स्वामि जन बांछितदाता
यहिप्रकार बहुबार निहोरा ❀ चरित श्रवण लगि प्रेम न थोरा
तब प्रभु उमादत्त कहबानी ❀ सुनहुँ सुमति रघुनन्दन ज्ञानी
एक समय सरयू बरतीरा ❀ मज्जन काज भई बहु भीरा
हमहुँ गयन मज्जन हितलागी ❀ आये रघुनाथहु बड़भागी
पर्योअचानक मोहिंअसजानी ❀ होत अकाश कोलाहल बानी
तबताकि उनहुँ गगन तन हेरा ❀ जय घनश्याम बचन असटेरा
तब मैं कह हे भवार्णव सेतू ❀ जय घनश्याम कह्यो केहिहेतू
कह्यो तो अब कहो कारण तासू ❀ जेहि सुनि मिटै अकारण त्रासू
तब रघुनाथ कहा मृदुबानी ❀ सहजहिंकहेउ न कारण आनी
तब मैं पुनि पूंछा तिनपाहीं ❀ है अवश्य कारण मनमाहीं
सत्य कहहु नहिं करहु दुराऊ ❀ हे रघुनाथ अचिन्त्य प्रभाऊ
गुप्तते गुप्त अकथ प्रभुताई ❀ साधुकहैं प्रिय पात्रहि आई
सुनि मम बैन बचन उनभाषा ❀ चरित यथार्थ सकुच नाहिंराखा
हे शैलजादत्त मति माना ❀ सुनहु हेतु मैं करत बखाना
चित्रकूट सुबिचित्र सोहावन ❀ जो रघुबर बिहार थल पावन
तहँ घनश्यामदास कर बासा ❀ जिनहिंबिलोकिभजतभवत्रासा
जप तप योग ज्ञान विज्ञाना ❀ बुद्धि बिवेक बिराग निधाना
तिनलखिकछुकलिजनितबिकारा ❀ लै समाधि सुरलोक सिधारा
बनि घनश्यामरूप घनश्यामा ❀ नखशिखरुचिरअकथकबिनामा
शीस मुकुट छबि छाजत कैसी ❀ शशिपर कोटि भानु छबि जैसी
पीताम्बर कटि निकट बिराजै ❀ जाहिनिरखि क्षणमावलिलाजै

कम्बु कण्ठ कल कौस्तुम सोहै ❀ लाख सुर वृन्द वधू मन मोहै
उर वनमाल विशाल विराजै ❀ उपमा जासु कहत मति लाजै
जो समता गंगादि धारकी ❀ कहौंतो मतिअतिही गवारकी
जासु चरण प्रसाद इन केरा ❀ भयो भुवन प्रताप वहुतेरा
तासु हृदय भूषन वनमाला ❀ है ममते अकथ अतिआला
मणि मण्डित कुंडल कलसोहैं ❀ जिनहिलखत मुनीन्द्रमनमोहैं
झूमि झूमि दोउ मुख ढिग आवैं ❀ जनु खंजन शशि पकरनधावैं
हेम दाम कटिधनी अनूपा ❀ उपमा जग न जासु अनुरूपा
कछु कहैं इन्द्र धनुष की कोऊ ❀ पै मम मते अयोग्यहि सोऊ
विमल विभूषण भूषित अंगा ❀ लखिसकुचत शतकोटिअनंगा
लहि इमि रूप बिमान सवारा ❀ भये बजे सुरलोक नगारा
सुयश विशद गंधर्वन गावा ❀ बाद्यमधुरध्वनि विविधिबजावा
सोइ रव पर्‍यो अचानक काना ❀ हे शैलजादत्त मति माना
तव मैं तुरत गगन तन हेरा ❀ जयघनश्याम तिनहिंलखिटेरा
पेखहु किन न बिमान समाना ❀ चला जात बहुबजतनिशाना
इमि रघुनाथ गदित वर बैना ❀ सुनिनभलख्योबढ्योचितचैना
तव मैं तुरत लीन उरलाई ❀ धनि रघुनाथ गाथ प्रभुताई
सुनहु सुमति रघुनन्दन ज्ञानी ❀ यह गति मैं रघुनाथहि जानी
आनन कहुँ बिमान लखिपावा ❀ हमहुँ उनहुँ नहिंकहुमतिगावा
पै बतरात बचन सुनि काना ❀ लाग्यो सबहिं अचर्य महाना
तब जयदेवदास जेहि केरा ❀ नाम शिष्य यक उत्तम मेरा
चित्रकूट तेहि पत्र पठावा ❀ उत्तर तहँते तुरत लिखिआवा
मास पक्ष तिथि वारहु बेला ❀ सकल सोई नहिंकुछभिनमेला
जादिन जेहि बेला घनश्यामै ❀ कह रघुनाथ जाति हरिधामै

सोइ सब सत्य पत्र मिलिआवा ❀ बांचि हमहुँसबजननसुनावा
गत संदेस भये सब लोगा ❀ धनि रघुनाथ गाथजगजोगा
हे रघुनन्दन तजहु खँभारा ❀ महि रघुनाथ संत अवतारा
इनहिंनजग अघटितकछुआजू ❀ जिनकर निशस दीनरघुराजू
गोलंदाज काज जिनलागी ❀ कीन्हेउ राम प्रणत अनुरागी
तिमि जिन बारि कराह भरावा ❀ सो घृत भयउभुवन यशछावा
तिमिहिं प्रताप यहहुदिखरावा ❀ जोअनऋतुफलतुमहिंखवावा
उमादत्त प्रभु बरणित गाथा ❀ सुनि संतन कह नाइ सुमाथा
धनि रघुनाथ अचिन्त्य प्रभाऊ ❀ दीनबन्धु सुठि शील सुभाऊ
सन्त कमल रबि इव सुखकारा ❀ बिन कारण प्रणतारति हारी
जग रक्षणहित नर तनु धारा ❀ करुणाकर यश भुवन पसारा
जय रघुनाथ पतितजन पावन ❀ शरणागत भय भार नशावन
यहिविधि गुरुहिं मनाइ बहोरी ❀ उमादत्त प्रति कह करजोरी
नाथ रजाय देहु अब आलू ❀ तुम्हरी कृपा मिटा उर त्रालू
अहहु स्वामि समरथ सबभांती ❀ महिमाअकथनकछुकहिजाती
इमि प्रशंसि आयसु लै संता ❀ गये अनत सुमिरतसियकंता

कवित्त मनहरण ॥

मज्जन के काज सरयू तट समाज जुरयो परयो सुनि श्रौण शोर गगन घनेरा है। तान्यो नैन नभ तौ लखान्यो घनश्याम रूप लखतै बखान्यो नाम जय श्रुत न देरा है॥ सोई नभकौतुक लखायोउमादत्तहूको धन्यसोप्रताप रघुनाथदासकेरा है। आनअवलम्बऔविलम्ब तजिलीजैमंत्रनगट गोविन्द जैगोविन्दगुरुतेरा है॥

इति श्रीमद्रामचन्द्रचरणद्वन्द्वारविन्द मकरन्दमलिन्दानन्दतुन्दिल जयगोविन्द बुधविरचिते रघुनाथविनोदेसप्तमस्समुल्लासः ॥ ७ ॥

॥ अथ तोटकपद्यम् ॥

प्रणमेस्वगुरुंरघुनाथ विभुंमनसीप्सितविघ्न विवेक परं । विदितं खलुयेन जनेन कृतं हरिषोड़श धाचैन सद्धनिकरम् ॥

दो॰ जयगोविन्द जोगुरुचरित सुना चहहुसहुलास ।
तौतुम जाहु प्रयाग अब स्वामि सुदर्शनपास ॥
झूंसी थलमल विमल है तहँ आश्रम तिनकेर ।
बिनश्रमउर भ्रमभागिहै सुनिगुरु चरितघनेर ॥

बिन्दा दास बचन सुनिकाना ❀ अति अनन्द उर पुर प्रगटाना
अतिशय श्रवण प्रेम उरछावा ❀ यमुना उतरि प्रयाग सिधावा
पहुँचि प्रयाग नहायेउ बेनी ❀ जो बिन खेद वेद फल देनी
तट गतसन्त सुजनशिरनावा ❀ बहुरि बायुसुत बिनय सुनावा
पंचरत्न बिरच्यो तेहि ठामा ❀ सो अबलिखहुँ सुनहुमतिधामा

कवित्त छन्दमनहरण ॥

केशरीकुमार को पुकार किये एकौ बार आपदा अपार क्षार-रहीं कौन केरी है । त्योंहीं अंजनीकुमार आनन में आनतहीं आवतीं अनन्त सम्पदान की सु ढेरी है ॥ सूधेहीं सुभाय जो स-मीरसूनु कहै कोऊ होतीं बेप्रयास ऋद्धि सिद्धि सबै चेरी है । कासों करौं शोर औ निहोर जैगोबिन्द जोपै केशरी किशोर बर जोर ओर मेरी हैं ॥ १ ॥ बन्दन के लायक रघुनन्दनै मिलाय रविनन्दन की बेरी बायुनन्दनै निबेरी हैं । सिंधु बारि बिन्दु सों बिलंघि मातु मैथिली के उर उपजायो अवलीं अनन्द केरी हैं ॥

शक्तिघात घायल बिहाल श्री लषनलाल लाय औषधी कियो निहाल फेरि फेरी हैं। कासों० ॥ २ ॥ राम अनुशासन हुलासन सों शीस धरि चल्यो कीश ईश उर आनँदै घनेरी हैं। जायराम जानकी लषनकी अवाई कहिआपदा नशाई श्री भरत्थ बीर केरी हैं ॥ एतीप्रभुताई जौनगाई ते कितीकु ताहि जापै मातु जानकी कृपाकी कोर हेरीहैं। कासों० ॥ ३ ॥ जाकी बांकी होकके सुनहीं हहरि हिये छूटि जातीं हिम्मतीं कराल कालकेरी हैं। जाकी कृपा कोर लवलेश ते हमेश बेश जातीं मिटलेखनी लिखन भाल केरी हैं ॥ एती प्रभुताई जो न गाई ते बिनाई मैन शेषहू गणेश व्यास खास सुख टेरीहैं। कासों० ॥ ४ ॥ मोहिं तौ न दूसरो समर्थ स्वामि सूझिपरै जैसे मास श्रावण के अन्धको हरेरी है। करिहैं कहा कलि दिनेश की निदाघदा हैं जोपै बांह छाहैं बायु सूनुकी घनेरी हैं ॥ तेऊ नर नर जाने जांयगे जहान जेवै ऐसो स्वामि छांड़ि लखै आंखैं आनकेरी हैं। कासों करैं शोर औ निहोर जैगोबिंद जोपै केशरी किशोर बरजोर और मेरी हैं ॥

यह कपीश शर रतन बनाई ❀ प्रेमसहित कपिपतिहिं सुनाई
गयउ किले सुमिरत रघुनन्दा ❀ गणपतिशम्भु अक्षयबट बन्दा
बन्दत सन्त सुरन मग नीके ❀ जाइ लख्यो पद माधवजी के
बासुकि बन्दि गयउ पुनितहवाँ ❀ भरद्वाज मुनि को थल जहँवाँ
त्रिविध कवित्त बिरच्यो तेहिठामा ❀ सोइअबलिखौंसुनहुँमतिधामा

कवित्त ॥

शंकर कृपालु जल शीकरै सो कोटिन को कोटिनकी कोटिन न देत देर लायो है। जे गोबिन्द सुनि गुनि रावरो स्वभाव शील

आयो स्वामि शरण शरण सो न पायो है ॥ ऐमही गरूर करिबे जो रहै रावरे को आशुतोष विश्वपोष काहेको कहायो है । बेरबेर टेर टेर तुमहीं निहोरौं नाथ मेरीबेर हेरे देर काहे को लगायोहै ॥१॥ मन बच काय रावरेके गुणगाय शम्भु रावरो कहाय तऊ दीहदुःख लेहौंमें । जाऊंमैंकहांको औ कहावौं जायकाको दुःखमेरो अति बांको हरकासौं और कैहौं मैं ॥ जैगोविन्द इतउत डोलिहौ वृथा दुनीम दीनको दयाल दानिदूसरो न पैहौ मैं । मोहिं तौ सुपास ग्रास एतीहैउमानिवास रावरीदयालु तासों कौनी भांतिगेहों मैं २

इमि करि दरश मुदितमन भयऊ ❀ बाघम्बरी सुथल चलिगयऊ

दो० तहँ राजत नयपालगिरि अतिकृपालु उरजासु ।
बन्दतही पद पदमयुग भा आनन्दउरआसु ॥

लखि सुठि शील कहेउँ करजोरी ❀ सुनियस्वामि यकबिनतीमोरी
सद्गुरु चिह्न संत श्रुति गाये ❀ ते सहजहि जहँ परत देखाये
असको पुरुष सिंह जग माहीं ❀ सो कृपालु बरणौ मोहिं पाहीं
बोले प्रभु नयपाल कृपाला ❀ सुनहुसुमतिसतगुरुयहि काला
अवध स्वामि रघुनाथ अनूपा ❀ सब प्रकार मैं मनहिं निरूपा
जीवन मुक्त दशा जिनकेरी ❀ बरणि न सकत मन्दमति मेरी
हर्ष शोक जिनके उर नाहीं ❀ देखत राम रूप सब माहीं
विश्वबदर जिमि जिनके हाथा ❀ अस समर्थ सबबिधि रघुनाथा
को प्रपंच बरणै बहुतेरा ❀ राम निशस दीन्ह्यो जिनकेरा
जिन घृत कीन वारि बिन बारा ❀ काह न करत संत संसारा
पांच छ सात आठ शत सन्ना ❀ सन्तत जासुनिकट निवसन्ता
ते नित अशन यथारुचि पावैं ❀ निर्भय सियाराम गुण गावैं

देखेउं सुनेउं गुनेउं मनमाहीं ❀ सब प्रकार समरथ भ्रम नाहीं
इमि कृपाल नयपाल बखाना ❀ सुनिमनअतिप्रमोद प्रगटाना
चरण पलोटि चलेउ चित चोपी ❀ अवलोकेउं मगचलत अलोपी
गंग उतरि सोमेश परेखा ❀ औरहु संत सुरन मगदेखा
गयउँ सुदर्शन स्वामि निकेता ❀ कहिको सकै आनँद उर जेता
दण्ड प्रणाम कीन शिरनाई ❀ सादर सहित सन्त समुदाई
बहुरिसुचितचितलखि यकबारा ❀ मैं निज इष्ट प्रसंग निकारा
स्वामि सुनहु अववांछित मोरा ❀ जेहिलगि मोचित चैन न थोरा
प्रभु रघुनाथदास गुणगाथा ❀ बरणिकरहुमोहिंस्वामिसनाथा
सुनि मम बचन सुदर्शन दासू ❀ मोचन लगे बिलोचन आंसू
उरगुरु रहनि गहनि सुधि आई ❀ जनपर प्रेम प्रतीति सगाई
धरि धीरज गुरुपद शिरनाई ❀ लगे कहन गुरु कथा सोहाई

सो॰ गुरु कृपालु बहुबर्ष बासुदेव घाटहि निवसि ।
आये बहुरि सहर्ष रामघाट तहँते निकसि ॥

दो॰ तहँ सु बसे करि छावनी छावनि सुछबि छवाय ।
छाजितजहँछितिछबिछटाक्षणक्षणप्रतिछहराय

सुमिरि कपीश बचन मन भाये ❀ सानँद रामघाट गुरु आये
पांच छ सात आठ शत संता ❀ संतन गुरु छावनी बसंता
जांय तोन्यून अधिक जोआवैं ❀ सबनित अशन बसन धनपावैं
राज रंक जहँ लगि जग माहीं ❀ सबगुरु ढिगदरशनलगिजाहीं
सबहिं देहिं गुरु सुखद सुबासू ❀ नितनवअशनबसनसहुलासू
यकादिन भयो चरित यकचारू ❀ सुनहु सुमति भंजन भवभारू
हीरादास रहे एक संता ❀ जिनपर कृपा कीन सियकन्ता

विद्या बुद्धि विवेक निधाना ❀ जप तप योग विराग प्रधाना
संत सुभाव सहज जिनकेरा ❀ सत्य शील समतोष घनेरा
नगर ग्वालियरनगर प्रधाना ❀ जिनकर वास सुना मैं काना
नित षोड़श विधि मानस पूजा ❀ करैं सप्रेम काज नहिं दूजा
एक समय अवधहि चलि आये ❀ टिके घाट लक्ष्मण मन भाये
एक दिवस गुरु दरशन लागी ❀ हीरादास सन्त अनुरागी
चले निजाश्रम ते गुरु पासा ❀ मारग मध्य ज्ञान अस भासा
आजु न मानस पूजन कीन्हा ❀ मैं गुरु दरश हेतु चलि दीन्हा
बहिविलम्बलगि गुरुढिग जैहौं ❀ तहाँ बहुरि अवकाश न पैहौं
गुरुदरशन सब संत मिलापा ❀ तहँ करिहौं हरिहौं तन तापा
ताते गमनतहीं मारग में ❀ करौं अवसि पूजन मानसमें
अस गुनि हीरादास सुजाना ❀ करत चले मानस सविधाना
गये पहुँचिगुरु आश्रम माहीं ❀ भै समाप्त मानसविधि नाहीं
मानस विधि गुरु लखत भुलाई ❀ जाइ परे चरणन शिरनाई
लगे करन वन्दन सविधाना ❀ तब कृपालु गुरु बचन बखाना
सुनु मम बचन जवाहिर दासू ❀ करु सम्पाप्त मानस विधि आसू
तदुपरि अन्य कार्य करणीयम् ❀ यदिनिजमनशिषमानुमदीयम्
नेमते न्यून कर्म विधिजाकी ❀ होइ न सिद्धि क्रियाकछुताकी
छुटतहिं नेम होत प्रत्यूहा ❀ करिय नेम तजि काज समूहा
सुनहु सुमति गुरु श्रीमुखभाषा ❀ दोहालिखहुँजोश्रुतिसुनिराखा

दो० रहनिगहनिसमुझनिगुननिकहनिसुनानिसमएक
निबहिजाय रघुनाथ जन यही भक्त की टेक ॥

ताते सुनहु जवाहिरदासा ❀ नेम छूट जनु कर्महिं नासा

तन मनधनसाधिय नितनेमा ❀ सोउ अकाम तदपिहुकरिप्रेमा
यदि यहि भांति धर्म निर्वहई ❀ तौ कैवल्य परम पद लहई
प्राण हानि बरु होइसो नीका ❀ नेम धर्म छूटबु नहिं ठीका
अस बिचारि निजमनहिंदृढ़ाई ❀ करै नेम सबकाम बिहाई
नेम प्रेम जिमि चातक केरा ❀ तिमिहिं करै सिथिलहै न देरा
कीनअतिहिअनुचिततुमआजू ❀ जो बिसारि दीन्हेउ हरिकाजू
बिबिधि भांति भोजनहरिकाहीं ❀ परसि खवायेउ मानस माहीं
नहिं आचमन बहुरि करवायो ❀ हरि जूँठमुख परत जनायो
ताते दै आचमन राम को ❀ बिधिनिबाहिकरुआनकामको
अस कहि गुरुपुनि रहे चुपाई ❀ दोउदृगमूँदि समाधि लगाई
सुनतहिं हीरादास सुजाना ❀ मनआश्चर्य्यबिबिधिबिधिमाना
मैं मानस पूजन मन माहीं ❀ कीन पन्थ भा पूरण नाहीं
हरिहिंपवाय अशन बिधिनाना ❀ नहिंआचमन दीनमोहिंज्ञाना
पै न कहा नहिं जानत दूजा ❀ निजमन कीन मानसी पूजा
गुरुकृपालुयह कोहिबिधि जाना ❀ मन संशयबिधि भँवर भुलाना
रहा महाभ्रम थोरेहि काला ❀ भापुनि ज्ञान प्रगट ततकाला
गुरु त्रिकाल गति जानन योगू ❀ जिन संतावतार कहलोगू
सहज अखंड ज्ञान जिन केरा ❀ नहँकहिं भ्रम्यो मन्दमन मेरा
जानबु ताहि किती यह बाता ❀ जो सर्वज्ञ सर्वगत ज्ञाता
मैं निपटहिं अयान जगमाहीं ❀ जो संदेह कीन मनमाहीं
हरिहिं गुरुहिं कछु अन्तरनाहीं ❀ सोसब विदित प्रगट जगमाहीं
जलहिकीन घृतबिनहिंप्रयासा ❀ भुवन फैलि रह परम प्रकासा
ऋतुहिमंत संतन हठि मांगा ❀ फल खरभूज अनूपम स्वांगा
गुरु समर्थ द्रुत फल प्रगटाई ❀ दीन जेवाय संत समुदाई

योग प्रभाव अकथ गुरुकेरा ❀ सर्वान्तर गति ज्ञान घनेरा
अस विचारि मन संशयत्यागा ❀ हीरादास रजाय सु मांगा
जाय कीन मानस विधि पूरी ❀ गति चञ्चल मनकी करिदूरी

कवित्त छन्द मनहरण ।

चल्यो गुरु पास हीरादास खास वासहीं ते दर्श अभिलाप को हुलास उर छायो है । लाग्यो करै मानसविधान मगहीं में मन पहुँचो हजूर पै न पूर करि पायो है ॥ कह्यो गुरु आयो इतै वन्दन करन लाग्यो उतै रघुनन्दन को नाहिं अँचवायो है । जै गोविन्द वारौं बार बार मैं निहारौं मोहिं जूठो मुख आज रघुराज दरशायो है ॥

इति श्रीमद्रामचन्द्र चरणद्वन्द्वारविन्द मकरन्द मलिन्दा
नन्द तुन्दिल जयगोविन्द बुध विरचिते रघुनाथ
विनोदे अष्टमस्समुल्लासः ॥ ८ ॥

अथेन्द्रवज्रापद्यम् ॥

वन्दे गुरुं यत्कृपयाऽतिशोकाच्छूनीविमुक्तांत्यज शस्त्रघातात् ॥ लब्ध्वंत्यजोऽज्ञानमपारसिन्धुंतीर्त्वागत श्शाश्वततुप्रमोदात् ॥

सो० श्रवणभक्ति लखिभूरि स्वामिसुदर्शनदासकह ।
बचन सजीवन मूरि दूरिहोत जेहि सुनत भ्रम ॥

दो० सन्तन मुख मैंअस सुनी एक सुनी गुरु ऐन ।
रही नाम जाकर धुनी गुनीजनन सुखदैन ॥

तासु चरित्र अतिहि मनरंजू ❀ श्रवण सुखद जड़मतिमलभंजू
जब अरुणोदयसन्त सुजाना ❀ जाय करैं सरयू अस्नाना

तबहिं जाय सरयू तट सोऊ ❀ मज्जन करै लखै सब कोऊ
आइ बहुरि बैठे निज ठाँमैं ❀ धुनी नाम वह शुनी सु नामैं
अनत न कहुँथलकहुँढिगजावै ❀ निरजन निजथलमलसुखपावै
सुनहु सुजन गुरु बारहुमासा ❀ नित भण्डार देंहिं सहुलासा
चतुरवर्ण चतुराश्रम दोऊ ❀ इनहुँ ते अन्य जीवजग सोऊ
जो गुरुढिग गुरु आश्रमजावै ❀ सो नित अशन यथारुचिपावै
शूकर श्वान शृगालहु आवैं ❀ तिनहुक्षुधितगुनिअशनदेवावैं
जबकरि अशनहोइ सब कोऊ ❀ तब भोजन पावै हठि सोऊ
यदि न घरीबितिकि कुछुरावै ❀ तौ गुरु थल ढिग शोर सुनावैं
सुनतहि क्षुधित शोर गुरुतासू ❀ देइ देवाइ अशन सुठि आसू
को अस जीव चराचर माहीं ❀ जाहिदुखित लखिगुरुनदुखाहीं
सियाराम मय सब जग जानी ❀ काहि न दया दीठिगुरुआनी
भोजन पाइ खाइ करि पाना ❀ सुचित बहुरि बैठे निज थाना
यहिबिधि प्रतिदिन करै चरित्रा ❀ धुनी नाम वह शुनी बिचित्रा
यकदिन एक पुरुष कोउ आवा ❀ अतिहि गौरअन्त्यजउपजावा
बर बन्दूख नली बिबि जामैं ❀ लीन्हे कर प्रबीण खल तामैं
सो तहँ मूत्र क्रिया करै लागा ❀ महा मन्दमति मूढ़ अभागा
सरयू गमन पंथ बिचमाहीं ❀ कीन्हेसि मूत्र बिचारिसिनाहीं
असतकर्म करते तेहिं देखी ❀ धुनीशुनी धुनिकीन बिशेखी
क्रोधवन्त अति आतुर धाई ❀ मनहुँ काल बिकराल पठाई
आवत देखि धुनिहि खल सोऊ ❀ द्रुत बन्दूख भरेसि कर दोऊ
मारा चहत ताहि शठ जौलौं ❀ संतन गुरुहि कहाहठि तौलौं
देखिय नाथ धुनिहिं खलकोऊ ❀ मारत भरि बंदूख कर दोऊ
गुरु करि कृपा धुनी तन हेरा ❀ भयो बृथाश्रम तेहिखल केरा

गइ बंदूख नलिफाटि तड़ाका ❀ शठदूसरि नलिभरेसिभड़ाका
बहुरिअभय गुरुधुनिकहँ दयऊ ❀ बादिहिं तासु बहुरि श्रमभयऊ
सोउ नलि फाटिगई बिन देरा ❀ तब गुरु संत जनन प्रतिटेरा
अब न लेहुकिन धुनिहि बोलाई ❀ तीसरिवार अतिहि अधिकाई
धुनी धुनी कहि संतन टेरा ❀ तब वह आइ बैठि निजडेरा
सोशठ बिगत मान गुरु पासा ❀ आवा अतिहि जासु उर त्रासा
महि धरि शीस त्राहि रवभाषी ❀ बोला बहुरि चरण उराखी
स्वामि धुनी यह मोतन धाई ❀ अतिहिंक्रुधित जनुकाल पठाई
भरि बंदूख मैं मारन चाहा ❀ गई फाटि नलि कारण काहा
बहुरि भरी नलि दूसरि जौलौं ❀ हनौं ताहि गइफटि सोउ तौलौं
भा अचर्य्य यह कारण काहा ❀ कहहु मिटै मम दारुण दाहा
तुम सर्वज्ञ प्रणत हितकारी ❀ कहहु स्वामि मम दोष बिसारी
मैंअतिअधम कुटिलखलकामी ❀ बिषयी कूर कुमारग गामी
पै अब दीनवचन मन काया ❀ है अधीन शरणागत आया
दीनबन्धु निज बिरद बिचारी ❀ कारण कहहु दहहु भ्रमभारी
सुनि अतिदीन गिरा तेहिकेरी ❀ गुरुहिं दया उपजी बिनदेरी
अतिकोमल चितशील सुभाऊ ❀ लगे कहन नहिं कीन दुराऊ
नली फटन कर कारण एहू ❀ सुनहु यथार्थ बिगत संदेहू
निज प्रभु काजजगतजोकरई ❀ कालहु जात तासु ढिग डरई
नित अरुणोदय होत निदाना ❀ धुनी करति सरयू असनाना
बहुरि आइ बैठति निज ठामा ❀ शीलसकुचअतिजनुमुनिबामा
देइ साधु सोइ भोजन पावै ❀ निज थलते न अनत कहुं जावै
आन श्वान खल जीवहुआना ❀ जिनइत आइ उपद्रव ठाना
तिनहिं सक्रोधशोर करितरजै ❀ असत कर्म करिबे कहँ बरजै

यहिधुनिधुनीधुनीधुनिकरती ❀ स्वामि काज अनुसरिअघहरनी
जो तोहिं है सक्रोधनेहिनरजा ❀ सोउ अयोग्य करिबे कहँ बरजा
वहजड़जीव ताहि अस ज्ञाना ❀ तू नर तन तौ निपट नदाना
संत गमन मारग चित्तमाहीं ❀ कीन्हे मूत्र विचार बिनाहीं
धुनितेहिंयदपिशिलापनदीन्हा ❀ तदपिक्रोध अति दारुणकीन्हा
भरि बंदूख तेहि मारण चाहा ❀ धसि अभिमान समुद्र अथाहा
रघुनाथहि प्रिय जो जगजीवा ❀ को अस सकै तासु चरि सीवा
दुष्ट दुशासन करगहि सारी ❀ नग्न कीन चाहत नृपनारी
कृपा कोर करि हरि तेहि ताका ❀ भई न नग्न दुष्ट बल थाका
कनक कशिपु प्रहलादहि तापू ❀ दीन मरा शठ तुरनहि आपू
अम्बरीष रिपु है दुर्बासा ❀ लहि अपमान सही तनत्रासा
यह सिद्धान्त सुदृढ़ श्रुतिकेरो ❀ निजजन प्रण हरि सदहिनिबेरो
सरयू मज्जन जनित सुकर्मा ❀ संतत संत दरश शुभ धर्मा
सो रक्षक क्षण क्षण प्रति जासू ❀ को जग देनहार दुख तासू
मारा चहत रहे शठ तेही ❀ गई फाटि नलि कारण एही
संत कृपा करि हेरहिं जाही ❀ मारे ताहि रचा बिधि काही
को प्रपंच बरणै बहुतेरा ❀ सुनु अन्त्यज कछुक मतमेरा
भ्रमतभ्रमत जगयोनि अनेका ❀ जीव सहत दुख दुसह कितेका
बीतत कल्प अनेक न वारा ❀ सुख न लहतकहुँजीव बिचारा
मंद बिवेक मान नहिं त्यागै ❀ ताते बहुरि कर्म फल लागै
पुनिपुनिभ्रमतसहतदुखपुनिपुनि ❀ है अचेतरोवत शिरधुनिधुनि
यम यातना अनेक प्रकारा ❀ सहत दुसह अति बारहुबारा
यदि कदापि भ्रमतहि चौरासी ❀ कौनेहुजन्म बिमल मतिभासी
दैवयोग कछु कारण पाई ❀ कीन्हेसि पुण्य कर्म समुदाई

यहि बिधिकृतयदि पुण्यनथोरी ❀ भई समग्र सिमिटि एकठौरी
तब अतीव दुर्लभ नरदेही ❀ पावत जीव चहत सुरजेही
जेहि लहि बिधिहरिहर पदपावैं ❀ नरश्रम बिना संत श्रुतिगावैं
तदपि न यदिममतामद त्यागी ❀ रामहिं भजै कुबुद्धि अभागी
जन्म पदार्थ बादि तेहिं खोया ❀ सुत वित दारमोह निशि सोया
क्षण भंगुर शरीर तेहि लागी ❀ करत पाप पर द्रोह अभागी
तजत न काम क्रोध दुख हेतू ❀ गहत न राम नाम भवसेतू
बिषय बीज बोवत मनभाये ❀ निशिदिन तीव्रबिपतिबिसराये
जाते मिलिहिं कलेश दुरंता ❀ जन्मत योनि अनेक न अन्ता
अहो अतिहिअचर्य्य जगहेरा ❀ नाम मिलत बिनदामन केरा
रसना निज अधीन सबकाहू ❀ तदपि सहत दुख दारुण दाहू
सुनहु सुजन गुरुकल्पितबानी ❀ जोतेहि प्रतिगुरुस्वामिबखानी
सोइ अब लिखहुँनममकृतएहू ❀ पद झूलना सुखद सबकेहू

पद झूलना ॥

बेहोश तू होश करता नहीं फिरि दोष तू देहिगा कौन का रे। जक्त को रंग बदरंग या देखिकै भूलि ह्वैरहा मन मौनका रे॥ चेतता नाहिं तू नेकहू चित्तदै आनि नगच्यान दिनगौन का रे। रघुनाथ प्रणठानि मनमानि बिश्वास झट नाम जपु जानकीरौन का रे॥ १॥ चारिही दण्ड तन स्वास विश्वास करु आसनहिं अधिक पल आधकेरी। बैठि एकंत सियकंत भगवंत को जाय जपु नाम क्यों करत देरी॥ जायगो छूटि सब कलुष कलिकाल को होयगी सुगति जिमि यवन केरी॥ बेगि रघुबीर सब हरैंगे पीर तू छांडु भवभीर शिषमानु मेरी॥ २॥

सुनि सविरागसुखद गुरु बैना ❀ भा बिराग उपजीं चित चैना

चारिहि दण्ड रहहिं मम माना ❀ यह बिश्वास सुदृढ़ तेहिमाना
सुनहु सुजन रघुपति की माया ❀ अकथ अनंत संत श्रुति गाया
अंत्यजजातिअधमअभिमानी ❀ दया दीठि तापर गुरु आनी
दीन छुटाइ मोह फट तासू ❀ भे अनुकूल रामहित जासू
गुरुहिं बन्दिकरि दण्डप्रणामा ❀ गा सरयू तट बैठि सुठामा
अंगराग सरयू रजकेरा ❀ करि सर्वांग सबिधि बिनदेरा
राम राम रट लावन लागा ❀ सब बिकार तनते कढ़ि भागा
चारि दण्ड तक रटनि न छूटी ❀ किन्हेसि नशा नामकी बूटी
बहुरि राम रटतहिं तन त्यागी ❀ गा कल्याणभवन बड़भागी

कवित्त छन्द मनहरण ॥

आयो एक बली भली डुनली सुधारे कंध पंथ जड़धिया सूत्र क्रिया करै लाग्यो है। लखते सक्रोध शुनी धुनी धुनि कर्त धाई जौलौं लखहै भरि बंदूख चहै दाग्योहै॥ तौलौं अभैदान गुरुधुनी को निदान दीन्हों गईफाटि नली छली छाड़ि छरु जाग्यो है। सरयू रज धारि औ पुकारि नाम वारि वारि जल्द जय गोविन्द श्री गोविन्द मौन भाग्यो है॥

इतिश्रीमद्रामचन्द्रचरणद्वन्द्वारविन्द मकरन्दमलिन्दानन्दतुन्दिल जयगोविन्दबुधविरचितेरघुनाथविनोदेनवमस्समुल्लासः॥ ९॥

अथदोधकपद्यम्॥

श्रीरघुनाथ गुरुं प्रणतोहं चित्रकरांकिलवंचितु मीशः॥ योहि निरामय आमय युक्तोभूत्युनराम यहानिजतंत्रः॥ १॥

सो० सुनहुसुमतिचितलाय चितसुभायबिलगायकै।
जैहैं कलुषनशाय बिनउपाय बिलखाय कै ॥
दो० एक चित्रकर एकदा आवा अतिहि अनूप।
गुरु सबीह खैंचन हितै लागा लखन स्वरूप ॥
तेहि बिचार कीन्ही मनमाहीं ❀ लेहुं खैंचि जानहिं गुरु नाहीं
जनिहैं गुरु तौ निवारण करिहैं ❀ तौ न मनोर्थ मोरि फिरि सरिहैं
असगुनि यतनसों खैंचनलागा ❀ धरि आरसी सहित अनुरागा
यदपि छिपायेसि यतनअनेका ❀ तदपिलखा गुरु बिमल बिबेका
गुना तुरत गुरु परम उदारा ❀ मम सबीह यहि रचन बिचारा
बारि अगाध गंग तट माहीं ❀ चूहा खनन बाल जिमिजाहीं
तिमि सबीह मम छापन आवा ❀ जासु बिवेक रजोगुण छावा
ताते अब उपाउ अस करऊं ❀ बिनहिं कहे कारज अनुसरऊं
असगुनि योग प्रभाव देखावा ❀ निजगल घेघ रोग उपजावा
दीखचित्र कर गुरुगल रोगा ❀ गुनेसि समय नहिंछापनयोगा
है यहिकाल रोग कुछ ग्रींवा ❀ बनी न सुठि सबीह की सींवा
रहा न कबौं आजु लगि रोगा ❀ खैंचतही यह भयो कुयोगा
जो खैंचहु सबीह सहरोगा ❀ तौ होइहि यह निपट कुयोगा
जो खैंचहुँ गल रोग बिहाई ❀ तौ कुयोग लोगन दरशाई
कछुक दिवस गहँ रोग नसाई ❀ सुंदर समय बहुरि जब आई
तब स्वरूप सुठि मुकुर निहारी ❀ खैंचि छापिहौं तन मन वारी
गा असशोचि टिका जेहि गेहू ❀ गुरुकुल चरित न जानेसि एहू
नगर आगरा जासु निवासा ❀ टिका अवध छबि छापनआसा
प्रति दिन लखन चित्रकरजावै ❀ प्रतिदिन रोग कछुक बढ़िआवै

यहि बिधि गयेदिवस बहुबीती ❀ बढ़ा रोगलखि उपजत भीती
तब अकुलाय चित्रकर गयऊ ❀ गमन आगमन छूटत भयऊ
गुरु अनुचर गुरुरोग निहारी ❀ सकलमनहिं मन होंइ दुखारी
कहिन सकहिं गुरुते भयमानी ❀ औषधादि सेवन की बानी
कहत भीति बिनकहे कलेशू ❀ पर्यो चित्त दुहुँदिश दुख देशू
यकदिन सब निजमनहिंहढ़ाई ❀ जाइ परे चरणन शिरनाई
स्वामिसुनहुँ कुछु बिनयहमारी ❀ सेवक सुखद प्रणत हितकारी
प्रभुगलमें कुछुरोग बिकारा ❀ ताहिपेखि दुख हमहिं अपारा
होत यदपि नाथहिं दुख नाहीं ❀ देह जनित निश्चय हमकाहीं
तदपि स्वामिहम मन्द बिवेका ❀ दुख सुखनहिंजानितसमएका
तिनहिंहोतलखिलखि दुखभारी ❀ हरहु स्वामि यह पीर हमारी
निजगल रोगनाश प्रभुकीजे ❀ ताहि नाशि हमकहँ सुखदीजे
गुरु कृपालु सुनि अनुचरबैना ❀ बिस्मय हर्ष चित्त कुछुहैना
बोले बचन मधुर अतिमीठे ❀ करत सुधामोदक गुणसीठे
सुनहुँ सकल अनुचर प्रियमोरे ❀ बचन बिराग बिबेक पछोरे
कृमिबिट भस्मअन्तगतियाकी ❀ ममेदमिति मतिवादिहिं ताकी
पंचभूत बिरचित यह काया ❀ क्षण भंगुर पुराण श्रुति गाया
पानीके फफोल जिमि पानी ❀ जात बिलाय सुनहुँ गुणखानी
तिमि मिलि पंचभूत में जैहैं ❀ पंचभूत बिलम्ब नहिं लैहैं
जिमि आतशबाजी की माया ❀ तिमिशरीर गति ज्ञानिनगाया
आतम बुद्धि तामहिंजगजाकी ❀ अतिभ्रमभान ग्रसितमतिताकी
तनु स्थूलता कृशता आधी ❀ क्षुधा तृषा भयआदिक ब्याधी
ई देहाभिमानि जन काहीं ❀ होत देत दुख दुसह सदाहीं
आतमाराम आतमरति ज्ञानी ❀ तिनहिं नई एकहु दुखदानी

ताते जिमि शरीर सब अंगा ❀ तिमिहिं सुनहु गलरोगप्रसंगा
करहु न दुख मम रोगनिहारी ❀ देहज दुख न मोहिं दुखकारी
सुनि इमि गुरु कृपालु के बैना ❀ सेन अनुचरन चित बहु चैना
है विनीत सब कर युगजोरी ❀ बोले गुरुहिं बहोरि निहोरी
सुनहुँ स्वामि सत्यहिं मतएहू ❀ समीचीन नहिं कछु संदेहू
तदपि स्वामि असशील तुम्हारा ❀ पुरवहु जन प्रण विनहिं विचारा
हम सब वचन कर्म प्रभुदासा ❀ राउरि सो गुनि पुरवहु आसा
निजकर कमल देहु गलफेरी ❀ है इतीक वांछा सबकेरी
सुनहु सुजन सबकी गति देखी ❀ उपजी गुरु उर दया बिशेषी
फेराकर गुरु दीनदयाला ❀ गा मिटि कंठ रोग ततकाला
जय जय शोर मची चहुँ ओरा ❀ भा आनन्द अनुबरन न थोरा

कवित्त छन्द मनहरन ।

आयो चित्रकार के बिचार चित्र खैंचि बे को बचन कह्योना चित्र रचन बिचारयो है । जान्यो गुरु मन्द मुसकान्यो अड़ान्यो बहु पैन वहिमान्यो तब कंठरोग धारयो है ॥ रह्यो नहिं रोग यह कहांते कुयोग आयो पायो नहिं भेद तब सदन सिधारयो है । जै गोविन्द राख्यो अभिलाष सब सन्तन की फेरि कर कंज कण्ठरोग नासि डारयो है ॥

इति श्रीमद्रामचन्द्र चरणद्वन्द्वारविन्दमकरन्दमलिन्दानन्द तुन्दिल जयगोविन्द बुध विरचिते रघुनाथ विनोदे दशमस्समुल्लासः ॥ १० ॥

अथानुष्टुप्पद्यम् ॥

रामादभ्र दयाभाण्डं स्वगुरुं नौमिनम्र्मदम् ॥
सेनाचरतनूरामो बभौयद्धितकाम्यया॥

सो० सुनुप्रभु परम प्रबीन प्रथम सुने उमैं चरितयक।
गुरु कहँ कपि बरदीन दिहैं निशसहरिबारबिबि॥
दो० प्रथमनिशास को चरितमोहिं कहा अनंदीदीन।
बार दूसरी को चरित नाहिं पुनि बरणन कीन॥

सो कृपालु अब कहहुबखानी ❀ चरित सुखद निजसेवकजानी
सुनि कहस्वामिसुदर्शन दासा ❀ जयगोबिन्द सुनु करहुप्रकासा
इतते योजन बसु निधि सीवां ❀ जासु नगर अस दक्षिगरीवां
तहँ के नृपति सुमति रघुराजू ❀ सब प्रकार सब लायक आजू
भक्तमाल तिन ग्रंथ बनावा ❀ तहँ यह चरित मनोहर गावा
ताते जैगोबिन्द उत जाहू ❀ कहिहैं चरित अवश्य नरनाहू
तब पद बन्दि रजायसु लयऊँ ❀ तुर्त नगर रीवां चलि गयऊँ
जाइ लख्यों नरपति रघुराजू ❀ राजकाज सुठि साज समाजू
नृपहु मोहिंलखि हिय हरषाने ❀ करि प्रणाम सादर सनमाने
दै आसन पुनीत बइठारा ❀ तब मैं इह प्रसंग निकारा
सुनहु नृपति तुम ग्रंथ बनावा ❀ भक्तमाल जेहि नाम सोहावा
तहँ चरित्र तुम बर्णन कीन्हा ❀ प्रभु रघुनाथ निशसहरिदीन्हा
हे भुवाल सो कहहु बुझाई ❀ केहि बिधि दीन निशसरघुराई
सुनि ममगिरा कहननृप लागे ❀ बचन बिनीत प्रेमरस पागे
रापट सेन्द सेनचर वेषा ❀ रहे गुरु प्रथम प्रगट जग देखा
तहँ नित उठिअरुणोदय काला ❀ मज्जन करि रघुनाथकृपाला
पूजन ध्यान करैं हरि केरा ❀ जस पुराण श्रुतिसंतन टेरा
कुछु दिन गये निशस इन केरा ❀ आइ पर्यो मज्जन की बेरा
तब इन निजमनकीन्ह बिचारा ❀ अब केहिभांति होइनिरधारा

जो मैं निशस देन निज जैहौं ❀ तौ मज्जन केहिबिधिकरिपैहौं
अस विचारि यक मित्र बुलावा ❀ हाल सकल कहिताहिसुनावा
जो मम निशस देन तुमजाहू ❀ तौ मम होइ नेम निरबाहू
तुम्हरो निशस समय जब आई ❀ तब मैं निशस दिहौं तुवजाई
सुनि गुरु बचन मित्र हरषाना ❀ जाइनिशसनिशिदीनसुजाना
गुरु मज्जन करि पूजनठाना ❀ अति अनन्द उर पुर प्रगटाना
यहि बिधि बीते दिन दुइचारी ❀ बहुरि बात यह भई उघारी
तब पिशुनन रापट ढिग जाई ❀ कहेनि सकल बृत्तान्त बुझाई
सुनहुँ गरीब नेवाज सप्रीती ❀ होतिसेन अस अधिक अनीती
नित रघुनाथदास बरजोरा ❀ आयसु भंग करति प्रभुतोरा
निज निशसहिनित मित्रपठावै ❀ अपना मित्रनिशस हितआवै
आयसु भंग बचन सुनिकाना ❀ रापट नैन अरुण रंग आना
कह्योसकलनिजनिजथलजाहू ❀ पैहहिं आजु कपट करलाहू
यह बृत्तान्त मित्र सुनिपावा ❀ भयबश निशस देननहिंआवा
उत रापट झट रौंद पठावा ❀ पकरहु निशस कौन जनआवा
तत्क्षण बिरद लाज उरधारी ❀ प्रगटे राम प्रणत हितकारी
सोइकर शस्त्र बस्त्र सोइ रूपा ❀ धरे सेनचर वेष अनूपा
डोलनलगे गमन करिमन्दा ❀ शरणद भक्त सुखद रघुनन्दा
गया रौंद तहँ जाइ बिलोका ❀ राम हल्ट कहि रौंदहि रोका
उत्तर दै ढिग जाइ परेखा ❀ देत निशस रघुनाथहिं देखा
सोइ कर शस्त्र बस्त्र तनगोरा ❀ दीख निपट रघुनाथ न औरा
लौटि रौंद रापट पहँ आवा ❀ जेहि बिधिलखासोहालसुनावा
तब तकि पिशुन गये गुरुडेरा ❀ बैठे देखि चले बिनुदेरा
तुर्त रपटि रापट पहँ आये ❀ हिये सहर्ष मनहुँ निधिपाये

कहेनिलखहुप्रभुचलिनिजनैना ❀ हैं रघुनाथ बैठि निज ऐना
शपट कहा भयउ का औरा ❀ तुम कहौ और रौंद कहु औरा
तौ अबहाल चहियचलियांचा ❀ को कह झूंठ कौन कह सांचा
अस बिचारि भा बाजिसवारा ❀ आनन अरुण न जात निहारा
बाजि निशसथल जोपगुधारा ❀ राम हल्ट हूकयूस पुकारा
दै उत्तर ढिग जो चलिगयऊ ❀ लखि रघुनाथ मुदित मन भयऊ
पिशुनन कहा लखहु चलि डेरा ❀ हैं रघुनाथ तहौं हम हेरा
तब शपट डेरहि चलिआवा ❀ करत ध्यान रघुनाथहिं पावा
बहुरि निशस थल आइ परेखा ❀ देत निशस रघुनाथहिं देखा
डेरा जाइ लखा पनिबैठे ❀ ब्रह्मानन्द अगम मगपैठे
बड़ अचर्य्य दोउ थल रघुनाथा ❀ असकहि शपट नायउ माथा
भे सलज्ज सब पिशुन बिचारे ❀ धन्य सन्त कहि सदन सिधारे

कवित्त छन्द मनहरन ॥

ध्रुव प्रहलाद औ निषाद बलि बालमीक ब्याध गोप गीध गज गणिका उधारे हैं । शबरी सुकण्ठ मुनिबाम भरुही के अण्ड मीरा द्विज द्रौपदी बिभीषण उबारे हैं ॥ त्यांहीं रघुनाथ रघुनाथ को निशस दीन्हो कहां भक्त साथ रघुनाथ ना पधारे हैं । एक रघुनाथ सदा भक्तन सनाथ करयो जैगोबिन्द अबतो रघुनाथ हे हमारे हैं ॥

इति श्रीमद्रामचन्द्रचरणाद्वन्द्वारविन्द मकरन्द मलिन्दानन्द तुन्दिल जयगोबिन्द बुध बिरचिते रघुनाथ बिनोदे एकादशस्समुल्लासः ॥ ११ ॥

अथ मालिनीपद्यम् ।

सततमुरसिचिन्त्यं योगिभिर्योगयुक्त्या श्रुतिभिरनुदिनं वेसार्द्धमंगैर्विमृग्यम् । अजमभिगतमाद्यं तज्ञरामं वकेशम् निजगुरुमभियातो जत्कृपातो नतोहम् ॥ १ ॥

सो० गुरुचरित्र सुनि एहु अति अनंदउर मैं कह्यों ।
नृपअबआयसुदेहुचल्यो चहतचितसदन निज॥

दो० बहु प्रकार सनमान करि मोहिं बिदानृप कीन ।
बिनवानिनवनि नरेशकी प्रतिक्षण होतनवीन॥

कहि न सकहुँ आनन्दउरजेता ❀ रामकृपा अटिगयउँ निकेता
करहुँ कहा बहु बरणि प्रकाशा ❀ प्रतिक्षण उर उपदेश हुलाशा
एकदिन गुरुहिं स्वप्न मैं देखा ❀ गौर स्वरूप अनूपम वेषा

क० कम्मर लंगोटी की कछोटी काछे कम्मर में काली रँगवाली शोभा सबसे निराली है । अति गौर रूपमें अनूप वा लंगोटी लसै नाग की लंगोटी मारे मानो सुण्डमाली है ॥ कम्मरे क आसन बिछाये बैठे बेदिका में ताके ऊर्ध्व बंगले की छबि अति आली है । चारों ओर सोहत समाज साज सन्तन की पेखि भई जैगोविन्द खूब खुशियाली है ॥ १ ॥

औरहु बढ़ी दरश अभिलाषा ❀ जिमि शसिकलाबढ़े सितपाषा
सुमिरि गणेश गौरि बहु बारा ❀ चलेउँ अवध हियहर्ष अपारा
गयउँपहुँचिजबअवध निदाना ❀ तब निज जन्म धन्यकरिमाना
जन्म अनेक सुकृत शुभजासू ❀ जग पग परत अवध मगतासू
बालसखन सँग बिहरेउ सोइत ❀ जाहि महेश समाधिधरतनित

बरणत बहुमन गहत गलानी ❀ धन्य अवध जेहि राम बखानी
इत उत लखत पंथ थल नाना ❀ बंदत द्विज सुरसंत सुजाना
सुखद राम घाटहिं चलिगयऊं ❀ बहु बिचित्र गतिदेखत भयऊं
जहँ आश्रम कृपाल गुरुकेरा ❀ क्षिति लोटत तरु बहु चहुँफेरा
चहुँदिशि बँगलाशिखरअनेका ❀ यक यक जन तहँ रहइं कितेका
कहुँ पुराण श्रुतिगान महाना ❀ कहुँ वेदांत पढ़हिं बुधिवाना
कहुँ कोउ निर्गुण ब्रह्महिं बूझै ❀ ताहि प्रशंसि कहैं जिमि सूझै
सगुण ब्रह्म विवरणकहुँ करहीं ❀ कहिसुनि गुनिउर आनंदभरहीं
कहुँ कोउ नाम निरूपणकरहीं ❀ जासु प्रसाद न भवनिधि डरहीं
साधि समाधि कहूं कोउ बैठे ❀ रामानन्द अगम मग पैठे
यहिविधिलखन गयोथलतवने ❀ गुरु कृपालु राजित थलजवने
दो० चत्वारिंशतहस्त जो दीर्घायत कछु न्यून ।
उच्चतापिअनुमान ते दशवसु वा दशधून ॥
ता ऊपरहिं सनातन रामा ❀ राजि रहे यक थल अभिरामा
तिन के सेवन हित कुछु पन्ता ❀ ता ऊपरहिं सदा निवसंता
दुइ दिशि द्वार विप्र चहुँओरा ❀ कछु विहाय उत्तर थल थोरा
तापर बँगला शिषर सोहावा ❀ मध्य वेदिका विमल बनावा
वेदि कोण युग खंभ गड़ाये ❀ चहुँ करि छिद्र बांस पहनाये
छति अरुझापैं गोंदरियन केरीं ❀ लगीं जायकोइ अवसर गेरीं
ता वेदिका मध्य गुरु राजैं ❀ मुनिवर वेष विशेष विराजैं
सन्त समाज चहूँदिशि लागी ❀ जे सिय राम चरण अनुरागी
सीताराम नाम धुनि शोरा ❀ उर अंतर बाहर चहुँओरा
साधु समाज साज अस देखा ❀ चित्र बिचित्र चारु शुचिवेषा
सबहिं बन्दि बिनयों बहु भांती ❀ आनंद अधिकरु अधिकाती

पुनिगुरुनिकट निपटचलिगयऊं ❀ लखि स्वरूपलोचनफललयऊं
शील स्वभाव सरल सुठिनीका ❀ सब विधिसुगमसुखदसबहीका
शांत शांतरस जनु धरि रूपा ❀ बैठ बिराजत अमल अनूपा
द्वन्द्व रहित गत कामरु कोहा ❀ सपन्यौ न लोभ मानमदमोहा
अनुभव बिमल विवेक बिरागा ❀ राम चरण नित नवअनुरागा
सद्गुरु चिह्न सन्त श्रुति गाये ❀ ते सब देखि परहिं सतिभाये
तेहिक्षण भा ममउर आनँदघन ❀ जिमि रघुनाथमिले पावतजन
सजल नैन करि दण्ड प्रणामा ❀ उठि सहर्ष बैठेउँ यक ठामा
गुरु अशीष दीन्ह्यो मोहिंएहू ❀ सियाराम निष्काम सनेहू
सुनि अशीषहुलस्यो मनमाहीं ❀ संत बचन नहिं होत मृषाहीं
अवसि राम सिय रति हियरेहू ❀ होइहि मन नहिं कछु संदेहू
पेखि सु अवसर कहेउँ बहोरी ❀ सुनिय नाथ कुछु विनतीमोरी
मैं लघुमति सब भांति गोसाई ❀ क्षमिय सो जोकछु कर्हुँढिठाई

दो० भवसागर आगाध यह धीमर काल कराल।
राम विमुख नर मीन हैं मोह महा बलजाल॥

फांसिकरत ततकाल कलेवा ❀ राम बिमुख कोउ पाव न भेवा
रामभक्त तहँ वारि समाना ❀ फांसि न सकत काल बलवाना
राम भक्तिबिनश्रम सुखकारी ❀ त्रिबिधि ताप तम भवभयहारी
सो सतगुरु उपदेश बिहीना ❀ पावै अस जग कौन प्रवीना
जप तप योग यज्ञ व्रत ध्याना ❀ ज्ञान विराग तीर्थ दमदाना
शम संतोष शौच सुठिकर्मा ❀ जहँ लगि वेदविहितविधिधर्मा
ईसब करै यदपि विधि नाना ❀ तदपि न उर मलजातनिदाना
जबलगि उरमलजात न धोई ❀ तबलगि विमल विवेक न होई

बिन उर बिमलबिवेक प्रकाशा ❀ कौनिहुँभांति न भवभयनाशा
जब सतगुरुउपदेश न दीसा ❀ मज्जन करै स प्रेम सशीसा
तब समूल सब उर मल नाशै ❀ बिनश्रम बिमल बिवेक प्रकाशै
ताते प्रभु अब हरहु कलेशा ❀ राम मंत्रबर दै उपदेशा
जानि अनाथ नाथ करिनेहू ❀ मोहिं उपदेश अवसि अबदेहू
होत दया सागर सबसंता ❀ अस पुराण बुध वेद बदंता
सुनहु सुजन मैं मंद अभागा ❀तदपिगुरुहिंअतिशयप्रियलागा
दीन जानि गुरु दीनदयाला ❀ मोहिं उपदेश दीन ततकाला
भव कूपहिं सतगुरु शिषडोरी ❀ गहि न चढ़ै तौ गुरुहिं न खोरी
जो उर कर दृढ़ गहि अनुरागै ❀ तेहि भवसिंधु बिन्दु समलागै
नितगुरु मोहिंशिषदेहिंअनूपा ❀ जो पुराण श्रुति संत निरूपा
यकदिनसुखदचरितअसभयऊ ❀निपटहिंसुचितैसमयमिलिगयऊ
अवध एक मणि पर्व्वत सोहै ❀ बहुजन जात तहां तेहि जोहै
साजिसाजिनिजविशदविमाना❀ जायँ तहाँ बहु संत सुजाना
औरहु लोग लखन बहु जाहीं ❀ श्रावण शुक्ल तीजतिथि माहीं
गुरु आश्रमहु केरि बहुसंता ❀ मेला लखन गये दिन अंता
जे कोऊ रहे तेऊ थल आना ❀ बैठे करहिं राम गुणगाना
मैं तेहि काल रह्यों गुरुपासा ❀ ढारत मन्द ब्यजन सहुलासा
अवसर पाइ कहेउँ अस बैना ❀ क्षमेहु स्वामियदिकहत बनैना
मैं मतिमन्द ज्ञान गुण हीना ❀ तुम समर्थ सब भांति प्रवीना
हेकृपालु क्षमि मोरि ढिठाई ❀ मोरि प्रश्न यह कहहु बुझाई

दो० प्रभु भक्ती भगवंत की कै प्रकार की होहिं।
नामदशातिनकी सकल बरणि सुनावहुमोहिं॥

भक्ति प्रश्न सुनि रहुउ लखि गुरु बोले मृदु बानि ।
सुनहु तात भक्ती सकल सुठि श्रद्धा उर आनि ॥
भणित भागवत में यदपि नवधा भक्ति पुनीत ॥
तदपि अन्य ग्रन्थन विषे एकादश मुनि गीत ॥

छप्पै । श्रवण कीर्त्तन स्मरण चरणसेवन अरु बन्दन ।
अर्चन दास्यरु सख्य आतम अर्प्पण अभिनन्दन ॥
प्रेमा परा समेत भई ये भक्ति एकादश ।
प्रेम नेम युत करै राम कहु कस न होइँ बश ॥
रीझत रघुपति सबन में जे गोबिन्द चित दै सुनौ ।
तदपि हरिहि प्रेमा परा अतिशय प्रिय निजमन गुनौ ॥

अथ श्रवण भक्ति यथा ॥

ज्यों कुरंग को गान सुनत तनकी सुधि भूलै ।
चहै व्याध शर हनै गनै नहिं शर की शूलै ॥
त्यों रघुपति गुणगान सुनै सुनि गुनै अन्त में ।
श्रवण भक्ति यहिभांति होति कहुँ मिलति सन्त में ॥
श्रवण भक्ति यहि भांति की धुन्धुकारि खल भल करयो ।
निरभिमानसुरयानचढ़ि जे गोबिन्द भवनिधि तरयो ॥ १ ॥

अथ कीर्त्तन भक्तियथा ॥

ज्यों बन करि करि शोर मोर नाचै निहोर बिन ।
लखन सराहनहार नाहिं कोउ ताहि तौन छिन ॥
त्यों हरि कीर्त्तन करै सनर्त्तन हर्षि हियेते ।
कीर्त्तन भक्ति पुनीत होति यहि भांति कियेते ॥
कीर्त्तन नर्त्तन कर्मकरि तरि गणिका सर पुर गई ।

जयगोबिन्दसोइस्तुरति करि सुनियत पुनिहरिप्रियसई ॥ २ ॥

अथ स्मरण भक्ति यथा ॥

यथा बिरहिनी स्मरण करै निशिदिन निजपति को ।
सूरति सूरति सकल मिलनि बोलनि पद गति को ॥
त्यों हरि लीला धाम नाम सुमिरै हरिकेरो ।
यहै स्मरण भक्ति तात मानौ मत मेरो ॥
लीला धाम स्वरूप गुण नाम सुस्मरण करि सबै ।
तरे तरत खलु अतिखरे जेगोबिन्द तरिहैं अबै ॥ ३ ॥

अथ चरण सेवन भक्ति यथा ॥

यथा पतिव्रत नारि वारि तन मन पद पी के ।
सेवति निपट अकाम कर्म सब लागत फीके ॥
त्योंमानस में रामचरण सेवै बसुयामै ।
लोक वेदके कर्म धर्म तजि भावत रामै ॥
यह पद सेवन भक्ति भलि भक्तशिरोमणि सुनि कर्‌यो ।
जयगोबिन्द जिनके गले औत्तरथ नृप अहि धर्‌यो ॥ ४ ॥

अथ बन्दन भक्ति यथा ॥

ज्यों अहि माहिमें परत गिरत ज्यों दण्ड सही है ।
त्यों शिर उर कर पाइ जानु लगि जायँ मही है ॥
उठि बिनवै बुधिवन्त जोरिकर सन्त कही है ।
जय गोविन्द रघुनन्द बन्दना भक्ति यही है ॥
नर्क निकन्दन बन्दना रघुनन्दन की नित करै ।
जयगोबिन्द रघुनाथजन यमफन्दन को क्योंडरै ॥ ५ ॥

अथ अर्चन भक्ति यथा ॥

ज्यों एक सुत की मात तात तेहि अति प्रियलागै ।
लालन पालन बिबिधि भांति करि करि अनुरागै ॥
त्यों तनमन शुचि सदन लीपि पार्षद जल छालै ।
ध्यानासन अर्घादि गन्ध तुलसी मृदु मालै ॥
धूपदीप नैवेद्य युत नित नित षोड़श बिधिकरै ।
बिनश्रमअर्चन भक्ति करिजयगोबिन्दभवनिधितरै ॥ ६ ॥

अथ दास्य भक्ति यथा ॥

ज्यों दृग पद कर रचैबिबिधि व्यंजन हित सुखके ।
आपन गाहक कबौं लेशहू स्वाद न सुख के ॥
त्यों तजि बिषय बिलास आसनहिं भुक्ति मुक्तिकी ।
शिरधरि रामरजाय रामपद प्रीति युक्तिकी ॥
दास्य भक्ति दुर्लभ मुनी सन्त सुजन सरहत सबै ।
जयगोबिन्द पावत सोई जेहि हरिकरि दायादबै ॥ ७ ॥

अथ सख्य भक्ति यथा ॥

ज्यों जग जानत सखा जाहितेहि मानत जैसे ।
दोउ दिशि पूरण प्रीति रीति सँग बिहरत कैसे ॥
त्यों बरतै हरिसंग सुदा स्वामी रुचि आनी ।
ज्यों निषाद हरिसखा लखा रामहिं प्रभुजानी ॥
सख्यभक्ति प्रभुभावसों श्रीसुदाम द्विजबर कर्यो ॥
जयगोबिन्दजग सुयशलै श्रीगोबिन्दको ह्वैतर्यो ॥ ८ ॥

अथ आत्म अर्पण भक्ति यथा ॥

मन बच कर्म समेत जीव अर्पण करि रामै ।

आपु उपाय बिहीन राम रत आठहु यामै ॥
आत्म निवेदन भक्ति यहै कहुँ बिरले साधा ।
मध्य शिषिध्वज कीन दीन तन श्यामहिं आधा ॥
कहत सुगम पै अगमहै आत्म निवेदन मनगुनौ ।
काकरि सकत न रामजन जयगोबिन्द मोमतसुनौ ॥ ९ ॥

अथ प्रेमा भक्ति यथा ॥

ज्यों मदांध को होस रहत तन को नहिं तनको ।
त्यों प्रेमा मदमत्त सदा जानौ हरिजन को ॥
गावत रोवत हँसत रीति बिपरीति न सूझै ।
राम प्रेममें मँगन उचित अनुचित नहिं बूझै ॥
अइसि दशा जहँ सन्तकी सो प्रेमा शवरी करी ।
जयगोविन्द रुठे न मन जूँठे फल खायो हरी ॥ १० ॥

अथ परा भक्ति यथा ॥

रामरूप लावण्य ललित माधुर्य छटा तकि ।
अगनित सुखमासदन मदन बिन यतन जातजकि ॥
परमहंस मुनिराज चराचर जीव जहां लौं ॥
रामरूप छबिलखत होतजड़ कहिये कहां लौ ॥
सो अतुलित छबि निरखि जहँ चित्र सरिस गति संतकी ।
जय गोबिन्द सो परम प्रिय परा भक्ति भगवन्त की ॥

दो० गान हास गति रुदन को प्रेमामें कुछु होस ।
परामाहिंछबिछकितअतिसुधिनहिंनिपटबेहोस

क० हरिते निकरा बिसरा निजरूप परा दुख दारिद के दवमेंजू ।
बिचराबहु चारि असीलखधाम सरानहिं काम एकौ शव में जू ॥

करुणा करि राम करा नररूप मनो खरा पांसा परा पव में जू।
जै गोविन्द परामे परातौ परा न परा में परा तौ परा भव में जू ॥

कवित्व छन्दमनहरण ॥

पाप पुंज पावनको छिति क्षेम छावन को राम गुण गावन को जन्म जग लीन्ह्यो है। जाकी रज राज शिरताजन की ताज राजै सो कृपालु मोसे मूढ़ मलिन को चीन्ह्यो है ॥ संतशिरताज दीन सुनिकै अवाज राखि लीन्हों जन लाज रघुराज भक्ति दीन्ह्यो है। जैगोविन्द मोसे कलि कायर कलंकी कांगा केत्यो क्रूर कपटी कृतार्थ गुरु कीन्ह्यो है ॥ २ ॥

इतिश्रीमद्रामचन्द्रचरणद्वन्द्वारविन्द मकरन्दमलिन्दानन्द तुन्दिल जय गोविन्द बुध विरचिते रघुनाथविनोदे द्वादशस्समुल्लासः ॥ १२ ॥

अथेन्द्रवज्रापद्यम् ॥

ज्ञानंसवैराग्यमुवाचयस्तं श्रीरामनामाऽमृतपानपुष्टम् । मह्यंमुदासन्तसरोज सूर्य्यं गुरुंनतोहंनिरूपाधियोगम् ॥

सो० अब कुछु कहहु कृपालु दशाज्ञान वैराग्यकी
जेहिसुनि होहुँनिहालअससुनिपुनिगुनिगुरुकह्यो

दो० स्वस्वरूप की प्राप्ति है परस्वरूप पहिचान।
जाते होइ सो जानिये तात सुखद सुठिज्ञान ॥

छन्द नाराच ॥

प्रयत्न तात स्वस्वरूप प्राप्ति को अहै यही।
कहौं कछूक मैं वही सुचित्त कैसुनौसही ॥

सदा स्वरूप आपनो अनूप आप में अहै ।
यथापदार्थ में अलक्ष्यस्वाद व्यासही रहै ॥
यथा घृते विचारिये छिपान क्षीरमें रहै ।
तथा स्वरूप आपनो अनूप आपमें अहै ॥
यथा अलक्ष्य अग्नि दाह औ पषान में रहै ।
तथा स्वरूप आपनो अनूप आप में अहै ॥
यथा तिलादि में अलक्ष्य तैल व्यासहरिहै ।
तथा स्वरूप आपनो अनूप आपमें अहै ॥
यथानुकूल है लखो सुगंध फूल में रहै ।
तथा स्वरूप आपनो अनूप आप में अहै ॥
यथा सुरंग रंग में हरी प्रवाल में रहै ।
तथा स्वरूप आपनो अनूप आप में अहै ॥
अनित्य नित्य को विवेककर्त्त चलाजाइहै ।
अवश्य आपनो स्वरूप आपहीमें पाइ है ॥

अथ भुजंग प्रयात ॥

प्रमावर्ण विक्षेप सों भूलिगो है । स्वरूपाऽऽपनोआपकोनाहिंजोहै
प्रमाऽऽवर्ण विक्षेपको दूरिकीजे । स्वरूपाऽऽपनो आपमेंपेखिलीजै
तदाऽऽवर्ण विक्षेपहू दूरि ह्वै है । विवेकानुभौ की यदाधिक्य पैहै
स्वरूपाऽऽपनोदेहते भिन्न देखै । यथावर्ण ताहीं तथा ताहि लेखै

छन्द नाराच ॥

नमे स्वरूप देव दैत्य किन्नरो रगादि है ।
नपक्ष रक्ष भूत प्रेत सिद्ध चारणादि है ॥
नमा नवाप्सरा गंधर्व गो अजागजादि है ।

न कीट पक्षि आदि है कछु चराचरादि है ॥

अथ भुजंगप्रयात ॥

मनोबुध्य हंकारचित्तौ न मानौ । नभूवारिआकाशवाय्वग्निजानौ
नवाकपाणिपादाक्षिकर्णत्वचाहै । न जिह्वागुदा लिंगनाशापँचाहै
विषैलै चतुर्विंश ते है निनारा । अहोरूप मेरो वही निर्विकारा
यहीभांतिसोंजोदिनौरातिध्यावैं । स्वरूपाऽऽपनोतौकहौक्योंनपावै

छन्द नाराच ॥

भ्रमा रचो प्रपंच सो सबै अनित्यसादि है ।
मम स्वरूप नित्य शुद्ध चिन्मयीअनादि है ॥
यदा यही प्रकार स्वस्वरूप प्राप्ति भै ज्यही ।
तदा न शत्रु मित्र पाप पुण्य तात है त्यही ॥
न हानि लाभ हर्ष शोक शीत उष्णभाव है ।
सदा अनन्द रूप रूपप्राप्ति को प्रभाव है ॥
अनित्य पुत्र वित्त गेह देहहू न आदरै ।
यही पताल स्वर्ग भोग रोगसों निरादरै ॥
यही प्रकार स्वस्वरूप पाय नित्य नेमसों ।
लखै चराचरादि राम रूप पूर्ण प्रेम सों ॥
यही अनन्यदास रामको अलक्ष्य शक्ति है ।
अगाध निर्विषाद रामपाद प्रेम भक्ति है ॥

सो० विक्षेपहु को अर्थ और अर्थ आवरण को ।
हे गुरु स्वामि समर्थ मैं मतिमन्द न जानहूं ॥

दो० माया जनित अज्ञान ते जो निजरूप छिपान ।
ताहि आवरण जानिये बरणत सन्त सुजान ॥

देहेन्द्रियमनप्राणकी व्याधि आधि को पाय।
भूलिजाय निजरूप जहँ सो विक्षेप कहाय॥
सो आवरण विक्षेपहू दूरि भये बिनतात।
निज स्वरूप दरशात नहिं को कह पर कीबात

कवित्त सवैया।

अब तौ मैं वैराग्य बखानौं कछू सुनिये तेहि तात विलक्षणबुद्धी।
बल हीन है ज्ञान वैराग्य विहीन वैराग्य बिनागहै ज्ञान कुबुद्धी॥
तिमिहीं बिन ज्ञान वैराग्यहू जानिये दोऊ दोऊ बिन बांकेविरुद्धी।
त्यहिते जेगोबिन्द दोऊ जोगहै तौलहै खरिश्रीहरि भक्तिविशुद्धी॥

दो॰ प्रथम हेतु वैराग्य है दूजे अहै स्वरूप।
तीजो फल मल जानिये चौथो अवधि अनूप॥
अब सुनिये इनकी दशा कहहुँ समास बखानि।
सकलसकलफलदानिहैंसकलसकलगुणखानि॥

अथहेतुवैराग्यंयथा—भुजंगप्रयात।

बिषै कोबिषौते महाघोर मानै। कयहूँभांतिसोंप्रीति वामेनआनै॥
बिषैखात जोतासु नाशैशरीरा। मुदा जन्म औरेसकै दै न पीरा॥
बिषैते कछू जोबिषै खातकोई। महादुःखदाई नशा ताहि होई॥
मरैगो जियैगोजऊ कोटिवारा। तऊ नाहिं ह्वैहै नशा को उतारा॥
नजानी यहीहालमें केते। बृथाबीति जैहैं गनै को-शिरते॥
यहीभांतिसोंकेविचाराशनीको। बिषैको तजै औभजैरामजीको॥
यही हेतुवैराग्य है जानिलीजै। कहेहेतु तेजो बिषै त्यागकीजै॥

अथस्वरूपवैराग्यंयथा—भुजंगप्रयात।

स्वरूपाख्य वैराग्य में भेद दोहैं। दोऊ सर्बदाहीं सबै भांतिसोंहैं॥

त्यऊकर्म कैके फलै त्यागते हैं। कहैं वेद आज्ञा सदामानते हैं ॥
कहो वेदको है सिद्धी तरीको। सदाकर्म केफल समर्थोंहरीको ॥
सुनो दूसरो भेद जो वेदभाषा। यदाकर्म को फलचहैनाहिंचाखा॥
तदाकर्महींको परित्यागनीको। जुपै कर्मको सर्वदा स्वादफीको॥
सुनो कर्मकीन्हे फलप्राप्ति होई। यहां है नहीं नेक संदेह कोई ॥
प्रतिष्ठाप्रशंसादित्योंअष्टसिद्धी। सदाघेरि हैं आइके सर्व ऋद्धी ॥
यई सर्व पूरे विषै जानियेजू। कबौंभूलिहू ना हिये आनियेजू॥
विषैके स्वरूपैक त्यागे सही है। स्वरूपाख्य वैराग्य मानौंयही है॥

अथ फल वैराग्यं यथा—भुजंग प्रयात ॥

विषै त्यागिके फेरिनाराग जागै। सदा दीनहू औअधीरैकत्यागै॥
पदार्थादि में त्याग मैं जो कियोता। वहीमोहिंजोफेरिकै प्रासहोता
तदा होति निर्वाहकी युक्तिकैसी। उठै वासना नेकु पावै न ऐसी
अहोचित्त दै तात क्यों ना गुनौजू। यही दीन है त्यों अधीर सुनौजू
पदार्थादि में जो रहै पास मेरे। त्यही देत मैं अर्थ जो पुण्य केरे
यही जन्म वा अन्य में मोहिं सोई। कहूं प्राप्त होत न संदेह कोई
यहौ वासना ना उठै नेकु पावै। अहं भावहू त्यागकोनाहिंआवै
इतीदं फलाख्यं सु वैराग्यसारम्। हरं बंध नागार संसार भारम्

अथ अवधि वैराग्यम् ॥

दो० भुवनचतुर्दशकोविभव सकलविषयविषजानि।
करै त्याग वैराग्य सो अवधि नाम गतिदानि॥

अथान्य वैराग्य भेद ॥

दो० जित मानरु वितरेक औ एकेन्द्रिय बशिकार।
कयउ कवि कहत वैराग्य के होत भेद ई चार ॥

जितमानं यथा–भुजंगप्रयात ॥

असारो तथा सारको कै विचारा । सदा सर्वसंसार जानौ असार
पितामातृ भ्रातांगना पुत्र नाती । कुटुंबादि दैकै सबै जाति पांती
नृदेवा सुरा नाग यक्षादि जेते । चतुष्पादि पक्षी पतंगौ समेते
यहीं सर्व संसार सो है असारा । हिये देखिये क्यों न कैकै विचारा
कहू के भये हैं नहैं नाहिं ह्वैहैं । सबै काल के पासमैं जायस्वै हैं
तिन्हैं मानताहौं अहैं सर्व मेरे । बिचारो रचे सर्व त्रैगुण्य केरे
सबै नीरके बुल्लकी तुल्य जानो । अहैएकआत्मासदानित्यमानो
अनित्यौ तथानित्यको मेरु कैसे । मिलो एकमा क्षीर औ नीरजैसे
यथा हंस क्षीरै गहै नीर नाहीं । नमस्कारहै हंसकी युक्ति काहीं
तथासार स्वीकार कीजे सदाहीं । असारै परित्यागिये सर्वदाहीं

दो० तातयही जितमान है अब बरणौं वितरेक ।
बिषय भाव को निपटही जहँ अभाव सविवेक ॥

छप्पै । काम क्रोध मद लोभ मोह मत्सर विरोध खल ।
ज्ञान योग वैराग्य शांति संतोष शील भल ॥
इत्यादिक को रूप शुद्ध करि द्वन्द्व हटावै ।
कालसर्प के हेतु बुद्धि निज नकुल बनावै ॥
नकुल सूँघि कटी कछुक सर्पडसित विष परिहरै ।
आपु महाविष सर्पको काटि खंड बहुबिधि करै ॥

सो० त्योंकटी गुरु मंत्र सूंघि काल अहि विष हरै ।
बुद्धि नकुल निज तंत्र बिचरै बल वितरेक के ॥

अथएकैन्द्रिय वैराग्यम् ।

छप्पै । यदि मनमें कुछ विषय होय हठि तजिये वाही ।

दुखद अनित्य स्वकर्म धर्म बाधक गुनि ताही ॥
चारिहु अंतष्करण सहित इन्द्रियगण रोकै ।
सब इन्द्रिन में व्याप्त सदा रामहिं अवलोकै ॥
असित छिद्र घट में यथा सब छिद्रनको दीपद्युति ।
होति प्रकाशक रामतिमि सकल प्रकाशक कहत श्रुति ॥
सो॰ विषयत्यागि बहुयास अचलदृष्टिजबहोययह ।
सकल प्रकाशक राम एकेन्द्रिय वैराग्य सो ॥

अथ वशीकार वैराग्यम् ॥

छप्पै । देवनाग नरलोक भोग सब रोग सदृशगुनि ।
तासु स्वरूपहि त्यागकरै अस कहत महामुनि ॥
विषय स्वर्ग अपवर्ग सकल तृण सरिस जानिकै ।
रहै रहनि रस एक टेक सविवेक ठानिकै ॥
वशीकार वैराग्य यह कहत संत शुचि विमलबुधि ।
सुनिय और वैराग्य अब कहत चतुर बुध चतुरविधि ।
दो॰ मन्द तीव्र अरुतीव्रतर तथा तीव्र तमचारि ।
अब सुनिये इनकीदशा मनकी दशाविसारि ॥

अथ मन्द वैराग्यम् ॥

क॰ शव को अवलोकि सक्ना न हिये गृहत्यागि वैराग्य की बाट गही है। अथवा पितुमातु तिया सुत की न गई परिपालन भीर सही है ॥ अथवा गृह लोगन त्रास दई भा उदास न एकहू आस रही है ॥ यहिभांति सों जागै वैराग्य यहां जै गोविन्द जू मन्द वैराग्य वही है ॥

अथ तीव्र वैराग्यम् ॥

बहु वेद पुराण पढ्यो वा सुन्यौ उपज्यो उर ज्ञान निदान ज्यही है। दृढ़जान्यो संसार असार सबै सुत दार अगार बिकार त्यही है ॥ करै एकौ उपाय न पायबे को यथा लाभहू माहिं अभाव सही है। जैगोविन्द गोविन्द को होवा चहै तौ गहैकिन तीव्र वैराग्य यही है ॥

अथ तीव्रतर वैराग्यम्--छन्द मनहरण ॥

दुःख सुख शीत उष्ण मान अपमान आदि नेको कबौ भूलिहू न भाव उर आवता। धर्म अर्थ कामहू की कामना न आवै चित्त चौदहौ भुवन को बिभवहू न भावता ॥ सहज समाधि सर्व देव निरुपाधि जाकी चराचर सर्व रामरूप दृष्टि लावता। एहो जै गोविन्द तात सांची औ सयांनी बात यही वैराग्य तीव्रतरमैं बनावता ॥

अथ तीव्रतम वैराग्यम्--छन्द मनहरण ॥

जहाँ तीव्रतरके समग्र चिन्ह पेखिपैं औरहू विलक्षण कछूक चिन्ह ऐसेही। मोक्ष को हुलास औ अभाव नित्यानित्य हूं को सहज स्वभाव द्वैतभाव की व्यथानही ॥ सर्वदा अनूप रामरूप को बिरह वेश प्रेमा पा भक्तिमें निरूढ़ मूढ़ता दही। एहो जैगोविन्द तात मानियो हमारी बात यही है वैराग्य ख्यात तीव्रतम जो कही ॥ १ ॥ सर्व शक्ति वारो सर्बवासी सर्वन्यारो चिदानन्द सत्यसारो नित्य शुद्ध निर्विकारो है। देवन जोहारो प्रभो भूमि भार टारो निज विरद विचारो धारो ओघ अवतारो हैं ॥ सुयश पसारो सर्व दुष्टदल मारो देवकाज निरधारो जैगोविन्द भार

हारो है। श्यामरंगवारो शील सुखमा अपारो दशरथको दुलारो राम साहेब हमारो है॥ २॥

इति श्रीमद्रामचन्द्रचरणकञ्जारविन्द मकरन्दमलिन्दानन्दतुन्दिल जयगोविन्दबुध विरचिते रघुनाथविनोदे त्रयोदशस्समुल्लासः॥ १३॥

अथ द्रुतविलम्बितम्॥

शपदिसम्मतिरस्ताक्रियद्वच श्रुतवताम्बदतांकु मतिप्लुतः। स्वमनसावचसाशिरसाऽमकृच्छरणदं स्वसुखंसततन्नतः॥ १॥

सो० प्रथम कह्यो तुमनाथ प्रेमारत हरिदास गति।
रोवत गावत गाथ कहुँ नर्त्तत कहुँहँसत अति॥

दो० सुनहुस्वामि हासादिसब है अनुचित सबकाहिं
किनकारणपुनिसंतकहँ अतिअनुचितदरशाहिं

भुजंगप्रयात॥

सुनौ हेतु हे तात हासादि केरो। पुराणादि मेंजौन व्यासादि टेरो
अहो राम हैं भक्त तंत्रेति पेखी। करेहास जातानुरागो विशेषी
अहो मैं इतोकाल रामै बिहाई। पर्यो पांच पच्चीसके फेर आई
कबौंयों विचारांश कै वेगि रोवै। वियोगाधि को प्रेमकी धारधोवै
कबौंनामकोभूरि माहात्म्य जानी। कहैहे हरे राम पाहीति बानी
अहो राम मोपै कृपाकै निहारा। गयोमोमहामोह मायाविकारा
कबौंयों विचारांश कै गानठानै। परे रामते तत्व दूजो न मानै
कबौं रामकी रूप शोभा परेखी। जहांकोटिकन्दर्पलाजैं बिशेषी

महानन्द में मग्न है नर्तता है। सबभांति श्रीरामपै वर्तता है
दशा लोकते वाह्यहै सर्वताकी। प्रियासोमहाश्रीसियाकेपियाकी

दो० उत्तम मध्यम प्राकृतहु त्रिविध राम के दास।
मैं पूंछा तिनकी दशा सुनि गुरु कह्योप्रकाश॥

क०। रामको वास चराचर में त्यों चराचर राममें राजत नीके।
ऐसी अचंचल दृष्टि अहै जिनके त्यों विषैरस लागत फीके॥
प्रेमा परा में परे न डरे भवसिंधु तरे उघरे पट ही के।
हे जैगोविन्द गृहस्थ वा त्यक्त महोत्तम भक्त तेई सिय पी के॥

अथ मध्यम भक्त लक्षणम्।

ईश पै प्रेम महीश पै मैत्रता दीन पै दाया अरीन पै ऐरे।
एकमयी मति आई नहीं विषमाई महामति को अति घेरे॥
ताहीते द्वैत दुरान्यो नहीं श्रुति संत सुजान पुरानन टेरे।
हे जैगोविन्द वै जक्त में राम के मध्यम भक्त भने मत मेरे॥

अथ प्राकृत भक्त लक्षणम्॥

प्रीतिसों पूजै नितै प्रतिमा न इतै भगवान निदान यों जानत।
सर्व चराचर रामस्वरूप कबौ यों नहीं उर अन्तर आनत॥
संत तथा भगवन्तहि भेद अहै नहीं रंचकहूँ सो न मानत।
हैं जैगोविन्द जे ए जन जक्त तिन्हैं कवि प्राकृतभक्त बखानत॥

सो० पुनि बोलेगुरु बैन सुनहुतातकरि सुथिरमति।
ममकृतपदशिवनैनसुनतगुनतसुठिसुखदअति

कवित्त सवैया॥

सत्य सनेह दया दृढ़ता वश शीशधरे भ्रम के घटफूटे।
एकमयी जब जानि परी तब द्वैत के ताग तड़ाकदे टूटे॥

वेद बड़ाई औकर्म शुभाशुभ नेम अचार तबै सब छूटे ।
श्री रघुनाथ निरंजन निर्गुण के दृगते जब ए दृगजूटे ॥ १ ॥
को करै सँयम नेम अचार बिचार हिये जब आनि बशी है ।
आपुसे आपु गई सब छूटि शुभाशुभ कर्मकी कौन हँसी है ॥
नामहिंते निहचै करिकै मन सूरति जोरिकै डोरि कसी है ।
श्रीरघुनाथ परात्पर रामसों पूरन प्रेमकी फांस फँसी है ॥ २ ॥

रकार निराकार निर्विकार ब्रह्मसारहै मकार महातत्व प्रकृति शक्ति हैसमानकी । रकार बिधिहरिहर सिद्ध साधु सकल मकार में उमा रमादि शक्तिहै केतानकी॥रकार औ मकारको अपार रघुनाथ गाथ पावत न पार शेष शारदा बखान की।उपासना अखण्ड सदा नामकी रहै यही रकार रामचन्द्र हैं मकार मातु जानकी ॥ ३ ॥

दो० असकहि गुरुचुप है गही सहजानन्द समाधि ।
मैं मारत दारत व्यजन मूरति सूरति साधि ॥
सो० गुरु परिपूरण बोध यदपि करयोबर्णनाबिबिधि ।
मैंअतिकुमतिकुबोध जिमिसमुझें उतिमिइतालिख्यो
दो० सो सब सुजन सुधारिहैं मोहिंप्रणत जनजानि
क्षमिहहिं चूक अजानकी समरथ सब गुणखानि ॥

कवित्त मनहरण ॥

प्रेमारत दासहास आदि को प्रकाश करि श्री गुरुदयाल दीन बन्धु बैन ई कह्यो । अगजग रामते बिलग ना बिलोकै उर आसना न बासना उपासना यही गह्यो॥रामकी रकार निराकार निर्बिकार ब्रह्म राम की मकार मा अथाह थाहना थह्यो॥जै गोविन्द धन्य

नाम जाके उर आठो याम रामैराम रामैराम रामैराम है स्वो२ १॥

इतिश्री मद्रामचन्द्रचरणद्वन्द्वार विन्दमकरन्दमलिन्दानन्द तुन्दिल जयगोविन्दबुध विरचिते रघुनाथविनोदे चतुर्दशस्समुल्लासः॥ १४॥

अथ मालिनीपद्यम्॥

प्रथमवयसिपयानि त्वत्कृतानि प्रियाणि प्रियतम वरतानि श्रावपत्वं मुदामाम्। इति गिरिमुवदन्तस्य धकान्यघशन्दंसततमति नतोहंसन्नतोहन्नतोहम्॥

सो० यक दिन गुरु कह बैन सुनहुतातमनमोदमम।
कहहु कछुक सुखदैन बालबयसनि जराचितयह

दो० मुग्ध बचन निजसुतनके केहिनसुननकीचाह।
हेतु यही गुरुप्रश्न में और कहौं में काह॥
करयुग जोरि निहोरि बहु प्रभुआज्ञा लहि तोरि।
कहौं कछुक निज रचित पदक्षमिय मूढ़तामोरि।

छन्द मनहरण॥

श्रीगोविन्द को पदारविन्द मकरन्द गन्ध है मन मलिन्द प्रेम नेम लाइ लहुरे। वारिमें बिहार ज्यों करै सरोज रोज तिमि जक्त में विरक्त शक्त दोऊ बिधि रहुरे॥ गर्वबास केसका सत्रासते हुलास युत बिनहीं प्रयास जो उदास होन चहुरे। तौ निकाम वे विराम आठौयाम जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द कहुरे१॥ जनमि जग स्वारथ अकारथ करै न मूढ़ ढूंढ़ गूढ़ ज्ञानजन हैं

जहान चहुरे। संगके सतन के मतनको यतन करि तनकी तपनि
के हतन हेत गहुरे॥ कालपाश के प्रवास त्रासको बिनाश यदि
सहित बिलास वे प्रयास कीन चहुरे। तौ निकाम वे विराम आठौ
याम जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द कहुरे ॥ २ ॥
आनहित जाननिज मानकी समान नहिं आन अपमान जानि
मान हानि चहुरे। तनकौ न जनकौ न हूं यतन के जोहारु यथा
लाभजनकौसे धनतोष लहुरे॥बिविधि विलास कृष्ण राम गुनगान
करि यदि वे प्रयास खास दास होन चहुरे। तौ निकाम वे विराम
आठौयाम जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द कहुरे ३
पेखि परवित्त चित्त माहिंमन मेरे मित्त ताकि अनहित हिये नित्त
मति दहुरे। हठकै अचानक हूं निपट अपठनीच शठन के संग
वृथा कथन न ठहुरे॥ अमित सुपास सुखरास श्रीबैकुण्ठ बास यदि
वे प्रयास सबिलास कीन चहुरे। तौ निकाम वे विराम आठौयाम
जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द कहुरे॥४॥कामकोह
लोभ मोह मत्सर महान सैन ज्ञान आस धारको सुधारि मारि
दहुरे। इन्द्रिन रिसाला को कसाला दै मसाला तूरि नवद्वार किले
के दखल खुले रहुरे॥ अणिमादि सिद्धिवान यदि नवनिद्धिवान
श्यामकी समान भूतिमान होन चहुरेतौ निकाम वे विराम आठौ
याम जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द कहुरे५आनँद
उमंग सो कुरंग ज्यों सुनत गान त्यों सुयश श्याम को सुनत
नित रहुरे। मोर ह्वै मगन ज्यों करत नित्य गान बन तिमिही
गोविन्द गुनगान गति गहुरे॥ यदि वे प्रयास सहुलास श्याम-
सुन्दर के निपट निकट पास बास कीन चहुरे। तौ निकाम वे
विराम आठौयाम जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द. जैगोविन्द

कहुरे ॥ ६ ॥ सुमिरै विरहिनी स्वपति नाम रूप गुण लीला धाम तिमि श्यामके सुमिरि रहुरे। जैसे निहकाम प्रीति रीति सों स्वपति पद सेवै पतिव्रता त्यों गोविन्द पदगहुरे ॥ जाकेढिग अतसी कुसुमकी कछुक द्युति ऐसो जो अनूप श्याम रूप होन चहुरे। तौनिकाम वे विराम आठौयाम जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द कहुरे ॥ ७ ॥ जैसे घृत दूध में तिलनमें निकारै तेल तैसे आत्मरूप आपरूपही मलहुरे। ज्यों प्रकाशै दीप घट बीच बहुछिद्रन को त्यों जगको श्याम इमि ज्ञान दृढ़गहुरे ॥ जन्म मृत्युताई दुखदाई की विनाश ताई श्रीगोविन्द रूपकी जु एक ताई चहुरे। तौ निकाम वे विराम आठौयाम जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द जैगोविन्द कहुरे ॥ ८ ॥

कहूँ है विरंचि सृष्टि रचता अनेक भांति कहूँ है मुकुन्द सृष्टि पालत अपेला है। कहूँ कै महेश वेश सृष्टि खास नाश करै या प्रकार तीनि रूप धरै तीनि वेला है ॥ कहूँ जैगोविन्द देवबृन्द है अनंद करै कहूँ बनि दैत्यदेव झगर झमेलाहै। कहांलौं बखानिये न जानिये सो वाकी गति है सही अकेला पै अनेक खेल खेला है ॥ १ ॥ आपुही गंधर्व गान बिबिधि विधान करै आपुही बिबिधि वाद्य तान गान मेला है। आपुही अनेक नृत्य नर्तक है नृत्यकरै आपुही लखनहार है समाज हेलाहै ॥ आपुही विलोकि सुनि गुनिकै सराहै खूब जैगोविन्द आपुही सो आलम सकेला है कहांलौं बखानिये न जानिये सो वाकी गति है सही अकेला पै अनेक खेल खेला है ॥ २ ॥ आपुही प्रबल बल अनल अनूप कुण्ड आपुही कलश कुश समित्स्तम्भ केला है। आपुही साकल्य श्रुवाशुवी यूप रक्षा सूत्र सकल समान यजमान वार बेला है ॥

आपुही आचार्य्य ब्रह्मा ऋत्विक सपति सभ्य आपुही आहुति यज्ञ स्रुक फलदेला है। कहालौं बखानिये न जानिये सु वाकी गति है सही अकेला पै अनेक खेल देला है ॥ ३ ॥

इतिश्री मद्रामचन्द्रचरणद्वन्द्वारविन्द मकरन्दमलिन्दानन्द तुन्दिलजयगोविन्दबुध विरचिते रघुनाथविनोदे पंचदशस्समुल्लासः ॥ १५ ॥

अथानुष्टुप्पद्यम् ॥

वर्णितुंरामचरितं दत्ताज्ञामेदयालुना। येनाहंतंगुरुं वन्देपराप्रेमपरायणम् ॥ १ ॥

सो० बालबयसकृतकाव्यममइमिसुनिपुनिगुरुकह्यो।
चरितभांतिबहभाव्यसहितरचितानिजपदनके॥

दो० ते गुरुकृतगुरुकथितपद लिखहुंसुखदशरपक्ष।
सुनहुसुजनजनसुमनमनसुनतजेभवरुजभक्ष॥

कवित्त व सवैया ॥

श्रीगुरु पायन की रजजैति अजादिक देवनके शिरमन्य है।
त्यों पूजनीयन में तिनमें रघुनाथ अहो यहै अग्रम गन्य है॥
भक्ति सु साधन सिद्धि करन्य हरन्य सबै दुख दोष दरन्य है।
गुरुपद पंकज रेणुकी आदि शरन्य शरन्य शरन्य शरन्य है ॥१॥
नाम स्वरूप स्वशीलहु धाम श्री राम क एक अनन्द अरन्य है।
जासु कृपा मन मत्त मृगेन्द्र सप्रेम सोई बनमें बिचरन्य है॥
मन बच कर्मन से अपने सपने रघुनाथ न जानत अन्य है।
गुरुपद पंकज रेणुकी आदि शरन्य शरन्य शरन्य शरन्य है ॥२॥
राम षड़ाक्षर मंत्र दयाल दियो गुरु गूढ़गहे सो अनन्यहै।

जापद जक्त सो राग विराग भयो अनुराग सो मानत धन्यहौ ॥
और कृपा कछु जानि परयो प्रभु शील सुभाव सोऊ सुख मन्यहौ ।
ताही ते आदि पदाब्जनकी मैं शरन्य शरन्य शरन्य शरन्य हौ ३
राम मरा कहि ब्रह्मभये मुनि म्लेच्छहु नाम हराम पुकारे ।
नाम नरायन बालक को कहि विप्र अजामिल धाम सिधारे ॥
नामहि सो सब जीवनको शिव काशिहु में गति देत बशारे ।
जो न भजै अजहूं सुनि सो जग मानहु जन्म जुवा जनुहारे ४
नाम अनेकन्न एकते एक परे परनाम सो राम बिचारो ।
नाम सचेतनको गति दायक राम प्रत्यक्ष पषानहि तारो ॥
जानहु जक्त प्रकाशक राम को नाम स्वरूप न मानहु न्यारो ।
नेम लिये रघुनाथ हिये रसना अब रामहिं राम पुकारो ॥ ५ ॥

रंचक न खेद भेद तजिकै अभेद मन सहज सुभाय वेद वदत न नये हैं ॥ करिकै अनेक उपदेश अति गीताहू में शरणश्री कृष्ण कहि पारथहिं दये हैं ॥ भागवतहू में भक्तिभाव सो रहित तौन ज्ञान शुकदेव तुषधात गाय गये हैं । भक्ति रससानी सुनि बानी रघुनाथ सोई समुझि बिचारि मन सब मानिलये हैं ६॥ सुनौ सब प्रगट प्रमाण करिमानौ यहै जानौ अब ताको बिधि बाम प्रतिकूल है । शब्द स्परस गन्ध रूपरस बश बिषै मानस मलीन लिंग कारण स्थूल है ॥ करम बचन मन सपने न सुख दुख दिन दिन बढ़त अनेक शोकशूलहै । जौलौ न सँभारि सीताराम नाम भजै तौलों जन रघुनाथ जानौ तामें बड़ीभूल है ॥७॥ मरा मरा कहे ते मुनीश ब्रह्मलीन भयो राम राम कहेते को जानौ कौन पद है । यवनहराम कह्यो रामजी को धामलह्यो प्रगट प्रभाव सों पुरानन में गद है ॥ काशिहू मरत उपदेशत महेश जाहि

जाति न परत ताहि मायामोहमद है । ऐसेहूसमुझि सीताराम नाम जो न भजे जन रघुनाथ कहैं तासों फिरि हद है ॥ ८ ॥ महाराज स्वामी सीतारामकी भगति बिन रतिहू न मति मानो ज्ञान गुन रद है । कहत सुनत सब प्रगट प्रभाव यहै आदि अन्त सकल पुराण वेद गद है । आयहु कुआयहु अनष आलसहु कहूं निकसत नाम बिन शत मोहमद है ॥ ऐसेहू समुझि रघुनाथ जन जो न भजैं कहहु सुनहु जानौ तासों फेरि हद है ॥ ९ ॥

राम बिहाय कै कोटिक बात बनाय कहैं तिनके मुख मूके । राम बिहाय जहां लगि योग औ ज्ञानिन के मुख मे लिये लूके ॥ श्री रघुनाथ बिहायकै हाय बनाय तेई जग जानहुँ चूके । जे छलि ते बलि जे न गये पद के सदके रघुनंदन जूके ॥ १० ॥

सोहै तनश्याम पटपीत कहै कौन जौन जो है धनुबान पाणि तून कटि कसोहै ॥ कनक किरीट भाल तिलक विशाल नैन मैन श्रुतिकुण्डल कपोल लोल लसोहै ॥ कुटिल भ्रू नाशिका चिबुक दर ग्रीव सुख परम अयन आप शोभा वृन्द बसो है । रघुनाथ ऐसो रूप आयो जो न ध्यान करै कैतो सो अनैसो ज्ञान मानमोह ग्रसोहै ॥ ११ चरिखानि लक्ष चवरासी योनि जहँ तहँ तेरो प्रतिपाल जोकरो सो सब जागो है ॥ अबनरदेह जौनदीन्हो रघुनाथतौनचीन्हो न निलज्ज प्रभुपरेनानुरागोहै ॥ सुकृत महीमें मनो मूल सतसंग फूल जप तप नेम योग ज्ञानफल लागो है । भक्तिरस ता मो जो न जामो रामनामो शठ सेई मरो मानोशुक सेमरअभागोहै १२ जेई देखौतेई कलिकालके कुटिल जीवअहंब्रह्म अपनैक मानत अनैसेहैं । ईशसरवज्ञअलपज्ञ येअनीश असकाहे से कहत द्वै बताओ ब्रह्मकैसेहैं ॥ मनुज महीप नर अवरो अनेक

एक ताहीं के सुबश सब रहत जे जैसे हैं। तैसे रघुनाथ जन जानौ जो समान ब्रह्म नसोरामब्रह्म मनमानौ नृपऐसे हैं ॥ १३ ॥ भाव स्वामी सेवक अभाव करि पर्मपद पायो है हैं जौनते सुने न कानकोऊ हैं। शम्भु सनकादिआदि दे दिनेश शेष मण्डलेश कौशलेश को भजत मुनिओऊ हैं ॥ रघुनाथ जनजीव ईशहिं अधीन अस राम रवि उये जौलौं तौलौं किर्ण सोऊ हैं। सहज सुभाय सब कहिबेक जानौ तैसे ब्रह्मजीव एकपै बिशेष फेरि दोऊ हैं ॥ १४ ॥ जौन अघ अमित प्रगटकरि कीन्हें मन दीन्हें हित लीन्हें चित्तचीन्हें तौन ढांचो मैं। शीस धुनि रहौं दहौं बहौं बिन स्वारथ न चहौं रामनाम मलिन हौं गहौंकांचो मैं ॥ करम बचन मन जन रघुनाथ अब सीतानाथ दीनहौं दोहाईद्वारखांचो मैं। बाचोंचोर पांचों सो न आंचों नाच नाचों और राचों रामही सो काम दूसरो न पांचों मैं ॥ १५ ॥ कोऊ तौ कहत अति पण्डित परमहंस कोऊ तौ कहत मतिमन्द मन ऐस है। कोऊ तौ कहत उपदेशतअनेकनको कोऊ तौ कहत अति न्दिपटनहास है॥सुनि-कै न हरष बिषाद उरआवै भावै चहै तौन कहै कछु काहूको न दोस है। दुखद दुहुन से सुखद रघुनाथ दास सीतानाथ हाथ चहै मारैं चहै पोस है ॥ १६ ॥ देव नरनागन सूत कहे रीझै कोऊ जगत प्रकाश राममरीकहेरीझै ॥ नीच नीच बानी सुनै न प्रसन्न होत देवकोऊ यवन हराम कह्यो रामन अरीझे हैं ॥ याही ते परत जानिउलटे उदासी बैन निकसत रामनामकबहूं न खीझे हैंऐसहु समुझि जेनजपे रामनाम ते वैजन रघुनाथजानौ बिषैमाहिं बीझै है ॥ १७ ॥ राम नाम प्रगट पुकारो गजराज तब जापकै कृपाल काटि डार्‌यो गजफन्द को। द्रुपदसुता को लागो बसन अरम्भ

जब प्रगट पुकारो मुख नाम नन्दनन्द को ॥ विप्र मुनि म्लेक्ष प्रहलादहू पुकारो नाम जानत न ऐसो तासो मूढ़ मतिमन्दको । सुनिकै समुझि रघुनाथ जन जानि अवै प्रगट पुकारो नामसीता रामचन्द्रको ॥ १८ ॥ धिक्कार धिक्कार धिक्कार तिनकाहिं जिन राम के नामको नाहिंजाना । गर्भकी बात बिसराइ बेहोशह्वै मोहबश करत रस बिषय पाना । पांचकी आंचमें नाच नाचत रहा सांच गुरु शब्द उरनाहिं आना । रघुनाथ जन जानकीनाथ के भजन बिन निमकहाराम हाराम खाना ॥ १९ ॥ मान बेमान मनमूढ़ मत सारसंसार यह एकदिन जायगा रे । तात औ मातु सुत भ्रात हित भामिनी भवन भण्डार रहिजायगा रे ॥ आजुही कालिह में आप आचानकै एकदिन काल धरिखायगा रे । रघुनाथको कहा नहिं मानता मूढ़ तो आदिहू अंत पछितायगा रे ॥ २० ॥

दो० तनमनते रघुनाथ जन जानिलेहु रे नीच ।
मीचरही मड़राय शिर रामररो याहि बीच २१
संत शरण आयो नहीं गायो नहिं गोपाल ।
बीतिगयो रघुनाथजन जन्म बजावतगाल २२
मरिहो रे रघुनाथ लै करिहौ का तन तौन ।
परिहौ रे नर रौरवन राम रहित तारिहौन २३
कबहुं न नाम ररे अरे करे पोच के काम ।
सोच न मनरघुनाथजन कहँहम कहँफिरिराम २४
नेम धर्म आचार तप योग याग बैराग ।
फल सबकर रघुनाथभल रामचरणअनुराग २५

ताते तात सहित अनुरागा ❀ राम चरित बरण्यों सविरागा
बरणन करत करत गुण गाथा ❀ करहिं सनाथ जनहिं रघुनाथा
अस श्रीगुरु मोहिं दीन रजाई ❀ गुनि जन कीन सनेह सगाई

आयसु राम बाबहू केरा ❀ रच्यो ग्रंथ गुरुचरित घनेरा
तब मैं द्विज सुर सन्त मनावा ❀ प्रथम ग्रंथ गुरुचरित बनावा
पुनि गंगाष्टक बरण्यों नीके ❀ सहित सुयश रघुनन्दन जीके
रच्यों बहोरि ककहरा तामा ❀ ककारादि अक्षर युग रामा
बहुरि कृष्ण करुणाष्टक भाषा ❀ भाषत कृष्ण मोर प्रणराखा
सीताराम शतक सुख मूला ❀ पुनिविरच्योरघुपतिअनुकूला
गोविन्दाष्टक बाल कहाहै ❀ सो रघुनाथ विनोद गहाहै
अब यहि समय रचहुं रामायन ❀ भवरुज शमन सु रामरसायन
यहि रचि होय दुःखको दूरन ❀ गुरु हरि कृपाहोइ जो पूरन

दो० यहरघुनाथविनोद गुरु चरितग्रन्थ अभिराम।
नभयुग नव शशि वर्ष में भो प्रारम्भ सुठाम॥
चित्रकूट सु विचित्र थल कुण्ड जानकी जान।
तहांराम बाबा विबुध निवसत सन्त सुजान॥

नाराच। त्रिपाठि शंभुदत्त के सुपुत्र विश्वनाथ हैं।
तिनै सु तासु जैगोविंद राम जासु नाथ हैं॥
सुनौ सुजान ग्रंथ मूल देखिकै क्षमाकरयो।
सुधारि लीजियो सबै सु दीन पै दया धरयो॥

क०। बाल बैस कृत पद ईश मम सुनि पुनि भाष्य हाल भाषिकै पचीस निज गायो है। नेम धर्म जप तप योग औ बिराग याग सबको सिद्धान्त राम प्रेमही बतायो है॥ ताते तात साहितानुराग रामजी को यश बरण्यो अवसि सुठि शीष यों शिखायो है। सो गुरु कृपा बिन न होत जैगोविन्द ताते प्रथम विनोद गुरु ग्रंथही बनायो है॥

इति श्री जयगोविन्द बुध विरचिते रघुनाथविनोदे
षोडशस्समुल्लासः॥ १६॥
॥ इति सम्पूर्णम् शुभम्॥